ELITE IAS

समसामयिकी

मार्च – 2019

8899999931/34

A-1 Chandra House, Top Floor, (Opp. ICICI Bank), Mukherjee Nagar, Delhi-09

ELITE IAS

Our Courses

For Civil Services Preparation

CLASSROOM PROGRAM

English / Hindi

Upgraded Foundation Course
General Studies

ONLINE COURSES

General Studies Video Classes
(Interactive)

ALL INDIA TEST SERIES

English / Hindi

General Studies
Prelims + Mains + Essay

CORRESPONDENCE COURSES

General Studies Pre. & Mains
(Interactive)

Index

आलेख

1.	पाकिस्तान के मनोबल पर प्रहार	1-3

कला, संस्कृति, समाज एवं सामाजिक और राष्ट्रीय मुद्दे

2.	मैथिली भाषा के संरक्षण हेतु दरभंगा में पांडुलिपि केंद्र की स्थापना होगी	4-4
3.	पढ़ाई के साथ रोजगार के लिए तैयार करने हेतु "SHREYAS" पोर्टल लॉन्च	4-5
4.	ऑपरेशन डिजिटल बोर्ड	5-6
5.	महिलाओं के लिए आजीविका बॉण्ड की घोषणा	6-6
6.	नमामि गंगे के तहत यमुना के किनारे बसे शहरों हेतु 1387.71 करोड़ रुपये की परियोजनाएं स्वीकृत	7-8
7.	पटना रिवर फ्रंट स्थानीय लोगों को समर्पित	8-8
8.	यूनिसेफ ने 'बाल विवाह-2019 फैक्टशीट' नामक रिपोर्ट जारी की	9-9
9.	प्रधानमंत्री श्रम योगी मान-धन योजना	10-11
10.	प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के लाभार्थियों के लिए मोबाइल एप्प शुरू किया गया	11-11
11.	प्रधानमंत्री ने अरुणाचल प्रदेश में 4,000 करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं का उद्घाटन किया	12-13

राजव्यवस्था एवं शासन, सामाजिक न्याय एवं सामाजिक विकास

12.	जम्मू-कश्मीर आरक्षण अध्यादेश को कैबिनेट की मंजूरी	14-14
13.	कैबिनेट ने आधार अध्यादेश को मंजूरी दी	14-15
14.	राजस्थान विधानसभा में पंचायतीराज संशोधन विधेयक और नगरपालिका संशोधन विधेयक पारित	15-16
15.	जम्मू-कश्मीर प्रशासन ने लद्दाख को पृथक मंडल घोषित किया	16-16
16.	अनियंत्रित जमा योजना निरोधक विधेयक-2018 में आधिकारिक संशोधन को मंजूरी	17-18
17.	सिनेमेटोग्राफ अधिनियम, 1952 में संशोधन	18-19
18.	राष्ट्रपति ने चार अध्यादेशों को मंजूरी प्रदान की	19-20
19.	पूर्व न्यायाधीश डी.के. जैन को बीसीसीआई का पहला लोकपाल नियुक्त किया गया	20-21
20.	वैयक्तिक कानून (संशोधन) विधेयक-2018 को मंजूरी	21-22

अंतर्राष्ट्रीय संबंध, भारत और विश्व एवं वैश्विक परिदृश्य

21.	भारत ने पुलवामा आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान से मोस्ट फेवर्ड नेशन का दर्जा वापस लिया	23-24
22.	यूरोपियन देशों ने ईरान के साथ व्यापार के लिए पेमेंट चै न ल INSTEX की घोषणा की	24-24
23.	भारत और सऊदी अरब के बीच 5 अहम समझौते	25-25
24.	आरआईसी मंत्रियों की 16वीं बैठक चीन में संपन्न	26-26
25.	अफगानिस्तान ने चाबहार बंदरगाह के रास्ते निर्यात की पहली खेप भेजी	26-27
26.	IP Index में भारत 36वें, पाकिस्तान 47वें स्थान पर	28-28
27.	जेनेवा कन्वेंशन	29-29
28.	दुनिया भर में युद्ध से हर साल 1,00,000 बच्चों की मौत: सेव द चिल्ड्रेन की रिपोर्ट	30-30
29.	भारत और अर्जेंटीना के मध्य 10 समझौतों पर हस्ताक्षर	31-31
30.	डोनाल्ड ट्रम्प ने अमेरिका में आपातकाल घोषित किया	32-33
31.	भारत और पाकिस्तान के बीच सिंधु जल संधि: भारत में वर्तमान स्थिति	33-34
32.	भारत और दक्षिण कोरिया के बीच वैश्विक अपराध से लड़ने समेत सात समझौतों पर हस्ताक्षर	35-35
33.	भारत और मोरक्को आतंकवाद का मुकाबला करने हेतु संयुक्त कार्यसमूह गठित करने पर सहमत	36-36
34.	अबू धाबी में हिंदी बनी न्यायालय की तीसरी आधिकारिक भाषा	36-37
35.	मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फतह अल-सीसी अफ्रीकी संघ के अध्यक्ष नियुक्त	37-37

भारतीय अर्थव्यवस्था एवं आर्थिक विकास

36.	बजट 2019: विजन-2030	38-39
37.	भारतीय रिजर्व बैंक ने मौद्रिक नीति समीक्षा जारी की	39-39
38.	स्टार्टअप से जुड़ी पहलों के आधार पर राज्यों की रैंकिंग का दूसरा संस्करण लॉच	40-41
39.	रूफटॉप सोलर कार्य्रकम के दूसरे चरण को मंजूरी	41-42
40.	12 सरकारी बैंकों को 48,239 करोड़ रु. की रिकैपिटलाइजेशन राशि दी जाएगी	42-43
41.	राष्ट्रीय खनिज नीति 2019 को मंजूरी	43-44
42.	सूक्ष्म वन उपज के लिए एमएसपी का शुभारंभ	44-45
43.	GST परिषद ने निर्माणाधीन घरों पर टैक्स 12% से घटाकर 5% किया	45-46
44.	वस्त्र मंत्रालय द्वारा हितधारकों के लिए 'आउटरीच' कार्यक्रम आयोजित	46-47
45.	पीएम-किसान योजना लॉन्च	47-48
46.	केंद्र सरकार ने कुसुम योजना को शुभारंभ करने की मंजूरी दी	48-49
47.	कई रेल परियोजनाओं का शुभारम्भ	49-50
48.	वाराणसी में 2,900 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का शिलान्यास	50-50

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, प्रतिरक्षा एवं स्वास्थ्य

49.	अरुण-3 जल विद्युत परियोजना में निवेश प्रस्ताव को मंजूरी	51-51
50.	अस्पतालों के लिए एंट्री लेवल प्रमाणन प्रक्रिया हेतु HOPE पोर्टल	52-52
51.	40 हजार करोड़ रुपये की 6 पनडुब्बियों के निर्माण को मंजूरी	53-53
52.	भारत ने स्वदेशी तकनीक से निर्मित पहली सेमिकंडक्टर चिप जारी की	53-54
53.	भारतीय वैज्ञानिकों ने कवक की नई प्रजातियां खोजीं, कैंसर उपचार में लाभ का दावा	54-55
54.	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस:28 फरवरी	55-55
55.	रेलवे ने नई वेबसाइट रेल दृष्टि लॉन्च की	56-56
56.	फेम इंडिया के दूसरे चरण को मंजूरी	57-57
57.	वैज्ञानिकों ने GPS इस्तेमाल किए बिना चलने वाला 'पहला' रोबोट बनाया	58-59
58.	भारत ने 'क्विक रिएक्शन मिसाइल' का सफल परीक्षण किया	59-59
59.	पहली सेमी हाईस्पीड ट्रेन वंदे भारत एक्सप्रेस	60-60
60.	भारतीय वायुसेना को मिले 4 चिनूक हेलिकॉप्टर	61-61
61.	भारत का 40वां संचार उपग्रह जीसैट-31 सफलतापूर्वक प्रक्षेपित	61-62
62.	राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स नीति 2019 को स्वीकृति	62-63
63.	नासा की हबल दूरबीन ने बौनी आकाशगंगा की खोज की	64-65
64.	भारत-बांग्लादेश संयुक्त सैन्य अभ्यास "सम्प्रीति" - 2019	65-65
65.	डिजिटल सिविलिटी इंडेक्स	66-66
66.	थाईलैंड में सैन्य अभ्यास कोबरा गोल्ड 2019 आरंभ	67-67
67.	राष्ट्रीय सॉफ्टवेयर उत्पाद नीति को मंजूरी	67-68
68.	भारत और फिनलैंड बाह्य अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण उपयोग के लिए सहमत	68-68
69.	'परमाणु टेक-2019' सम्मेलन नई दिल्ली में संपन्न	69-69
70.	दक्षिण-पूर्व एशिया का पहला प्रोटोन थेरेपी सेंटर भारत में आरंभ	69-70
71.	ई-औषधि पोर्टल की शुरूआत	70-70
72.	NASA का ऑपरच्यूनिटी मिशन 15 साल बाद निष्क्रिय	71-71

पारिस्थितिकी और पर्यावरण

73.	सरकार द्वारा जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु उपलब्धियों पर प्रकाशन	72-72
74.	भारत में 4 करोड़ ग्रामीण लोग धातु-प्रदूषित पानी पीते हैं: सर्वेक्षण रिपोर्ट	73-73
75.	पेट्रोलियम मंत्रालय को आईईए बायो-एनर्जी टीसीपी का सदस्य बनने को मंजूरी	74-74
76.	प्रधानमंत्री 'जी-वन योजना'	75-75
77.	सौर गठबंधन समझौते पर हस्ताक्षर करने वाला 73वां देश बना सऊदी अरब	76-76
78.	ग्लोबल वार्मिंग से बदल रहा है समुद्रों का रंग: EF रिपोर्ट	76-77

79.	दुनिया को हरा-भरा करने में भारत और चीन रहे सबसे आगे: नासा	77-78
80.	सिंधु नदी डॉल्फिन को पंजाब का राजकीय जलीय जीव घोषित किया गया	78-78
81.	वर्ष 2100 तक हिमालय के ग्लेशियर का दो तिहाई हिस्सा पिघल जायेगा: अध्ययन	78-79
	अन्य `बरें	
82.	ऑस्कर अवॉर्ड् 2019	80-80
83.	लेडी गागा और ओलिविया कोलमैन को मिला पहला ऑस्कर	81-81
84.	ऑस्कर 2019 में भारत	81-81
85.	प्रधानमंत्री मोदी ने विश्व की सबसे बड़ी भगवद गीता का उद्घाटन किया	81-81
86.	'तितानवाला म्यूजियम' का उद्घाटन	81-81
87.	राष्ट्रीय युद्ध स्मारक का उद्घाटन	82-82
88.	प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मिला सियोल शांति पुरस्कार	82-82
89.	राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार 2017 प्रदान किए	82-82
90.	आईसीसी की टेस्ट रैंकिंग जारी, न्यूजीलैंड पहली बार दूसरे स्थान पर	82-82
91.	ISSF विश्व कप: मनु भाकर-सौरभ चौधरी की जोड़ी ने जीता स्वर्ण पदक	82-82
92.	क्रिस गेल ने अंतरराष्ट्रीय वनडे क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा की	83-83
93.	हिना जायसवाल ने रचा इतिहास, बनीं IAF की पहली महिला फ्लाइट इंजीनियर	83-83
94.	हिंदी के मशहूर साहित्यकार और आलोचक नामवर सिंह का निधन	83-83
95.	टैगोर पुरस्कार	83-83
96.	संयुक्त राष्ट्र ने चंद्रमौली रामनाथन को कंट्रोलर और एएसजी नियुक्त किया	83-83
97.	अश्वनि लोहानी को एयर इंडिया का सीएमडी नियुक्त किया गया	84-84
98.	सुशील चंद्रा नये चुनाव आयुक्त नियुक्त किये गये	84-84
99.	भारतीय इतिहासकार संजय सुब्रमण्यम इजराइल के डेन डेविड पुरस्कार हेतु चयनित	84-84
100.	केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री ने हिमाचल प्रदेश के सबसे पहले मेगा फूड पार्क का उद्घाटन किया	85-85
101.	विश्व कैंसर दिवस 04 फरवरी को मनाया गया	85-85
102.	ऋषि कुमार शुक्ला सीबीआई के नये निदेशक नियुक्त	85-85

❁❑❑❑❑❑❁

आलेख

पाकिस्तान के मनोबल पर प्रहार

पुलवामा हमले के ठीक 13 दिन बाद 26 फरवरी की सुबह भारतीय वायु सेना के मिराज-2000 लड़ाकू विमानों ने देश के अलग-अलग हिस्सों से उड़ान भरी। उन्होंने पाकिस्तान के खैबर पख्तूनवा स्थित बालाकोट में आतंकी संगठन जैश के ठिकानों पर हमले किए। बालाकोट उन्नीसवीं सदी से ही जिहाद के लिए कुख्यात रहा है। सैयद अहमद बरेलवी ने बालाकोट की धरती से महाराजा रंजीत सिंह के खिलाफ जिहाद की शुरूआत की थी। रंजीत सिंह की सेना ने एक साहसिक अभियान में बरेलवी के संगठन को खत्म करते हुए 1831 में वहां पनप रहे जिहाद के उन्माद पर विराम लगा दिया था। कुछ इसी तर्ज पर प्रधानमंत्री मोदी ने पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान को संदेश दिया था। कि बस अब बहुत हुआ। बालाकोट में भारतीय वायुसेना का सफल हवाई हमला एक शानदार सफलता है। यह हवाई हमला पाकिस्तान के लिए एक बड़ा झटका है। वह हतप्रभ रह गया। भारतीय वायुसेना ने इस साहसिक सैन्य अभियान के लिए जिस तरह लड़ाकू विमानों, शस्त्रों और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का चयन किया वह उसके पेशेवर अंदाज की उत्कृष्ट मिसाल है। हमारी वायुसेना ने एकदम सटीक-संतुलित आकलन किया और नियंत्रित हमले से अपना उद्देश्य पूरा किया। इस पर हैरानी नहीं कि पाकिस्तान की शुरूआती प्रतिक्रिया मुकरने वाली ही रही। ऐसा ही रवैया उसने सर्जिकल स्ट्राइक के समय भी अपनाया था। भारत के हवाई हमले ने पाकिस्तान की मुश्किलें बढ़ाने का काम किया है। पुलवामा हमले के बाद से ही भारत पाकिस्तान को कूटनीतिक मोर्चे पर अलग-थलग करने एवं आर्थिक रूप से कमजोर करने में जुटा था। यह उसे सैन्य रूप से भी तगड़ा झटका दिया है, यह उसे झकझोर कर उसका मनोबल तोड़ने वाला साबित होगा। वैश्विक बिरादरी से पाकिस्तान को काटने के लिए भी प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत कूटनीतिक मोर्चे पर बहुत अच्छी स्थिति में है। आतंकी गतिविधियों के लिए अधिकांश देश पहले ही पाकिस्तान की कड़ी भर्त्सना कर चुके हैं। यहां तक कि भारत चीन पर भी दबाव बना रहा है कि वह पाकिस्तान पर अपना नजरिया बदले। भारत को पाकिस्तान पर सैन्य शिकंजा कसने के लिए ईरान और अफगानिस्तान को साथ लेकर पाकिस्तान से लगी सीमा पर एक मोर्चा बनाना चाहिए। हालांकि सऊदी अरब और अमेरिका के रूख को देखते हुए ऐसे सैन्य समन्वय को लेकर तेहरान जरूर कुछ हिचक दिखा सकता है। नई दिल्ली को तेहरान को आश्वस्त करना होगा कि लड़ाई में उलझने के बजाय मामला केवल सैन्य दबाव बढ़ाने तक सीमित रहेगा। इससे पाकिस्तान की अपनी उत्तरी और पश्चिमी सीमा पर सेना की तैनाती के समीकरणों को नए सिरे से साधना होगा। इससे भारत का काम आसान हो जाएगा। और पाकिस्तान आतंकी गतिविधियों को अंजाम देने की हिमाकत नहीं करेगा।

पकिस्तान इतना आसानी से मानने वाला नहीं । उसकी आर्थिक रीढ़ भी तोड़नी होगी। मुश्किलों से जूझ रहे पाकिस्तान को इस समय अंतराष्ट्रीय मदद की सख्त दरकार है। यह भारत की कूटनीतिक कोशिशों का ही नतीजा है कि फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स की पेरिस में हुई हालिया बैठक में पाकिस्तान को ग्रे सूची में कायम रखा गया। भारत की निरंतर कोशिशें पाकिस्तान को उत्तर कोरिया जैसा बना सकती हैं। विश्व बैंक और अतंराष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी संस्थाएं इस्लामाबाद को काली सूची में डालकर उससे मुंह फेर सकती है।

भारत बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए आकर्षक बाजार है। नई दिल्ली को इन कंपनियों के आगे शर्त रखनी चाहिए कि अगर वे भारत में कारोबार करना चाहती हैं तो उन्हें पकिस्तान से किसी तरह का कोई कारोबारी रिश्ता नहीं रखना होगा। अपने निजी एवं कूटनीतिक संबंधों का लाभ उठाते हुए मोदी संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब जैसे देशों से पाकिस्तान को मिलने वाली वित्तीय मदद को भी रोकने की कोशिश करें। इसी तरह अगर चीन पाकिस्तान पर अपना रवैया नहीं बदलता तो भारतीय राजनीतिक दल जनता को चीनी कंपनियों के उत्पादों के बहिष्कार के लिए लामबंद करें। एक ऐसे समय जब अमेरिका चीनी आयात पर सख्ती कर रहा है तो बीजिंग भारत जैसे बाजार को गंवाना नहीं चाहेगा।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारत के पास सैन्य विकल्पों की भी कमी नहीं है। जमीनी हमलों और नियंत्रण रेखा पर अहम चौकियां कब्जाने से लेकर वैसे अचूक हवाई हमले भी किए जा सकते हैं जैसा गत दिवस किया गया। गुलाम कश्मीर में आतंकी ठिकानों को बार-बार निशाना बनाया जाना चाहिए। आतंकी ठिकानों और प्रशिक्षिण शिविरों के लिए मिसाइल और ड्रोन हमलों के बारे में भी सोचा जा सकता है। इसके अलावा मसूद अजहर और हाफिज सईद जैसे आ तंकियों को इजरायली शैली वाले खुफिया अभियानों से ठिकाने लगाया जा सकता है। सर्जिकल सट्राइक भी एक विकल्प है, लेकिन कार्रवाई करके निकलने के बजाय सुरक्षा बल उस हिस्से पर काबिज भी हो सकते हैं। बलूची, सिंधी, पश्तूनों, गिलगित-बाल्टिस्तान और गुलाम कश्मीर में कश्मीरियों की मदद के लिए भी भारत को खुफिया अभियान चलाने चाहिए। इन अशांत इलाकों में अलागाववाद की आग भड़की हुई है, जिसे भुनाना चाहिए। बलूची स्वतंत्रता सेनानियों की मदद के लिए पाकिस्तान की तकरीबन एक हजार किलोमीटर लंबी सीमा रेखा भी काफी काम आ सकती है। पाकिस्तान को 'आतंकी देश' घोषित करने की दिशा में भी कदम उठाए जाने चाहिए। इसी तरह सिंधु जल समझौता भी खत्म करने पर विचार करना चाहिए। पाकिस्तान की ओर बहने वाली नदियों पर बांध बनाकर पानी को सामरिक हथियार के रूप में इस्तेमाल करना होगा। सरकार को कश्मीर में अलगाववादी नेताओं पर भी शिकंजा कसना होगा । उनकी सुरक्षा हटाने के साथ ही ऐसे उपाय भी किए जाएं ताकि उन्हें आर्थिक खामियाजा भी भुगतना पड़े। उन्होंने अनुचित तरीकों से भारी धन-संपदा बनाई है। कश्मीरी पंडितों की जमीन कब्जाकर उन्होंने मॉल और प्लाजा बना लिए हैं। उन्हें जब्त किया जाना चाहिए। सरकार को जम्मू-कश्मीर के संदर्भ में धारा 370 की भी समीक्षा करनी चाहिए। सभ्य व्यवहार का जिम्मा केवल सरकार का नहीं है, बल्कि यह परस्पर होना चाहिए।

पाकिस्तान भारत की राह में एक बड़ा कांटा है और उसका यह चरित्र कभी नहीं बदलने वाला। पकिस्तान के आतंकी उन्माद से निपटने के लिए दीर्घकालिक नीतियों की दरकार होगी। पाकिस्तान या उसके पिट्ठू अगर भारत पर कभी बुरी नजर डालें तो उन्हें तत्काल रूप से जवाब देने के लिए भारत को आकस्मिक योजना तैयार करनी चाहिए। सुरक्षा बलों के लिए एक सामान्य संचालन संहिता तैयार की जानी चाहिए कि विशेष हालात में वे स्वत: कोई निर्णय कर सकें। बालाकोट में हुए हवाई हमले के बाद पाकिस्तान के सभी वर्गों में अफरातफरी का माहौल है तो इसी का परिचायक है कि उसके विकल्प सीमित हो गए हैं। अपेक्षित परिणामों के लिए भारत को व्यावहारिक नीति बनानी होगी। इसी साहसिक फैसले के लिए प्रधानमंत्री मोदी की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। तारीफ भारतीय वायुसेना की भी करनी होगी जिसने अपने अद्भुत शौर्य की मिसाल कायम की है।

पाकिस्तानी हुक्मरानों के भारत विरोधी और आतंकी समर्थक रवैये के चलते पाकिस्तान स्वयं की बर्बादी के रास्ते पर चल रहा है। पाकिस्तान की जनता की तरक्की में यह रवैया आड़े आ रहा है। पाकिस्तान विदेशी कर्ज में डूबता जा रहा है। आज जहां भारत के पास 400 अरब डॉलर से ज्यादा का विदेशी मुद्रा भंडार है, पाकिस्तान दो अरब डॉलर के ऋणात्मक विदेशी मुद्रा भंडार के साथ अपने देश की आर्थिक संप्रुभता को बचाने के लिए जूझ रहा है। गांवों तक सड़क तो दूर, उनके बड़े शहरों का बुनियादी ढांचा भी पूरी तरह से चरमराया हुआ है।

आज पाकिस्तान अपने पुराने विदेशी कर्ज की चुकाने की भी स्थिति में नहीं है। उद्योगों की बदहाली और बिगड़ती कानून व्यवस्था के चलते एक ओर उद्योग धंधे नहीं लग पा रहे हैं तो दूसरी ओर विदेशी निवेशक भी पाकिस्तान से मुंह मोड़ चुके हैं। पिछले काफी समय से चीन पाकिस्तान में कई आधारभूत संरचना परियोजनाओं पर काम कर रहा है जिनसे जुड़े आयातों के बढ़ते जाने से भी उसके भुगतान शेष की समस्या में बिगाड़ आया है और पाकिस्तान पर चीन का कर्ज बढ़ता जा रहा है।

बढ़ते विदेशी कर्ज और उसके भुगतान से जुझ रहे पाकिस्तान ने अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष (आइएमएफ) से गुहार लगाई है। जब भी आइएमएफ किसी देश को उधार देता है तो संरचनात्मक सुधारों के नाम पर उसे अपनी करेंसी का अवमूल्यन करने की शर्त रखता है। उसकी शर्तों का पूरा करने के लिए पाकिस्तान दिसंबर 2017 से अब तक पाचें से ज्यादा बार अपनी मुद्रा का अवमूल्यन कर चुकी है। महंगाई भी वहां लगातार बढ़ रही है। अक्टूबर माह तक वहां महंगाई की दर 7.6 प्रतिशत तक पहुंच चुकी थी। आइएमएफ का कहना है कि जून 2019 तक महंगाई की दर 14 प्रतिशत तक पहुंच सकती है। इस कारण नीतिगत ब्याज दर जल्द ही 15 प्रतिशत तक पहुंच सकती है। यानी बढ़ती महंगाई, ब्याज दर और बढ़ता भुगतान शेष घाटा पाकिस्तान की मुश्किलें बढ़ा रहा है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

आज जब दुनिया आतंकवाद के कहर से त्रस्त है, पाकिस्तान दुनिया में आंतकवाद के सबसे बड़े पनाहगार के रूप में जाना जाता है। अमेरिका के 'टिव्न टावर' विध्वंस का गुनहगार ओसामा बिन लादेन हो या मुबई पर आंतकी हमले का सरगना हाफिज सईद, सभी पाकिस्तान में पनाह पाते हैं। हैरानी का विषय यह है कि वैश्विक कूटनीतिकार अभी तक पाकिस्तान को आंतकवादी देश घोषित नहीं कर पाए हैं। अमेरिका अपने इशारों पर नहीं नाचने पर ईरान पर आर्थिक प्रतिबंध लगा देता है, पर पाक के मामले में वह भी गंभीर नहीं है।

अलग-थलग करने की जरूरत

विश्व व्यापार संगठन के अंतर्गत सभी सदस्य देशों को मोस्ट फेवर्ड नेशन का दर्जा देना अपेक्षित होता है, जिसके चलते उन देशों से होने वाले आयातों पर न्यूनतम आयात शुल्क लगाया जाता है। लेकिन पाकिस्तान ने शत्रुता के भाव के कारण भारत को कभी भी यह दर्जा नहीं दिया, जबकि भारत ने उदार भाव से काफी समय से उसे यह दर्जा दिया हुआ था। लेकिन पुलवामा आंतकी हमले के बाद पाकिस्तान को सबक सिखाने के उद्देश्य से भारत सरकार ने मोस्ट फेवर्ड नेशन का दर्जा वापस ले लिया है। शायद विश्व व्यापार संगठन का सदस्य होने के नाते पाकिस्तान से आने वाले सामान को प्रतिबंधित नहीं किया जा सकता, पर वहां से आने वाले सभी सामानों पर आयात शुल्क बढ़ाकर 200 प्रतिशत कर दिया गया है। यानी अब पाकिस्तान से भारत शायद कुछ भी आयात नहीं करेगा। यही नहीं भारत अपने निर्यातों पर भी प्रतिबंध लगा सकता है, जिसके चलते पाकिस्तान के कपड़ा और अन्य प्रकार के उद्योगों पर प्रभाव पड़ेगा।

केवल आयात शुल्क ही नहीं, पाकिस्तान पर आर्थिक प्रतिबंध भी लगाए जा सकते हैं। विभिन्न प्रकार के आर्थिक प्रतिबंध लगाकर अमेरिका ईरान समेत कई देशों को आर्थिक नुकसान पहुंचा रहा है। अमेरिका ने आर्थिक प्रतिबंधों के नाते सभी देशों पर यह शर्त लगा दी है कि जो भी ईरान से आर्थिक व्यवहार करेगा, उसके भुगतानों को ब्लॉक कर देंगे और अमेरिका उनके साथ अपने आर्थिक लेन-देन रोक देगा। ऐसे में सभी देश उसके दबाव में आकार ईरान से आर्थिक व्यवहार बंद कर रहे है। हालांकि भारत ने कहा है कि वह संयुक्त राष्ट्र के अलावा किसी आर्थिक प्रतिबंधों को नहीं मानता, तो भी यहा कहा जा सकता है कि अमेरिकी आर्थिक प्रतिबंधों का खासा असर ईरान पर पड़ रहा है। यूंकि अमेरिका ने भारत समेत कुछ देशों को छूट दी है, इसलिए वह ईरान से तेल खरीद रहा है। भारत भी मित्र राष्ट्रों के साथ मिलकर पाकिस्तान पर आर्थिक प्रतिबंधों की दिशा में आगे बढ़ सकता है। गौरतलब है कि कई देश पाकिस्तान के आतंकियों को पनाह देने को लेकर उससे काफी नाराज है।

आने वाले समय में यदि यह 'ग्रे लिस्ट' से आगे ब्लैक लिस्ट में आ जाता है तो पाकिस्तान विदेशी निवेश और आर्थिक व्यवहार में अलग-थलग पड़ सकता है। आज जरूरत इस बात की है कि पाकिस्तान जैसे आतंकवादी देश पर आर्थिक प्रतिबंध लगाकर उसे इससे होने वाली मुश्किलों का एहसास करवा दिया जाए ताकि दुनिया में शांति बनाए रखने के लिए वह आतंकवादी गतिविधियां बंद करे और अपने आतंकी सरगनाओं को भारत को सौंप दे।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

कला, संस्कृति, समाज, तथा सामाजिक और राष्ट्रीय मुद्दे

मैथिली भाषा के संरक्षण हेतु दरभंगा में पांडुलिपि केंद्र की स्थापना होगी

चर्चा में क्यों?

☞ केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जारी जानकारी के अनुसार मैथिली भाषा अथवा मिथिलाक्षर के संरक्षण, संवर्धन और विकास के लिए दरभंगा में पांडुलिपि केंद्र की स्थापना होगी।

☞ गौरतलब है कि 19 मार्च 2018 को जदयू के राष्ट्रीय महासचिव संजय झा ने केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री को ज्ञापन सौंपा था, जिसमें मैथिली के विकास के लिए एक कमेटी गठित करने की मांग उन्होंने रखी थी. उन्होंने मानव संसाधन विकास मंत्री से इसके लिए एक कमेटी गठित करने की मांग की थी, जिस पर मंत्री ने मैथिली विद्वानों के नाम का सुझाव देने के लिए कहा था।

मैथिली भाषा के संरक्षण हेतु घोषणा

- मिथिलाक्षर के संरक्षण, संवर्धन और विकास के लिए दरभंगा में पांडुलिपि केंद्र की स्थापना होगी।
- यह केंद्र ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय या कामेश्वर सह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय में से किसी एक परिसर में स्थापित होगी।
- मिथिलाक्षर का उपयोग आसान हो, इसके लिए लिपि को भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास संस्थान के द्वारा जल्द से जल्द कम्प्यूटर की भाषा (यूनिकोड) में परिवर्तित करने का काम पूरा किया जाएगा।
- साथ ही मिथिलाक्षर लिपि को सीखने के लिए ऑडियो-विजुअल तकनीक भी विकसित की जाएगी।

समिति और उसके सुझाव

- चार सदस्यीय समिति में ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के मैथिली विभागाध्यक्ष प्रो. रमण झा, कामेश्वर सह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के व्याकरण विभागाध्यक्ष डॉ. पं. शशिनाथ झा, ललित नारायण विश्वविद्यालय के सेवानिवृत प्रो. रत्नेश्वर मिश्र व पटना स्थित महावीर मंदिर न्यास के प्रकाशन विभाग के पदाधिकारी पं. भवनाथ झा को शामिल किया गया।
- समिति ने अपनी रिपोर्ट में अतिप्राचीन लिपि को बचाने के लिए कई सुझाव दिए हैं।
- केंद्रीय मंत्री ने अधिकांश सुझावों पर अपनी सहमति देते हुए जल्द से जल्द उन पर काम करने का आश्वासन दिया था।
- इस बैठक में मिथिला और मैथिली के विकास के प्रति केंद्र सरकार की प्रतिबद्धता को दोहराया था।

स्रोतः पीआईबी

पढ़ाई के साथ रोजगार के लिए तैयार करने हेतु "SHREYAS" पोर्टल लॉन्च

चर्चा में क्यों?

☞ मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावडेकर ने 27 फरवरी 2019 को युवाओं में कौशल विकास के जरिये उन्हें काबिल बनाने के लिए 'श्रेयस' (स्कीम फॉर हायर एजुकेशन यूथ फॉर अप्रेंटिसशिप एंड स्किल) पोर्टल लॉन्च किया है. इस पोर्टल की सहायता से स्नातक की डिग्री पाने वाले छात्रों को उद्योग जगत में प्रशिक्षण का कोर्स कर उन्हें कौशल युक्त बनाया जायेगा ताकि वे रोजगार के योग्य हो सकें।

श्रेयस (SHREYAS) के उद्देश्य

HREYAS योजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

- उच्च शिक्षा प्रणाली की सीखने की प्रक्रिया में रोजगार प्रासंगिकता की शुरुआत करके छात्रों की रोजगार क्षमता में सुधार करना।
- स्थायी आधार पर शिक्षा और उद्योग / सेवा क्षेत्रों के बीच घनिष्ठ कार्यात्मक संबंध बनाना।
- मौजूदा समय की मांग के अनुसार छात्रों को कौशल प्रदान करना।
- उच्च शिक्षा कार्यक्रमों में पढ़ाई के साथ-साथ कमाई की व्यवस्था को स्थापित करना।
- इंडस्ट्री को बेहतर कार्य शक्ति प्रदान करने के लिए कुशल कार्यकर्ताओं को तैयार करना।
- सरकार के प्रयासों को सुविधाजनक बनाने के साथ छात्र समुदाय को रोजगार से जोड़ना।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

श्रेयस (SHREYAS) की विशेषताएं

- इसमें देश के सभी विश्वविद्यालयों, कॉलेज, आईटीआई और पॉलिटेक्निक के छात्रों को रजिस्ट्रेशन करना होगा।
- उनकी प्रोफाइल के आधार पर आगे छह, नौ या एक साल की ट्रेनिंग दी जाएगी।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय, कौशल विकास मंत्रालय और श्रम और रोजगार मंत्रालय के संयुक्त तत्वावधान में यह पोर्टल काम करेगा।
- वर्ष 2019 में लगभग तीन लाख छात्रों को इसके माध्यम से ट्रेनिंग दी जाएगी।
- यूजीसी, एआईसीटीई राज्यों समेत शिक्षण संस्थानों को पत्र लिखकर इसमें जुड़ने को कहा जायेगा। इंडस्ट्री को केंद्र सरकार की ओर से पैसे का भुगतान किया जाएगा।
- प्रोग्राम के माध्यम से इंडस्ट्री छात्रों को स्वास्थ्य, शिक्षा, उद्योग आदि का पूरा प्रशिक्षण देगी, ताकि डिग्री पढ़ाई पूरी होने के बाद उन्हें रोजगार मिल सके।
- इस कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को सामान्य पढ़ाई के साथ रोजगार से जोड़ने के लिए तैयार करना है।

योजना का संचालन

☞ प्राथमिक योजना का संचालन (National Apprenticeship Promotion Scheme) (एनएपीएस) के साथ किया जाएगा, जो प्रत्येक व्यवसाय/उद्योग में कुल कार्यबल के 10% तक प्रशिक्षुओं को रखने का प्रावधान करता है. यह योजना शुरू में बैंकिंग कौशल बीमा सेवा (बीएफएसआई), खुदरा, स्वास्थ्य देखभाल, दूरसंचार, लॉजिस्टिक्स, मीडिया, प्रबंधन सेवाओं, आईटीईएस और सेक्टर कौशल परिषदों (एसएससी) द्वारा कार्यान्वित की जाएगी। एप्रेंटिसशिप की बढ़ती मांग और पाठ्यक्रमों में बदलाव के साथ समय-समय पर अधिक क्षेत्रों को इस योजना के साथ जोड़ा जाएगा।

स्रोत : पीआईबी

ऑपरेशन डिजिटल बोर्ड

चर्चा में क्यों?

☞ मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने टेक्नोलॉजी का लाभ उठाने के लिए देश में गुणवत्तपूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 20 फरवरी 2019 को ऑपरेशन डिजिटल बोर्ड की शुरुआत की है।

मुख्य तथ्य

- ऑपरेशन डिजिटल बोर्ड एक क्रांतिकारी कदम है, जो अध्ययन के साथ-साथ अध्यापन की प्रक्रिया को संवादमूलक बनाएगा तथा शिक्षा-विज्ञान संबंधी दृष्टिकोण के रूप में अध्ययन को लोकप्रिय बनाएगा।
- देश में शिक्षा क्षेत्र सबसे बड़ी जिस चुनौती का सामना कर रहा है वह देश में मान्य गुणवत्ता मानकों को बनाए रखने की है।
- शैक्षणिक प्रौद्योगिकी और संपर्क के प्रसार ने इस मुद्दे के समाधान का अवसर दिया है और इसका उद्देश्य शैक्षणिक मानकों को समानता देना है।

ऑपरेशन डिजिटल बोर्ड और इसके लाभ

- ऑपरेशन डिजिटल बोर्ड (ओडीबी) देशभर के सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में कक्षा 9 से लेकर उच्च शिक्षण संस्थानों में शुरू किया जाएगा. यह प्रक्रिया 2019 के आगामी सत्र से शुरू हो जाएगी।
- आयोग ने पहले चरण में 300 विश्वविद्यालयों के 10 हजार कालेजों में दो लाख क्लास रूम डिजिटल बनाएगा जिस पर दो हजार करोड़ रुपये खर्च आयेंगे। यह 2022 तक बन कर तैयार होगा।
- इस योजना का उद्देश्य कक्षा को डिजिटल क्लास रूम में बदलना है और साथ ही छात्रों को किसी भी स्थान पर किसी भी समय ई-संसाधन उपलब्ध कराना है।
- इससे व्यक्तिगत अनुकूलनीय ज्ञान के साथ-साथ मशीन ज्ञान, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा अनेलेटिक्स जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों का दोहन करके कुशल अध्यापन का प्रावधान करने में मदद मिलेगी।
- एक विशेषज्ञ समिति ने ओडीबी के अंतर्गत डिजिटल क्लास रूम के अधिकतम विन्यास तैयार कर लिया है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

ओडीबी की आवश्यकता

- हमारे पास अच्छी संख्या में प्रमुख संस्थान है, जो दुनिया के श्रेष्ठ संस्थानों से मुकाबला कर सकते हैं, बड़ी संख्या में उच्च शिक्षण संस्थानों और स्कूलों में गुणवत्तापूर्ण अध्ययन में सुधार की आवश्यकता है, क्योंकि इन संस्थानों से निकलने वाले छात्र खुद को समाज और बाजार की जरूरतों के अनुसार उपयुक्त नहीं पाते।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा शुरू किए गए ई-पाठशाला, दीक्षा, एनआरओईआर, एनपीटीईएल, ई-पीजीपाठशाला स्वयं और स्वयं प्रभा डीटीएच चौनल आदि ने उच्च गुणवत्ता की पर्याप्त सामग्री प्रदान की है जिसे प्रत्येक कक्षा तक ले जाया जा सकता है।
- इस प्रकार के शैक्षणिक हस्तक्षेप से अध्यापन का स्तर बेहतर हो सकता है चाहे स्कूल और कॉलेज/संस्थान कहीं भी हो इस तरह के प्रौद्योगिकी आधारित ज्ञान से देश भर के अध्यापकों को प्रेरणा मिल सकती है और वे अपना अध्यापन के स्तर बेहतर कर सकते हैं।

स्रोतः पीआईबी

महिलाओं के लिए आजीविका बॉण्ड की घोषणा

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में विश्व बैंक, लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) और संयुक्त राष्ट्र की महिला विशेष संस्था यूएन वुमन ने वित्तीय प्रबंधन फर्मों और प्रमुख कॉरपोरेट्स के साथ मिलकर ग्रामीण महिला उद्यमियों को ऋण प्रदान करने हेतु सामाजिक प्रभाव बॉण्ड शुरू करने की घोषणा की है।

घोषणा के प्रमुख तथ्य

- सिडबी द्वारा लाया गया यह महिला आजीविका बॉण्ड उद्यमी महिलाओं को 3 प्रतिशत पर एक वार्षिक कूपन प्रदान करेगा जिसका कार्यकाल पाँच वर्ष का होगा।
- इस बॉण्ड के जरिये जुटाई जाने वाली निधि (लगभग 300 करोड़ रुपए) आगामी तीन महीनों के अंतर्गत कई चरणों में जारी की जाएगी। प्राप्त निधि को सिडबी के माध्यम से लघु और मध्यम महिला उद्यमियों को सूक्ष्म वित्त उद्योग के माध्यम से दिया जायेगा।
- सिडबी के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक के अनुसार, महिला उद्यमियों को दिये जाने वाले ऋण की सीमा 13 प्रतिशत से अधिक नहीं होगी तथा इस बॉण्ड की कीमत 50,000 रुपये से 3 लाख रुपये तक होगा।
- बोर्ड में शामिल कुछ वित्तीय प्रबंधन फर्मों में सेंट्रम वेल्थ, आस्क वेल्थ एडवाइजर्स, एंबिट कैपिटल और आदित्य बिड़ला कैपिटल शामिल हैं। ये पहले से ही व्यक्तिगत स्तर पर उच्च नेटवर्थ तक पहुँच चुके हैं और धन जुटाने के लिये निवेशकों को प्रभावित कर रहे हैं।
- इसके अलावा पाँच कंपनियों, टाटा ग्रुप-टाटा कम्युनिकेशंस, टाटा केमिकल्स, टाटा ट्रेंट, वोल्टास और टाइटन ने भी इसमें निवेश करने में रुचि दिखाई है।

सामाजिक प्रभाव बॉण्ड

- सामाजिक प्रभाव बॉण्ड सार्वजनिक क्षेत्र या प्रशासकीय प्राधिकरण के साथ किया गया एक अनुबंध है, जिसके तहत वह कुछ क्षेत्रों में बेहतर सामाजिक परिणामों के लिये भुगतान तथा निवेशकों को प्राप्त बचत में भागीदारी प्रदान करता है।
- इस फंड का उपयोग कृषि, खाद्य प्रसंस्करण, सेवाओं और विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में व्यक्तिगत महिला उद्यमियों को ऋण देने के लिये किया जाएगा।
- इसमें पुनर्भुगतान और निवेश पर वापसी वांछित सामाजिक परिणामों की उपलब्धि पर निर्भर करती है, यदि उद्देश्य प्राप्त नहीं होता है, तो निवेशकों को रिटर्न या मूलधन में से कुछ भी प्राप्त नहीं होता है।

स्रोतः द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

नमामि गंगे के तहत यमुना के किनारे बसे शहरों हेतु 1387.71 करोड़ रुपये की परियोजनाएं स्वीकृत

चर्चा में क्यों?

☞ कार्यकारी समिति ने नमामि गंगे के तहत यमुना नदी के किनारे बसे शहरों के लिए 1387.71 करोड़ रुपये की परियोजनाएं मंजूर दी. इसके तहत यमुना नदी के किनारे बसे शहरों पर विशेष ध्यान दिया गया है।

☞ जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण मंत्रालय की विज्ञप्ति के अनुसार, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) ने फिरोजाबाद, इटावा, बागपत और मेरठ के लिए सहायक नदियों पर परियोजनाओं को भी मंजूरी दी।

☞ इन परियोजनाओं में जलमल शोधन संयंत्रों (एसटीपी) का निर्माण एवं जीर्णोद्धार, जलमल शोधन संयंत्रों और अन्य बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं की ऑनलाइन निगरानी प्रणालियां शामिल हैं।

नदी के किनारे बसे शहरों पर फोकस:

इटावा

♦ कार्यकारी समिति द्वारा 140.6 करोड़ रुपये की लागत वाली सीवेज बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं को स्वीकृति दी गई. इनमें टिक्सी नाले का अवरोधन एवं मार्ग परिवर्तन, क्लोरीन का उपयोग करने वाली प्रणालियों सहित वर्तमान एसटीपी का उन्नयन, 2.1 करोड़ लीटर की दैनिक सीवेज शोधन क्षमता वाला नया एसटीपी और 3 एसटीपी की ऑनलाइन निगरानी प्रणाली शामिल हैं. इस प्रोजेक्ट में 49.74 करोड़ रुपये की लागत से मंजूर परियोजनाओं का परिचालन एवं रखरखाव करना भी शामिल है.

फिरोजाबाद

♦ नमामि गंगे की कार्यकारी समिति द्वारा 51.08 करोड़ रुपये की लागत वाली सीवरेज बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं को स्वीकृति दी गई है। इनमें दो नालों की निकासी, दो सीवेज पम्पिंग केन्द्रों का निर्माण करना, मुख्य सीवर लाइनों का निर्माण करना और अन्य विकास कार्य शामिल हैं। इस प्रोजेक्ट में 15 वर्षों तक परियोजना का परिचालन एवं रखरखाव करना भी शामिल है।

बागपत

♦ कार्यकारी समिति द्वारा सीवरेज से जुड़े बुनियादी ढांचे के लिए उत्तर प्रदेश के बागपत शहर में 77.36 करोड़ रुपये की लागत वाली परियोजनाओं को स्वीकृति दी गई है। इनमें 1.4 करोड़ लीटर की दैनिक क्षमता वाले सीवेज शोधन संयंत्र का निर्माण करना, 4 नालों की निकासी, अवरोधन एवं मुख्य सीवर लाइन और सीवेज पम्पिंग केन्द्र का निर्माण करना शामिल है। पूरा हो जाने के बाद इन परियोजनाओं का 15 वर्षों तक रखरखाव किया जाएगा।

मेरठ

♦ कार्यकारी समिति ने उत्तर प्रदेश के मेरठ में सीवरेज से जुड़े बुनियादी ढांचे के विकास के लिए 681.78 करोड़ रुपये की लागत वाली परियोजनाओं को मंजूरी दी। स्वीकृत परियोजनाओं में 200 एमएलडी की सीवेज शोधन क्षमता वाले नये एसटीपी का निर्माण करना, अवरोधन के साथ-साथ सीवर लाइनों का मार्ग परिवर्तन करना और चढ़ावदार मुख्य पाइप या नली का विकास करना शामिल हैं।

आगरा

♦ कार्यकारी समिति ने आगरा में 317.2 करोड़ रुपये की लागत वाली सीवरेज बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं को मंजूरी दी है। इन परियोजनाओं में 6 एसटीपी की ऑनलाइन निगरानी, 15 मौजूदा सीवेज पम्पिंग केन्द्रों का स्वचालन या ऑटोमेशन, सीवेज पम्पिंग केन्द्रों का जीर्णोद्धार और 29 नाला निकासी का रखरखाव करना शामिल हैं।

चुनार

♦ कार्यकारी समिति ने उत्तर प्रदेश के चुनार शहर में मल गाद के प्रबंधन और प्रदूषण में कमी के लिए 2.70 करोड़ रुपये की लागत वाली परियोजना को मंजूरी दी है। इसका कार्यान्वयन विज्ञान एवं पर्यावरण केन्द्र (सीएसई) द्वारा किया जाएगा। इसमें 10 के एलडी के मल गाद शोधन संयंत्र का निर्माण करना शामिल है। संबंधित परियोजनाओं में 5 वर्षों तक के एलडी का परिचालन एवं रखरखाव करने के साथ-साथ परियोजना के कार्यान्वयन के लिए अनुकूल माहौल बनाना भी शामिल है। समिति ने शहरी स्थानीय निकायों (यूएलबी) और उत्तर प्रदेश जल निगम (यूपीजेएन) को प्रशिक्षित करने को मंजूरी दी है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

जैव विविधता का संरक्षण:

- गंगा नदी में जलीय जैव विविधता का पुनरुत्थान करना नमामि गंगे कार्यक्रम के महत्वपूर्ण फोकस क्षेत्रों में से एक है। कार्यकारी समिति ने गंगा नदी में जलीय जीवन को फिर से बहाल करने हेतु महत्वपूर्ण परियोजनाओं को मंजूरी दी है।
- भारतीय वन्य जीव संस्थान द्वारा शुरू की गई जैव विविधता संरक्षण परियोजनाओं के दूसरे चरण में जलीय प्रजातियों के संरक्षण के लिए नियोजन एवं प्रबंधन करना और गंगा नदी में पारिस्थितिकी से जुड़ी सेवाओं का रखरखाव करना शामिल हैं।
- जैव विविधता जीवन और विविधता के संयोग से निर्मित शब्द है जो आम तौर पर पृथ्वी पर मौजूद जीवन की विविधता और परिवर्तनशीलता को संदर्भित करता है।

स्रोत: पीआईबी , द हिंदू

पटना रिवर फ्रंट स्थानीय लोगों को समर्पित

चर्चा में क्यों?

☞ निर्मल गंगा की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम बढ़ाते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बिहार में 17 फरवरी 2019 को पटना, बाढ़, सुल्तान गंज और नौगछिया में सीवेज से जुड़ी आधारभूत संरचनाओं की आधारशिला रखी। प्रधानमंत्री ने पटना में गंगा नदी के मुहाने पर बनाई गई विभिन्न सेवाओं का शिलान्यास किया।

पटना में नई सुविधाएं

- पटना रिवर फ्रंट पर 16 नए घाट, एक विद्युत शवदागृह, 50.9 किलोमीटर लंबा सैर करने का स्थान, सामुदायिक सह संस्कृति केंद्र, दृश्य-श्रव्य सभागार और एक पर्यावरण केंद्र बनाए गये हैं।
- इनके निर्माण पर 243.27 करोड़ रुपये खर्च हुए है। मुख्य समारोह बेगुसराय में आयोजित किया गया।
- प्रधानमंत्री ने जिन सीवेज आधारभूत संरचना परियोजनाओं की आधारशिला रखी उनमें पटना में कर्मालिचक में 96.54 किलोमीटर लंबे सीवेज नेटवर्क और सीवेज पम्पिंग स्टेशन, 11 एमएलटी जलमल शोधन क्षमता वाला संयंत्र, बाढ़ में मलजल प्रवाहित करने वाले तीन बड़े नालों का पानी नदी में गिरने से रोकने और उनके बहाव का मार्ग बदलने के लिए तीन एसपीएस शामिल है।
- सुल्तानगंज में 10 एमएलडी क्षमता वाला मलजल शोधन संयंत्र , 4 एसपीएस और पांच गंदे नालों को बंद करने और उनके बहाव का रास्ता बदलने तथा नऊ गुचिया में 9 एमएलडी क्षमता वाले जलमल शोधन संयंत्र ,6 एसपीएस और 9 गंदे नालों को नदी में बहने से रोकने और उनका बहाव बदलने की परियोजनाएं शामिल हैं।
- इन परियोजनाओं पर 452.24 करोड़ रुपये का खर्च आएगा। इनके बन जाने से 6.7 करोड़ लीटर गंदा पानी गंगा नदी में गिरने से रोका जा सकेगा।

रिवर फ्रंट

- एक रिवरफ्रंट एक नदी के साथ का एक क्षेत्र होता है. अक्सर बड़े शहरों में जो एक नदी के किनारे बसे होते हैं उन स्थलों को सजावटी आकृतियों, डॉक्स, पार्क, पेड़ या मामूली आकर्षण के साथ पंक्तिबद्ध किया जाता है।
- आज कई रिवरफ्रंट आधुनिकतावाद और शहर के सौंदर्यीकरण का केंद्र हैं। भारत में ऐसे 20 से अधिक रिवर फ्रंट हैं जिनमें मुंबई का मरीन ड्राइव और वर्ली सी फेस, कोलकाता का हुगली रिवरफ्रंट, अहमदाबाद का साबरमती रिवर फ्रंट, पुडुचेरी का सी साइड प्रोमिनेड आदि प्रमुख रूप से प्रसिद्ध हैं।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

यूनिसेफ ने 'बाल विवाह-2019 फैक्टशीट' नामक रिपोर्ट जारी की

चर्चा में क्यों?

☞ हाल ही में संयुक्त राष्ट्र बाल निधि (UNICEF) ने एक रिपोर्ट, 'फैक्टशीट चाइल्ड मैरिजेज 2019' जारी की है जिसके अंतर्गत कहा गया है कि भारत के कई क्षेत्रों में अब भी बाल विवाह हो रहा है। इसमें कहा गया है कि पिछले कुछ दशकों के दौरान भारत में बाल विवाह की दर में कमी आई है लेकिन बिहार, बंगाल और राजस्थान में यह प्रथा अब भी जारी है।

भारत के संदर्भ में यूनिसेफ की रिपोर्ट

- यूनिसेफ की रिपोर्ट के अनुसार, बिहार, बंगाल और राजस्थान में बाल विवाह की यह कुप्रथा आदिवासी समुदायों और अनुसूचित जातियों सहित कुछ विशेष जातियों के बीच प्रचलित है।
- रिपोर्ट में कहा गया है कि बालिका शिक्षा की दर में सुधार, किशोरियों के कल्याण के लिये सरकार द्वारा किये गए निवेश व कल्याणकारी कार्यक्रम और इस कुप्रथा के खिलाफ सार्वजनिक रूप से प्रभावी संदेश देने जैसे कदमों के चलते बाल विवाह की दर में कमी देखने को मिली है।
- रिपोर्ट के अनुसार 2005-2006 में जहाँ 47 फीसदी लड़कियों की शादी 18 साल की उम्र से पहले हो गई थी, वहीं 2015-2016 में यह आँकड़ा 27 फीसदी था।
- यूनिसेफ के अनुसार, अन्य सभी राज्यों में बाल विवाह की दर में गिरावट लाए जाने की प्रवृत्ति दिखाई दे रही है किंतु कुछ जिलों में बाल विवाह का प्रचलन अब भी उच्च स्तर पर बना हुआ है।

वैश्विक संदर्भ में यूनिसेफ की रिपोर्ट

- मौजूदा समय में विश्व भर में लगभग 65 करोड़ ऐसी लड़कियाँ/महिलाएँ हैं जिनकी शादी 18 वर्ष की उम्र से पहले ही कर दी गई है, जबकि बचपन में लड़कियों की शादी कर दिये जाने के मामले में यह संख्या प्रतिवर्ष करीब 1.2 करोड़ है.
- दक्षिण एशिया में बाल विवाह की दर 40 प्रतिशत (वैश्विक दर की) है, जबकि उप-सहारा अफ्रीका में बाल विवाह की दर 18 प्रतिशत (वैश्विक दर की) है।
- लैटिन अमेरिका और कैरिबियन में बाल विवाह की स्थिति में बदलाव नहीं आया है।
- पिछले एक दशक में बाल विवाह की दर में 15 प्रतिशत की कमी आई है जिसके तहत लगभग 2.5 करोड़ बाल विवाह होने से रोके गए हैं।

बाल विवाह के कारण

- यूनिसेफ की रिपोर्ट के अनुसार गरीबी, लड़कियों की शिक्षा का निम्न स्तर, लड़कियों को आर्थिक बोझ समझना, सामाजिक प्रथाएँ एवं परंपराएँ बाल विवाह के प्रमुख कारण हैं।
- भारत में बाल विवाह पर रोक संबंधी कानून सर्वप्रथम सन् 1929 में पारित किया गया था. बाद में सन् 1949, 1978 और 2006 में इसमें संशोधन किये गए।
- बाल विवाह निषेध अधिनियम 2006 के नए कानून के तहत बाल विवाह कराने पर 2 साल की जेल एक लाख रुपए का दंड निर्धारित किया है।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

प्रधानमंत्री श्रम योगी मान-धन योजना

चर्चा में क्यों?

☞ भारत में असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों, घरेलू कामगारों, सिर-पीठ पर बोझा ढोने वाले मजदूरों तथा सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के कार्यकर्ताओं को 3000 रुपये प्रति माह की पेंशन सुनिश्चित करने वाली केंद्र सरकार की 'प्रधानमंत्री श्रम योगी मान-धन' योजना 15 फरवरी 2019 से औपचारिक रुप से लागू हो गई है।

मुख्य तथ्य

- हाल में बजट में घोषित की गई इस योजना से असंगठित क्षेत्र के तकरीबन 42 करोड़ लोगों को लाभ होगा. इस योजना में वे सभी लोग शामिल हो सकते हैं जिनकी आय 15 हजार रुपए प्रति माह तक है और 18 से 40 वर्ष के आयु वर्ग में हैं।

  इस योजना के पात्र व्यक्ति नई पेंशन योजना (एनपीएस), कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआईसी) योजना या कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) के लाभ के अंतर्गत कवर नहीं किए जाने चाहिए और उसे आयकर दाता नहीं होना चाहिए।

पीएम-एसवाईएम की प्रमुख विशेषताएं

- **न्यूनतम निश्चित पेंशन :** पीएम-एसवाईएम के अंतर्गत प्रत्येक अभिदाता को 60 वर्ष की उम्र पूरी होने के बाद प्रति महीने 3,000 रुपये न्यूनतम निश्चित पेंशन मिलेगा।
- **परिवार पेंशन :** यदि पेंशन प्राप्ति के दौरान अभिदाता की मृत्यु होती है तो परिवार पेंशन के रूप में लाभार्थी को मिलने वाले पेंशन का 50 प्रतिशत लाभार्थी के जीवनसाथी को मिलेगा. परिवार पेंशन केवल जीवनसाथी के मामले में लागू होता है. यदि लाभार्थी ने नियमित अंशदान दिया है और किसी कारणवश उसकी मृत्यु (60 वर्ष की आयु से पहले) हो जाती है तो लाभार्थी का जीवनसाथी योजना में शामिल होकर नियमित अंशदान करके योजना को जारी रख सकता है या योजना से बाहर निकलने और वापसी के प्रावधनों के अनुसार योजना से बाहर निकल सकता है।
- **अभिदाता द्वारा अंशदान :** अभिदाता का अंशदान उसके बचत बैंक खाता/जनधन खाता से "ऑटो डेबिट" सुविधा के माध्यम से किया जाएगा। पीएम-एसवाईएम योजना में शामिल होने की आयु से 60 वर्ष की आयु तक अभिदाता को निर्धारित अंशदान राशि देनी होगी।
- **केन्द्र सरकार द्वारा बराबर का अंशदान :** पीएम-एसवाईएम 50: 50 के अनुपात आधार पर एक स्वैच्छिक तथा अंशदायी पेंशन योजना है, जिसमें निर्धारित आयु विशेष अंशदान लाभार्थी द्वारा किया जाएगा और तालिका के अनुसार बराबर का अंशदान केन्द्र सरकार द्वारा किया जाएगा। उदाहरण के तौर पर यदि कोई व्यक्ति 29 वर्ष की आयु का होता है तो उसे 60 वर्ष की आयु तक प्रति महीने 100 रुपये का अंशदान करना होगा। केन्द्र सरकार द्वारा बराबर का यानी 100 रुपये का अंशदान किया जाएगा।

कैसे करें रजिस्ट्रेशन

- अभिदाता के पास मोबाइल फोन, बचत बैंक खाता तथा आधार संख्या होना अनिवार्य है।
- पात्र अभिदाता नजदीकी सीएससी जाकर आधार नम्बर तथा बचत बैंक खाता/जनधन खाता संख्या को स्वप्रमाणित करके पीएम-एसवाईएम के लिए नामांकन करा सकते हैं।
- बाद में अभिदाता को पीएम-एसवाईएम वेब पोर्टल पर जाने तथा मोबाइल ऐप डाउनलोड करने की सुविधा दी जाएगी और अभिदाता आधार संख्या /स्वप्रमाणित आधार पर बचत बैंक खाता/जनधन खाता का इस्तेमाल करते हुए अपना पंजीकरण करा सकते हैं।
- नामांकन कार्य सामुदायिक सेवा केन्द्रों (सीएससी) द्वारा चलाया जाएगा।
- असंगठित श्रमिक आधार कार्ड तथा बचत बैंक खाता, पासबुक/जनधन खाता के साथ नजदीकी सीएससी जाकर योजना के लिए अपना पंजीकरण करा सकते हैं।
- पहले महीने की अंशदान राशि का भुगतान नकद रूप में होगा और इसकी रसीद दी जाएगी।
- एलआईसी के सभी शाखा कार्यालयों, ईएसआईसी/ईपीएफओ के कार्यालयों तथा केन्द्र तथा राज्य सरकारों के सभी श्रम कार्यालयों द्वारा असंगठित श्रमिकों को योजना, उसके लाभों तथा प्रक्रियाओं के बारे में बताया जाएगा।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

- यदि अभिदाता 10 वर्ष से कम की अवधि में योजना से बाहर निकलता है तो उसे केवल लाभार्थी के अंशदान के हिस्से को बचत बैंक ब्याज दर के साथ दिया जाएगा।
- यदि अभिदाता 10 वर्षों या उससे अधिक की अवधि के बाद लेकिन 60 वर्ष की आयु होने से पहले योजना से बाहर निकलता है तो उसे लाभार्थी के अंशदान के हिस्से के साथ कोष द्वारा अर्जित संचित ब्याज के साथ या बचत बैंक ब्याज, दर जो भी अधिक हो, के साथ दिया जाएगा।
- यदि लाभार्थी ने नियमित अंशदान किया है और किसी कारणवश उसकी मृत्यु हो जाती है तो उसका जीवनसाथी नियमित अंशदान करके इस योजना को आगे जारी रख सकता है या कोष द्वारा अर्जित एकत्रित वास्तविक ब्याज या बचत बैंक ब्याज दर, जो भी अधिक हो, के साथ लाभार्थी का अंशदान लेकर योजना से बाहर निकल सकता है।

स्रोतः पीआईबी

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के लाभार्थियों के लिए मोबाइल एप्प शुरू किया गया

चर्चा में क्यों?

☞ आवासन और शहरी मामलों के राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) हरदीप एस पुरी द्वारा 14 फरवरी 2019 को लाभार्थियों के लिए मोबाइल एप्प आरंभ किया गया है।

मोबाइल एप्प की विशेषताएं

- पीएमएवाई (यू) मोबाइल एप्प जारी करने के अवसर शहरी मामलों के राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री हरदीप एस पुरी ने बताया कि इस एप्प के जरिये लाभार्थी अपने मकानों के साथ सेल्फी भी अपलोड कर पाएंगे।
- इसके अलावा 30-60 सेकंड की वीडियो क्लिप के जरिये लाभार्थी प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के तहत मकान प्राप्त करने की कहानी भी प्रस्तुत कर सकते हैं।
- इस अवसर पर एक मिनट की फिल्म भी दिखाई गई जिसमें यह बताया गया कि प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) ने किस तरह लाभार्थियों के जीवन पर प्रभाव डाला है।
- मोबाइल एप्प में लाभार्थियों के लिये घर का आवेदन करने और आवेदन की प्रगति की जानकारी हासिल करने की सुविधा को भी जल्द जोड़ दिया जायेगा।
- लाभार्थी इस एप्प के जरिये यह पता कर सकेगा कि पीएमएवाई के तहत उसे आवंटित किये गये घर का कितना निर्माण हुआ है और इसके पूर्ण होने में कितना समय लगेगा।

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) अभियान

- प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) अभियान की शुरूआत 25 जून, 2015 को की गई थी, जिसका उद्देश्य सभी पात्र शहरी परिवारों को 2022 तक आवास प्रदान करना है।
- योजना ने अभूतपूर्व प्रगति की है और शहरी क्षेत्रों में लगभग एक करोड़ मकानों की मांग के अनुरूप 73 लाख से अधिक मकानों की मंजूरी दी है।
- लगभग 40 लाख मकान निर्माण के विभिन्न स्तरों पर हैं और 15 लाख से अधिक मकान बनाए जा चुके हैं।
- इसके अलावा लगभग 12 लाख मकान नई और उभरती हुई प्रौद्योगिकियों के इस्तेमाल से निर्मित किये जा रहे हैं।

स्रोतः द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

प्रधानमंत्री ने अरुणाचल प्रदेश में 4,000 करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं का उद्घाटन किया

चर्चा में क्यों?

☞ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अरुणाचल प्रदेश, असम और त्रिपुरा की अपनी यात्रा के क्रम में 09 फरवरी 2019 को ईटानगर पहुंचे. उन्होंने ईटानगर में नए ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट और सेला टनल का शिलान्यास किया. प्रधानमंत्री ने डीडी अरुण प्रभा चैनल का शुभारंभ भी किया।

☞ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ईटानगर के आईजी पार्क से कई अन्य विकास परियोजनाओं का अनावरण किया. प्रधानमंत्री ने वहां लॉइन लूम संचालन का भी निरीक्षण किया। प्रधानमंत्री मोदी ने होलांगी के ग्रीनफील्ड हवाई अड्डे के निर्माण की आधारशिला रखी तथा तेजू हवाई अड्डे का उद्घाटन किया।

अरुणाचल प्रदेश में आरंभ की गई परियोजनाएं

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अरुणाचल प्रदेश में सी ला टनल (से ला सुरंग) का शिलान्यास किया. इससे सभी मौसम में तवांग घाटी पहुंचा जा सकेगा।
- होलांगी में 4100 वर्गमीटर क्षेत्र में 955 करोड़ रुपए की लागत से टर्मिनल का निर्माण किया जाएगा. इसकी संचालन क्षमता 200 यात्री प्रति घंटे होगी।
- वर्तमान में ईटानगर पहुंचने के लिए गुवाहाटी हवाई अड्डे पर उतरकर सड़क मार्ग से या हेलीकॉप्टर सेवा का उपयोग करना पड़ता था।
- तेजू हवाई अड्डे का निर्माण 50 वर्ष पहले हुआ था। इस हवाई अड्डे का विस्तार 125 करोड़ रुपए की लागत से किया गया है।
- इसके तहत उड़ान योजना से किफायती हवाई यात्रा का लाभ लोगों को मिलेगा।
- प्रधानमंत्री ने 110 मेगावाट क्षमता के पारे जल विद्युत संयंत्र का लोकार्पण किया। सौभाग्य योजना के अंतर्गत राज्य में शत प्रतिशत घरों का विद्युतीकरण किया जाएगा।
- प्रधानमंत्री ने अरुणाचल प्रदेश में 50 स्वास्थ्य व आरोग्य केन्द्रों का उद्घाटन किया।
- प्रधानमंत्री ने ईटानगर के आईजी पार्क में अरुणाचल प्रदेश के लिए विशेष डीडी चैनल- अरुण प्रभा का शुभारंभ किया। 24 घंटे चलने वाले इस चैनल का संचालन दूरदर्शन करेगा। इस चैनल से राज्य के सुदूर क्षेत्रों के समाचार लोगों तक पहुंचेंगे।

अरुणाचल प्रदेश की सी ला सुरंग का महत्व

- प्रधानमंत्री मोदी ने सी ला सुरंग का शिलान्यास किया है, यह तवांग से अरुणाचल प्रदेश को जोड़ेगी।
- इसका निर्माण बॉर्डर रोड आर्गेनाईजेशन (BRO) द्वारा किया जा रहा है। इस सुरंग का काम पूरा करने में BRO को करीब तीन साल लगेंगे।
- लोगों को सी ला चोटी के बर्फीले रास्ते से नहीं जाना पड़ेगा जो 13,700 फुट की ऊंचाई पर है।
- इस परियोजना की लागत 687 करोड़ रुपये तय की गई है। इस परियोजना के तहत 12.04 किलोमीटर का इलाका आएगा। इसमें 1,790 मीटर और 475 मीटर की दो सुरंगें शामिल हैं।
- यह सभी मौसम (all weather) में आवाजाही के अनुकूल सुरंग होगी।
- सेना को यहां तक पहुंचने और आवश्यक सामग्री पहुंचाने में इससे मदद मिलेगी और सेना का भरोसा बढ़ेगा।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

पूर्वोत्तर में आरंभ की गई अन्य परियोजनाएं

- प्रधानमंत्री ने गुवाहाटी में पूर्वोत्तर गैस-ग्रिड का शिलान्यास किया। इस ग्रिड से पूरे क्षेत्र में प्राकृतिक गैस की उपलब्धता सुनिश्चित होगी और औद्योगिक विकास को प्रोत्साहन मिलेगा।
- उन्होंने तिनसुकिया में होलांग मॉड्यूलर गैस प्रसंस्करण संयंत्र का उद्घाटन किया जो असम के कुल उत्पादित गैस के 15 प्रतिशत की आपूर्ति करेगा।
- प्रधानमंत्री ने उत्तर गुवाहाटी में स्टोरेज वैसेल की एलपीजी क्षमता वृद्धि का भी उद्घाटन किया।
- इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने नुमालीगढ़ में एनआरएल बायो-रिफाइनरी तथा 729 किलोमीटर लंबी बरौनी-गुवाहाटी गैस पाइप लाइन का शिलान्यास किया। यह पाइप लाइन बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम और असम से होकर गुजरेगी।
- प्रधानमंत्री ने कामरुप, काचेर, हाइलाकांडी और करीमगंज जिलों में नगर गैस वितरण नेटवर्क का भी शिलान्यास किया।

स्रोतः द हिंदू

ELITE IAS

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

राजव्यवस्था एवं शासन सामाजिक एवं सामाजिक विकास

जम्मू-कश्मीर आरक्षण अध्यादेश को कैबिनेट की मंजूरी

चर्चा में क्यों?

☞ केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 28 फरवरी 2019 को जम्मू कश्मीर आरक्षण संशोधन अध्यादेश 2019 को मंजूरी प्रदान कर दी. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हुई केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में इस आशय का निर्णय किया गया.

मुख्य तथ्य

- इसके जरिये अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास रहने वाले लोगों को भी आरक्षण का लाभ वास्तविक नियंत्रण रेखा के पास रहने वाले लोगों की तरह की प्राप्त हो सकेगा।
- मंत्रिमंडल ने संविधान (जम्मू और कश्मीर में लागू होने के लिए) संशोधन आदेश, 2019 के माध्यम से संविधान (जम्मू और कश्मीर में लागू होने के लिए) आदेश,1954 में संशोधन के संबंध में जम्मू और कश्मीर सरकार के प्रस्ताव को अपनी मंजूरी दी है।
- इससे राष्ट्रपति द्वारा अनुच्छेद 370 की धारा (1) के अंतर्गत जारी संविधान (जम्मू और कश्मीर में लागू होने के लिए) संशोधन आदेश, 2019 द्वारा संविधान (77वां संशोधन) अधिनियम,1955 तथा संविधान (103वां संशोधन) अधिनियम, 2019 से संशोधित भारत के संविधान के प्रासंगिक प्रावधान लागू होंगे।

प्रभाव:

- अधिसूचित होने पर यह आदेश सरकारी सेवाओं में अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों को पदोनत्ति लाभ का मार्ग प्रशस्त करेगा और जम्मू और कश्मीर में सरकारी रोजगार में वर्तमान आरक्षण के अतिरिक्त आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए 10 प्रतिशत तक आरक्षण का लाभ प्रदान करेगा।

पृष्ठभूमि:

- संविधान (77वां संशोधन) अधिनियम 1955 को भारत के संविधान के अनुच्छेद 16 की धारा 4 के बाद धारा (4) जोड़कर लागू किया गया। धारा (4) में सेवा में अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों को पदोन्नति लाभ देने का प्रावधान है। संविधान (103 वां संशोधन) अधिनियम 2019 देश में जम्मू और कश्मीर को छोड़कर लागू किया गया है। और जम्मू और कश्मीर तक अधिनियम के विस्तार से राज्य के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को आरक्षण का लाभ प्राप्त होगा।

स्रोतः द हिंदू , इंडियन एक्सप्रेस

कैबिनेट ने आधार अध्यादेश को मंजूरी दी

चर्चा में क्यों?

☞ केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने 28 फरवरी 2019 को आधार एक्ट 2016 में संशोधन को लेकर एक अध्यादेश को मंजूरी दे दी। कैबिनेट ने आधार को स्वैच्छिक रूप से मोबाइल नंबर, बैंक खातों से जोड़ने को कानूनी आधार प्रदान करने के लिए अध्यादेश लाने को मंजूरी दी।

☞ संशोधन में आधार के इस्तेमाल एवं निजता से जुड़े नियमों के उल्लंघन के लिए कड़े दंड का प्रावधान है। आधार के नियम के मुताबिक बायोमेट्रिक डेटा का भंडारण गैरकानूनी है। लोकसभा ने 04 जनवरी 2019 को इससे संबंधित विधेयक पारित कर दिया था लेकिन विधेयक राज्य सभा में पेश नहीं किया जा सका। इसलिए अब सरकार यह अध्यादेश ला रही है।

आधार अध्यादेश से संबंधित मुख्य तथ्य:

- टेलिग्राफ एक्ट और मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट में केवाईसी के लिए आधार स्वैच्छिक है। कोई भी कंपनी अगर आधार की जानकारी का इस्तेमाल करती है, तो उसे सुप्रीम कोर्ट और आधार एक्ट के तहत निजता मानकों का पूरा ध्यान रखना होगा।
- इस अध्यादेश के आने के बाद कोई व्यक्ति जो जिसके पास आधार नहीं है, उसे किसी भी योजना से वंचित नहीं किया जा सकेगा।
- नए नियम के मुताबिक आधार एक्ट का अगर कोई कंपनी उल्लंघन करती है तो उस पर जुर्माना भी लगाया जा सकता है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

- नए अध्यादेश के मुताबिक, किशोरों को 18 वर्ष की उम्र पूरी होने पर आधार संख्या रद्द करने का विकल्प देने समेत कई नए नियम लागू हो जाएंगे। इसमें आधार के इस्तेमाल और निजता के लिए तय नियमों के उल्लंघन पर दंड का प्रावधान है।
- अधिप्रमाणन या ऑफलाइन सत्यापन या किसी अन्य ढंग से भौतिक या इलेक्ट्रानिक रूप में आधार संख्या के स्वैच्छिक उपयोग के लिए उपबंध करना, आधार संख्या के ऑफलाइन सत्यापन का अधिप्रमाणन केवल आधार संख्या धारक की सूचित सहमति से किया जा सकता है।
- अध्यादेश में यह स्पष्ट किया गया है कि आधार कार्ड न देने पर किसी को भी किसी तरह की सेवा देने से इनकार नहीं किया जा सकता, चाहे बैंक खाता खुलवाना हो या मोबाइल फोन का सीम खरीदना हो।
- सुप्रीम कोर्ट ने 26 सितम्बर 2018 को अपने फैसले में आधार कानून के कुछ प्रावधानों को निरस्त कर दिया था, जिससे लोगों के मौलिक अधिकारों की रक्षा की जा सके और उनकी निजता को बरकरार रखा जा सके।
- विधेयक के उद्देश्यों एवं कारणों में कहा गया है कि आधार अधिनियम 2016 भारत में निवास करने वाले व्यक्तियों को सुशासन, विशिष्ट पहचान संख्या अनुदेशित करके ऐसी सुविधाओं और सेवाओं के कुशल, पारदर्शी और लक्षित परिदान के लिए तथा उससे संबंधित एवं अनुषंगिक विषयों का उपबंध करने के लिए लाया गया था।

स्रोतः द हिंदू

राजस्थान विधानसभा में पंचायतीराज संशोधन विधेयक और नगरपालिका संशोधन विधेयक पारित

चर्चा में क्यों?

- ☞ राजस्थान विधानसभा में हाल ही में पंचायतीराज संशोधन विधेयक और नगरपालिका संशोधन विधेयक पारित कर दिए गए. इन संशोधन विधेयकों के अनुसार अब पंचायतीराज और स्थानीय निकायों के चुनाव लड़ने के लिए शैक्षणिक योग्यता की अनिवार्यता खत्म कर दी गई है।
- ☞ अब इन चुनावों को लड़ने के लिए पढ़ा-लिखा होना जरूरी नहीं है, अब अनपढ़ भी सरपंच से लेकर प्रधान प्रमुख और पार्षद से लेकर मेयर तक का चुनाव लड़ सकेंगे। गौरतलब है कि वर्तमान राजस्थान सरकार ने सत्ता में आते ही न्यूनतम शिक्षा मानदंड को खत्म करने की घोषणा की थी।

पारित किये गये विधेयक हैं:

1. राजस्थान पंचायती राज (संशोधन) विधेयक, 2019
2. राजस्थान नगर पालिका (संशोधन) विधेयक, 2019

पिछले शैक्षिणक मानदंड

- जिला परिषद या पंचायत चुनाव में भाग लेने वाले उम्मीदवार की न्यूनतम शैक्षिक योग्यता माध्यमिक स्तर अर्थात् दसवीं कक्षा उत्तीर्ण होनी चाहिये।
- सरपंच का चुनाव लड़ने के लिये सामान्य श्रेणी के उम्मीदवार को आठवीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिये।
- जबकि सरपंच का चुनाव लड़ने के लिये अनुसूचित जाति अथवा जनजाति श्रेणी के उम्मीदवार को पाँचवीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिये।
- राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किये जा चुके सरपंच भी अधिनियम के पिछले प्रावधानों की वजह से चुनाव में अयोग्य घोषित हो गए थे।
- विदित हो कि राजस्थान में पंचायत समिति, जिला परिषद व नगरपालिका का चुनाव लड़ने के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता की बाध्यता 2015 में वसुंधरा राजे सरकार ने लागू की थी।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

संशोधन विधेयक के पक्ष में सरकार का तर्क

- पंचायती राज से जुड़े विधेयक पर बहस का जवाब देते हुए ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री सचिन पायलट ने कहा कि पंचायती राज अधिनियम में पूर्व में किए गए प्रावधान ऐसे थे, जिनसे राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किए गए सरपंच भी चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य घोषित हो गये थे।
- शिक्षा के आधार पर समाज को दो श्रेणियों में नहीं बांटा जा सकता, इसलिए अधिनियम का प्रावधान संविधान की मूल भावना के विपरीत है। किसी अच्छे राजनेता की परिभाषा अत्यधिक व्यक्तिपरक होती है और किसी व्यक्ति से अपेक्षित गुण भी बहुत अस्पष्ट होते हैं।

स्रोतः द हिंदू

जम्मू-कश्मीर प्रशासन ने लद्दाख को पृथक मंडल घोषित किया

चर्चा में क्यों?

- जम्मू-कश्मीर प्रशासन ने हाल ही में लद्दाख को कश्मीर से पृथक करते हुए उसे एक अलग डिवीजन अथवा मंडल घोषित किया है. इस घोषणा से अब राज्य में तीन प्रशासनिक इकाइयाँ जम्मू, कश्मीर और लद्दाख कार्यरत हो जायेंगी।
- राज्य प्रशासन की ओर से जारी आदेश में कहा गया है कि लद्दाख के लिये प्रशासकीय व राजस्व विभाग भी अलग से बनाया जायेगा जिसके लिए लेह में मुख्यालय बनाया जायेगा। इसके अतिरिक्त योजना के विकास एवं निगरानी के लिये मुख्य सचिव के नेतृत्व में एक समिति भी बनाई गई है। यह समिति नवगठित लद्दाख मंडल में विभिन्न विभागों के मंडल स्तर के पदों को चिन्हित करने के अलावा स्टाफ की व्यवस्था, जिम्मेदारियों और कार्यालय हेतु जगह भी चिन्हित करेगी।

मुख्य तथ्य

- इस फैसले से कश्मीर घाटी 15,948 वर्ग किमी. क्षेत्रफल के साथ सबसे छोटा डिवीजन उसके बाद जम्मू डिवीजन जिसका क्षेत्रफल 26,293 वर्ग किमी. होगा जबकि लद्दाख 86,909 वर्ग किमी। के साथ सबसे बड़ा डिवीजन बन जाएगा।
- लद्दाख के कारगिल और लेह जिलों में पहले से ही स्थानीय प्रशासनिक व्यवस्था के लिये अलग पहाड़ी विकास परिषद हैं।
- सरकारी आदेश के अनुसार, लद्दाख को अलग डिवीजन बनाए जाने का फैसला लद्दाख के लोगों की प्रशासन व विकासीय आकांक्षाओं को पूरा करने में दूरगामी साबित होगा।
- राज्य प्रशासन के मुताबिक, लेह व कारगिल जैसे जिलों के चलते लद्दाख सर्दियों के दौरान लगभग छह माह तक शेष भारत से कटा रहता है। इस दौरान सिर्फ लेह में हवाई जहाज से ही पहुँचा जा सकता है और इस कारण देश के अन्य भागों से कई लोग चाहकर भी सर्दियों के दौरान लद्दाख नहीं पहुँच पाते हैं।
- लद्दाख विशिष्ट भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पहचान और राजधानी से दूरी के मद्देनजर विशेष व्यवहार किये जाने का हकदार है। इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए ही लद्दाख के लिये एक अलग प्रशासकीय व राजस्व विभाग बनाने का फैसला किया गया है।

पृष्ठभूमि

- जम्मू कश्मीर लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद अधिनियम 1997 के तहत ही लेह व कारगिल के लिये परिषदों का गठन किया गया है। इन परिषदों को वित्तीय, प्रशासकीय और विधायी तौर पर मजबूत बनाने के लिये ही एलएएचडीसी अधिनियम 1997 को वर्ष 2018 में संशोधित किया गया है। लद्दाख में जनसंख्या का घनत्व बहुत ही कम है और यह अत्यंत विषम भौगोलिक परिस्थितियों वाला क्षेत्र है इसलिए उस क्षेत्र को इस प्रकार का महत्व देना बेहतर कदम साबित हो सकता है।

स्रोतः द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

अनियंत्रित जमा योजना निरोधक विधेयक-2018 में आधिकारिक संशोधन को मंजूरी

चर्चा में क्यों?

☞ सरकार ने पोंजी स्कीमों पर पूरी तरह से रोक लगाने के उद्देश्य से लाये गये अनियंत्रित जमा योजना निरोधक विधेयक-2018 में आधिकारिक संशोधन को 06 फरवरी 2019 को मंजूरी प्रदान कर दी है।

☞ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में हुई मंत्रिमंडल की बैठक में यह मंजूरी दी गई। पिछले वर्ष इस विधेयक को लोकसभा पेश किया गया था जहां इसे वित्त संबंधी स्थायी समिति को भेजा गया था।

उद्देश्य

- इस विधेयक में प्रतिबंध लगाने का एक व्यापक अनुच्छेद है, जो जमा राशि जुटाने वालों को किसी भी अनियमित जमा योजना का प्रचार-प्रसार करने, संचालन करने, विज्ञापन जारी करने अथवा जमा राशि जुटाने से प्रतिबंधित करता है।
- इसका उद्देश्य यह है कि यह विधेयक अनियमित जमा जुटाने से जुड़ी गतिविधियों पर पूरी तरह से रोक लगा देगा.
- इसके तहत इस तरह की गतिविधियों को प्रत्याशित अपराध माना जाएगा, जबकि मौजूदा विधायी-सह-नियामकीय फ्रेमवर्क केवल व्यापक समय अंतराल के बाद ही यथार्थ या अप्रत्याशित रूप से प्रभावी होता है।

मुख्य बिंदु

- विधेयक में अपराधों के तीन प्रकार निर्दिष्ट किये गये हैं, जिनमें अनियमित जमा योजनाएं चलाना, नियमित जमा योजनाओं में धोखाधड़ी के उद्देश्य से डिफॉल्ट करना और अनियमित जमा योजनाओं के संबंध में गलत इरादे से प्रलोभन देना शामिल हैं।
- विधेयक में कठोर दंड देने और भारी जुर्माना लगाने का प्रावधान किया गया है, ताकि लोग इस तरह की गतिविधियों से बाज आ सकें।
- विधेयक में उन मामलों में जमा राशि को वापस लौटाने या पुनर्भुगतान करने के पर्याप्त प्रावधान किये गये हैं, जिनके तहत ये योजनाएं किसी भी तरह से अवैध तौर पर जमा राशि जुटाने में सफल हो जाती हैं।
- विधेयक में सक्षम प्राधिकरण द्वारा सम्पत्तियों/परिसम्पत्तियों को जब्त करने और जमाकर्ताओं को पुनर्भुगतान करने के उद्देश्य से इन परिसम्पत्तियों को हासिल करने का प्रावधान किया गया है।
- सम्पत्ति को जब्त करने और जमाकर्ताओं को धनराशि वापस करने के लिए स्पष्ट समय-सीमा तय की गई है।
- विधेयक में एक ऑनलाइन केन्द्रीय डेटाबेस बनाने का प्रावधान किया गया है, ताकि देश भर में जमा राशि जुटाने की गतिविधियों से जुड़ी सूचनाओं का संग्रह करने के साथ-साथ उन्हें साझा भी किया जा सके।
- विधेयक में 'जमा राशि जुटाने वाले' और 'जमा राशि या डिपॉजिट' को व्यापक रूप से परिभाषित किया गया है।
- 'जमा राशि जुटाने वालों' में ऐसे सभी संभावित निकाय (लोगों सहित) शामिल हैं, जो जमा राशियां जुटाते रहे हैं। इनमें ऐसे विशिष्ट निकाय शामिल नहीं हैं, जिनका गठन विधान के जरिये किया गया है।
- 'जमा राशि या डिपॉजिट' को कुछ इस तरह से परिभाषित किया गया है कि जमा राशि जुटाने वालों को प्राप्तियों के रूप में छलपूर्वक आम जनता से धनराशि जुटाने पर प्रतिबंधित कर दिया गया है और इसके साथ ही किसी प्रतिष्ठान द्वारा अपने व्यवसाय के तहत सामान्य ढंग से धनराशि स्वीकार करने पर कोई अंकुश नहीं लगाया गया है या इसे बाधित नहीं किया गया है।
- व्यापक केन्द्रीय कानून होने के नाते इस विधेयक में सरकारी कानूनों से सर्वोत्तम तौर-तरीकों को अपनाया गया है और इसके साथ ही विधान के प्रावधानों पर अमल की मुख्य जिम्मेदारी राज्य सरकारों को सौंपी गई है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

पृष्ठभूमि

- वित्त मंत्री ने बजट भाषण 2016-17 में यह घोषणा की थी कि अवैध रूप से जमा राशि जुटाने वाली योजनाओं के खतरे से निपटने के लिए एक व्यापक केन्द्रीय कानून बनाया जाएगा, क्योंकि हाल ही के महीनों में इस तरह की योजनाओं के जरिये देश भर के विभिन्न हिस्सों में अनगिनत लोगों को भारी आर्थिक चपत लगाने के मामले सामने आये हैं।
- इन योजनाओं के बुरी तरह शिकार होने वालों में गरीब और वित्तीय दृष्टि से निरक्षर लोग शामिल हैं. यही नहीं, इस तरह की योजनाओं का जाल अनेक राज्यों में फैला हुआ है।
- भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचनाओं के मुताबिक जुलाई, 2014 और मई, 2018 के बीच की अवधि के दौरान अनधिकृत योजनाओं के 978 मामलों पर विभिन्न राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों की राज्य स्तरीय समन्वय समिति (एसएलसीसी) की बैठकों में विचार किया गया और उन्हें राज्यों के संबंधित नियामकों/कानून प्रवर्तन एजेंसियों के सुपुर्द किया गया।
- इसके बाद वित्त मंत्री ने बजट भाषण 2017-18 में यह घोषणा की थी कि अवैध रूप से जमा राशि जुटाने वाली योजनाओं के खतरे पर अंकुश लगाने के लिए विधेयक के मसौदे को सार्वजनिक तौर पर पेश किया गया है और इसे अंतिम रूप देने के बाद जल्द ही संसद में पेश किया जाएगा।

स्रोत: पीआईबी

सिनेमेटोग्राफ अधिनियम, 1952 में संशोधन

चर्चा में क्यों?

☞ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने सिनेमेटोग्राफ अधिनियम, 1952 में संशोधन के लिए सिनेमेटोग्राफ संशोधन विधेयक, 2019 को प्रस्तुत करने से संबंधित सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रस्ताव को मंजूरी दी है।

विधेयक का उद्देश्य

☞ विधेयक का उद्देश्य फिल्म पायरेसी को रोकना है और इसमें गैर-अधिकृत कैम्कॉर्डिंग और फिल्मों की कॉपी बनाने के खिलाफ दंडात्मक प्रावधानों को शामिल करना है।

मुख्य तथ्य

- फिल्म पायरेसी को रोकने के लिए संशोधन में निम्न को शामिल किया गया है :
- गैर-अधिकृत रिकॉर्डिंग को रोकने के लिए नई धारा 6एए को जोड़ना
- सिनेमेटोग्राफ अधिनियम, 1952 की धारा 6ए के बाद यह धारा जोड़ी जाएगी:
- 6एए: 'अन्य कोई लागू कानून के बावजूद किसी व्यक्ति को लेखक की लिखित अनुमति के बिना किसी ऑडियो विजुअल रिकॉर्ड उपकरण के उपयोग करके किसी फिल्म या उसके किसी हिस्से को प्रसारित करने या प्रसारित करने का प्रयास करने या प्रसारित करने में सहायता पहुंचाने की अनुमति नहीं होगी.'
- लेखक का अर्थ सिनेमेटोग्राफ अधिनियम, 1957 की धारा 2 उपधारा-डी में दी गई व्याख्या के समान है।
- धारा-7 में संशोधन का उद्देश्य धारा-6,, के प्रावधानों के उल्लंघन के मामले में दंडात्मक प्रावधानों को पेश करना है। मुख्य अधिनियम की धारा'-7 में उपधारा-1 के बाद निम्न उपधारा-1, जोड़ी जाएगी।
- उपधारा-1, : 'यदि कोई व्यक्ति धारा-6,, के प्रावधानों का उल्लंघन करता है, तो उसे 3 साल तक का कारावास या 10 लाख रुपये तक का जुर्माना या दोनों की सजा दी जा सकती है।'

लाभ

☞ प्रस्तावित संशोधनों से उद्योग के राजस्व में वृद्धि होगी, रोजगार का सृजन होगा, भारत के राष्ट्रीय आईपी नीति के प्रमुख उद्देश्यों की पूर्ति होगी और पायरेसी तथा ऑनलाइन विषय वस्तु की कॉपी राइट उल्लंघन के मामले में राहत मिलेगी।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

संशोधन की आवश्यकता

- समय के साथ एक माध्यम के रूप में सिनेमा, इसकी प्रौद्योगिकी, इसके उपकरण और यहां तक कि दर्शकों में भी महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं।
- पूरे देश में टीवी चैनलों और केबल नेटवर्क के विस्तार से मीडिया और एंटरटेंटमेंट के क्षेत्र में कई परिवर्तन हुए हैं।
- नई डिजिटल तकनीक का आगमन हुआ है और विशेष कर इंटरनेट पर पायरेटेड फिल्मों के प्रदर्शन से पायरेसी के खतरे बढ़े हैं। इससे फिल्म उद्योग और सरकार को राजस्व की अत्यधिक हानि होती है।

पृष्ठभूमि

☞ फिल्म उद्योग की लम्बे समय से मांग रही है कि सरकार कैमकोर्डिंग और पायरेसी रोकने के लिए कानून संशोधन पर विचार करे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 10 जनवरी, 2019 को राष्ट्रीय भारतीय सिनेमा म्यूजियम के उद्घाटन के अवसर पर घोषणा की थी कि कैमकोर्डिंग और पायरेसी निषेध की व्यवस्था की जाएगी। सूचना व प्रसारण मंत्रालय ने तीन हफ्तों के अंदर केन्द्रीय मंत्रिमंडल के समक्ष विचार के लिए प्रस्ताव रखा है।

स्रोतः पीआईबी

राष्ट्रपति ने चार अध्यादेशों को मंजूरी प्रदान की

चर्चा में क्यों?

☞ राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने 21 फरवरी 2019 को चार अध्यादेशों को मंजूरी दे दी है. अब यह चारों अध्यादेश कानून का रूप ले सकेंगे। इनमें मुस्लिम महिला (विवाह अधिकार संरक्षण) संबंधी विधेयक को दूसरी बार मंजूरी प्रदान की गई।

☞ इसके अतिरिक्त सरकार ने कंपनी संचालन एवं अनुपालन रूपरेखा में गंभीर खाइयों को पाटने तथा देश में कारोबार सुगमता बेहतर करने के लिये कंपनी कानून में संशोधन को लेकर अध्यादेश जारी किया है। आधिकारिक गजट के अनुसार राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद कंपनी (द्वितीय संशोधन) अध्यादेश-2019 प्रभावी हो गया है।

राष्ट्रपति द्वारा मंजूरी प्राप्त अध्यादेश

1. मुस्लिम महिला (मुस्लिम महिला विवाह अधिकार संरक्षण) दूसरा अध्यादेश ,2019
2. भारतीय चिकित्सा परिषद (संशोधन) दूसरा अध्यादेश, 2019
3. कंपनी (संशोधन) दूसरा अध्यादेश, 2019
4. अनियमित जमा योजनाओं पर प्रतिबंध से संबंधित अध्यादेश, 2019

- मुस्लिम महिला (मुस्लिम महिला विवाह अधिकार संरक्षण) अध्यादेश
- मुस्लिम महिला (मुस्लिम महिला विवाह अधिकार संरक्षण) दूसरा अध्यादेश, 2019 के जरिये मुस्लिम महिला विवाह अधिकार संरक्षण अध्यादेश, 2019 के प्रावधानों को बनाये रखने के लिए लाया गया है।
- इस अध्यादेश के जरिये तीन तलाक को अमान्य और गैर-कानूनी करार दिया गया है। इसे एक दंडनीय अपराध माना गया है, जिसके तहत तीन साल की सजा और जुर्माने का प्रावधान है।
- यह अध्यादेश विवाहित मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा करेगा एवं उन्हें उनके पतियों द्वारा तत्कालिक एवं अपरिवर्तनीय 'तलाक-ए-बिद्दत' के प्रचलन के द्वारा तलाक दिए जाने को रोकेगा।
- यह तीन तलाक यानी 'तलाक-ए-बिद्दत' की प्रथा को निरुत्साहित करेगा। प्रस्तावित अध्यादेश का प्रख्यापन आजीविका भत्ता, तीन तलाक यानी 'तलाक-ए-बिद्दत' के पीड़ितों के नाबालिग बच्चों का संरक्षण का अधिकार प्रदान करेगा।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारतीय चिकित्सा परिषद (संशोधन) अध्यादेश

- भारतीय चिकित्सा परिषद (संशोधन) दूसरा अध्यादेश, 2019 पूर्व में जारी अध्यादेश के प्रावधानों के अनुरूप संचालक मंडल बीओजी द्वारा शुरू किये गये कार्यों को आगे भी जारी रखने के लिए लागू किया गया है।
- यह अध्यादेश यह सुनिश्चित करेगा कि पूर्व अध्यादेश के प्रावधानों के तहत किये गये कार्य को मान्यता प्राप्त है तथा यह आगे भी जारी रहेगी।
- भारतीय चिकित्सा परिषद के निवर्तन के बाद गठित संचालक मंडल को दो वर्षों तक या परिषद के दोबारा गठन तक जो भी पहले हो, तक उसके सभी अधिकारों का इस्तेमाल करने का अधिकार देता है।
- इसका उद्देश्य देश में चिकित्सा शिक्षा को ज्यादा पारदर्शी, गुणवत्ता युक्त और जवाबदेह बनाना है।

कंपनी (संशोधन) अध्यादेश, 2019

- देश में कानून का पालन करने वाली कंपनियों को कारोबारी सुगमता का माहौल प्रदान करने के साथ ही कंपनी कानून, 2013 की कॉरपोरेट गवर्नेंस और नियमों के अनुपालन की व्यवस्था को और सख्त बनाने के इरादे से कंपनी (संशोधन) दूसरा अध्यादेश 2019 लागू किया गया है।
- यह कंपनी अधिनियम 2013 के अंतर्गत अपराधों की समीक्षा करने वाली समिति की अनुशंसाओं पर आधारित है ताकि कंपनी अधिनियम 2013 में वर्णित कॉरपोरेट प्रशासन तथा अनुपालन रूपरेखा के महत्वपूर्ण अंतरों/कमियों को समाप्त किया जा सके और कानून का पालन करने वाले उद्यमों को व्यापार में आसानी की सुविधा प्रदान की जा सके।
- इससे कानून का पालन करने वालों को प्रोत्साहन मिलेगा तथा उल्लंघन करने वालों को गंभीर सजा भुगतनी होगी। इसके माध्यम से केन्द्र सरकार को यह अधिकार दिया जा रहा है कि वह वित्तीय कारोबार से जुड़ी कुछ कंपनियों को ट्राइब्यूनल द्वारा तय किए गए वित्त वर्ष की बजाए विभिन्न वित्त वर्ष चुनने की अनुमति प्रदान कर सके।

अनियमित जमा योजनाओं पर प्रतिबंध से संबंधित अध्यादेश, 2019

- अनियमित जमा योजना प्रतिबंध अध्यादेश 2019 को देश में अवैध रूप से धनराशि जमा कराने वाली योजनाओं पर नकेल कसने के लिए केन्द्र की ओर से सख्त काननू लाने के इरादे से लागू किया गया है।
- अभी तक गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों को आम जनता से विभिन जमा योजनाओ के तहत पैसा जुटाने की सारी गतिविधियां केन्द्र और राज्य सरकारों की ओर से बनाए गए विभिन्न कानूनों के तहत करने की अनुमति मिली हुयी है जिनमें कोई एकरूपता नहीं है।
- इसका लाभ फरेबी पोंजी कंपनियों लोगों को उनके जमा पर ज्यादा ब्याज देने का लालच देकर ठग रही हैं। ऐसे में नए अध्यादेश के जरिए ऐसी कंपनियों पर प्रतिबंध की प्रभावी व्यवस्था की गयी है। इसके जरिए ऐसी योजना पर तुरंत रोक लगाने और इसके लिए आपराधिक दंड का प्रावधान किया गया है।
- इसमें जमाकर्ताओं के लिए फरेबी कंपनियों की परिसंपत्तियां कुड़की कर जमाकर्ताओं को उनका पैसा तुरंत वापस दिलाने की व्यवस्था भी है।

स्रोतः पीआईबी

पूर्व न्यायाधीश डी.के. जैन को बीसीसीआई का पहला लोकपाल नियुक्त किया गया

चर्चा में क्यों?

- उच्चतम न्यायालय ने 21 फरवरी 2019 को शीर्ष अदालत के पूर्व न्यायाधीश डी. के. जैन को भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड का प्रथम लोकपाल नियुक्त किया। न्यायमूर्ति एस. ए. बोबडे और न्यायमूर्ति ए. एम. सप्रे की पीठ ने उनकी नियुक्ति के बारे में फैसला सुनाया।
- पीठ द्वारा जारी बयान में कहा गया, ष्हमें खुशी है कि संबंधित पक्षों की सहमति और सुझावों के माध्यम से पूर्व न्यायाधीश डी. के. जैन को भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड का लोकपाल नियुक्त करने पर सहमति हो गयी है। 'पीठ ने कहा कि तद्नुसार हम न्यायमूर्ति जैन (सेवानिवृत्त) को भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड का प्रथम लोकपाल नियुक्त कर रहे हैं।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

बीसीसीआई लोकपाल की नियुक्ति

- भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड के लोकपाल पद पर नियुक्ति के लिये पीठ के समक्ष सीलबंद लिफाफे में शीर्ष अदालत के छह सेवानिवृत्त न्यायाधीशों के नाम पेश किये गये थे।
- इस मामले में न्याय मित्र की भूमिका निभा रहे पी एस नरसिम्हा ने लोकपाल पद के लिये संभावित नामों की सूची पीठ को उपलबध करायी थी।
- पीठ को बताया गया कि लोकपाल की भूमिका राज्य क्रिकेट एसोसिएशनों में खिलाड़ियों से संबंधित विवादों और वित्तीय मसलों को सुलझाने की होगी।
- शीर्ष अदालत ने 09 अगस्त, 2018 को अपने फैसले में भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड के लिये लोकपाल नियुक्त करने की सिफारिश की थी।
- नरसिम्हा ने मामले की सुनवाई के दौरान पीठ को बताया कि यदि बोर्ड में पहले से लोकपाल होता तो हाल ही में दो खिलाड़ियों हार्दिक पाण्ड्या और के एल राहुल से जुड़ा विवाद प्राथमिकता के आधार पर सुलझा लिया गया होता।

लोकपाल खोज समिति

- सुप्रीम कोर्ट ने लोकपाल पर खोज समिति के लिए देश के पहले लोकपाल की नियुक्ति हेतु नामों के पैनल की सिफारिश करने की समय सीमा फरवरी के अंत तक निर्धारित की थी। खोज समिति की प्रमुख सुप्रीम कोर्ट की पूर्व जज रंजना प्रकाश देसाई हैं।
- मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई की अध्यक्षता वाली पीठ ने केंद्र को निर्देश दिया था कि खोज समिति को आवश्यक सुविधाएं और श्रमबल मुहैया कराया जाए, ताकि वह अपना काम पूरा कर सके।
- केंद्र सरकार ने 27 सितंबर 2018 को न्यायमूर्ति रंजना प्रकाश देसाई (सेवानिवृत्त) की अध्यक्षता में आठ सदस्यीय खोज समिति का गठन किया था। इस समिति को लोकपाल की नियुक्ति के लिए चयन समिति के पास नामों की अनुशंसा भेजना था।

खोज समिति के सदस्य

- स्टेट बैंक की पूर्व प्रमुख अरुंधति भट्टाचार्य, प्रसार भारती के अध्यक्ष ए. सूर्यप्रकाश, इसरो के पूर्व प्रमुख ए.एस. किरण कुमार, इलाहाबाद हाईकोर्ट के पूर्व जज सखाराम सिंह यादव, गुजरात पुलिस के पूर्व प्रमुख शब्बीर हुसैन एस. खांडवावाला, राजस्थान कैडर के सेवानिवृत्त आईएएस ललित के. पंवार और पूर्व सॉलिसिटर जनरल रंजीत कुमार.

स्रोत: द हिंदू

वैयक्तिक कानून (संशोधन) विधेयक-2018 को मंजूरी

चर्चा में क्यों?

- बजट सत्र के अंतिम दिन 13 फरवरी 2019 को संसद ने विधेयक पर सहमति बनने के बाद इसे बिना चर्चा के पारित कर दिया। निम्न एवं उच्च सदन में पहले वैयक्तिक कानून (संशोधन) विधेयक 2018 को ध्वनि मत से पारित किया गया।
- इसमें विवाह विच्छेद अधिनियम 1869, मुस्लिम विवाह विघटन अधिनियम 1939, विशेष विवाह अधिनियम 1954 तथा हिन्दू दत्तक और भरण पोषण अधिनियम 1956 का और संशोधन करने का प्रस्ताव किया गया है।

वैयक्तिक कानून (संशोधन) विधेयक-2018

- विधेयक के उद्देश्यों एवं कारणों में कहा गया है कि कुष्ठ रोग से ग्रस्त रोगियों को समाज से अलग किया गया था क्योंकि कुष्ठ रोग निदान योग्य नहीं था और समाज उनके प्रतिकूल था।
- तथापि इस बीमारी का निदान करने के लिये गहन स्वास्थ्य देखभाल और आधुनिक चिकित्सा की उपलब्धता के परिणमस्वरूप उनके प्रति समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन होना आरंभ हुआ है।
- वर्तमान में कुष्ठ रोग पूर्णत: निदान योग्य है लेकिन कुष्ठ रोग से ग्रस्त व्यक्तियों के प्रति विभेद करने वाले पुराने विधायी उपबंध विभिन्न विधियों में आज भी विद्यमान हैं। ऐसे में इन विभेदकारी उपबंधों को समाप्त करने के लिये विधेयक लाया गया है।
- इस विधेयक के कानून बनने के बाद कुष्ठ रोग के आधार पर तलाक नहीं लिया जा सकेगा।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

- इसके अतिरिक्त भारत ने संयुक्त राष्ट्र के उस घोषणापत्र पर भी हस्ताक्षर किये हैं जिसमें कुष्ठ रोग से प्रभावित लोगों के खिलाफ भेदभाव समाप्त करने का आह्वान किया गया है।
- वर्ष 2014 में सुप्रीम कोर्ट ने भी केंद्र और राज्य सरकारों को कुष्ठ रोग प्रभावित व्यक्तियों के पुनर्वास एवं उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए कदम उठाने को कहा था।
- विधि आयोग ने अपनी रिपोर्ट में उन कानूनों और प्रावधानों को निरस्त करने की सिफारिश की थी जो कुष्ठ रोग से प्रभावित लोगों के प्रति भेदभावपूर्ण हैं। इसी रिपोर्ट के आधार पर यह विधेयक लाया गया है।

राष्ट्रीय कुष्ठ रोग उन्मूलन कार्यक्रम

- राष्ट्रीय कुष्ठ रोग उन्मूलन कार्यक्रम वर्ष 1955 में सरकार द्वारा शुरू की गयी एक योजना है।
- इस कार्यक्रम को विश्व बैंक की सहायता से 1993-94 से बढ़ाकर 2003-04 तक कर दिया गया।
- इसका उद्देश्य सार्वजनिक स्वास्थ्य से 2005 तक कुष्ठ उन्मूलन था और इस 1,10,000 की संख्या को कम करना था।
- राष्ट्रीय कुष्ठ रोग उन्मूलन कार्यक्रम को राज्य /जिला स्तर पर विकेंद्रीकृत किया गया और कुष्ठ रोग सेवाओं को 2001-2002 के बाद सामान्य देखभाल प्रणाली के साथ एकीकृत किया गया।
- इससे कुष्ठ (पीएएल) से प्रभावित व्यक्तियों के साथ होने वाले भेदभाव को कम करने में मदद मिली।
- मल्टी ड्रग थेरेपी (एमडीटी) सभी उपकेंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, सरकारी अस्पतालों और औषधालयों में सभी कार्य दिवसों पर निःशुल्क प्रदान की जा रही है।
- राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन की शुरूआत के बाद कुष्ठ कार्यक्रम भी मिशन का अनिवार्य हिस्सा रहा है।
- अब तक 33 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों ने कुष्ठ रोग उन्मूलन का स्तर प्राप्त कर लिया है। साथ ही 640 जिलों में से 542 जिलों (84.7%) ने भी मार्च 2012 तक कुष्ठ रोग उन्मूलन प्राप्त कर लिया है।

कुष्ठ रोग उन्मूलन कार्यक्रम के उद्देश्य

1. प्रशिक्षित स्वास्थ्य कर्मचारियों द्वारा सक्रिय निगरानी के माध्यम से प्रारंभिक पहचान;
2. मध्यम से कम प्रभावित स्थानिक क्षेत्रों/जिलों के नजदीकी गांवों के केंद्रों या निर्धारित स्थान पर मल्टी-ड्रग थेरेपी (एमडीटी) देकर मामलों का नियमित उपचार
3. रोग से जुड़े सामाजिक कलंक को दूर करने के लिए त्वरित स्वास्थ्य शिक्षा और जन जागरूकता अभियान का कार्यान्वयन करना
4. उपयुक्त चिकित्सा पुनर्वास और कुष्ठ रोग अल्सर देखभाल सेवाएं

स्रोत: पीआईबी

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध भारत और विश्व एवं वैश्विक परिदृश्य

भारत ने पुलवामा आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान से मोस्ट फेवर्ड नेशन का दर्जा वापस लिया

चर्चा में क्यों?

☞ भारत ने पुलवामा में सीआरपीएफ जवानों पर आत्मघाती आतंकी हमले के विरोध में पाकिस्तान के खिलाफ कड़ा एक्शन लेते हुए पाकिस्तान से मोस्ट फेवर्ड नेशन (एमएफएन) का दर्जा वापस लेने की घोषणा की है।

☞ हमले के मद्देनजर 15 फरवरी 2019 को पीएम मोदी की अध्यक्षता में सुरक्षा पर कैबिनेट समिति (CCS) की बैठक हुई। बैठक में रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण, गृह मंत्री राजनाथ सिंह, विदेश मंत्री सुषमा स्वराज, तीनों सेनाध्यक्ष और सीआरपीएफ (CRPF) के डीजी ने भाग लिया।

घटना:

- पुलवामा (जम्मू-कश्मीर) में 14 फरवरी 2019 को सीआरपीएफ काफिले पर आत्मघाती आतंकी हमले में शहीद होने वाले जवानों की संख्या मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार 44 हो गई है।
- बतौर रिपोर्ट्स, सीआरपीएफ के करीब 70 वाहनों का काफिला 2547 जवानों को लेकर जा रहा था और उससे टकराने वाली एसयूवी में 350 किलोग्राम आईईडी विस्फोटक था।
- रिपोर्ट के अनुसार उरी के बाद यह सबसे बड़ा आतंकी हमला है। बता दें कि यह हमला श्रीनगर से सिर्फ 20 किलोमीटर की दूरी पर हुआ है।
- इनमें से अधिकतर सीआरपीएफ जवान अपनी छुट्टियां बिताने के बाद अपनी ड्यूटी पर लौट रहे थे। जम्मू कश्मीर राजमार्ग पर अवंतिपोरा इलाके में लाटूमोड पर इस काफिले पर अपराह्न करीब साढ़े तीन बजे घात लगाकर हमला किया गया।
- केंद्र सरकार ने पुलवामा में हुए आतंकवादी हमले के मद्देनजर पाकिस्तान को दिए गए सबसे वरीयता प्राप्त राष्ट्र का दर्जा वापस लेने के बाद वहां से आयात की जाने वाली वस्तुओं पर 200 प्रतिशत आयात शुल्क लगाने का फैसला किया है। केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क विभाग ने इस संबंध में अधिसूचना जारी कर दी है जो तत्काल प्रभाव से लागू हो गया है।

मोस्ट फेवर्ड नेशन (एमएफएन) का दर्जा कब दिया गया?

- भारत 01 जनवरी 1995 को विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) का सदस्य बना था। डब्ल्यूटीओ बनने के साल भर बाद भारत ने पाकिस्तान को वर्ष 1996 में मोस्ट फेवर्ड नेशन (एमएफएन) का दर्जा दिया था लेकिन पाकिस्तान की ओर से भारत को ऐसा कोई दर्जा नहीं दिया गया था।

मोस्ट फेवर्ड नेशन (एमएफएन) का दर्जा लेने की प्रक्रिया:

- विश्व व्यापार संगठन के आर्टिकल 21बी के तहत कोई भी देश उस सूरत में किसी देश से मोस्ट फेवर्ड नेशन का दर्जा वापस ले सकता है जब दोनों देशों के बीच सुरक्षा संबंधी मुद्दों पर विवाद उठ गया हो। हालांकि इसके लिए तमाम शर्तें पूरी करनी होती हैं।

मोस्ट फेवर्ड नेशन (एमएफएन) क्या है?

- दरअसल एमएफएन (एमएफएन) का मतलब है मोस्ट फेवर्ड नेशन, यानी सर्वाधिक तरजीही देश. विश्व व्यापार संगठन और इंटरनेशनल ट्रेड नियमों के आधार पर व्यापार में सर्वाधिक तरजीह वाला देश (एमएफएन) का दर्जा दिया जाता है।
- एमएफएन का दर्जा मिल जाने पर दर्जा प्राप्त देश को इस बात का आश्वासन रहता है कि उसे कारोबार में नुकसान नहीं पहुंचाया जाएगा।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

एमएफएन के दर्जा से क्या लाभ है?

- एमएफएन का दर्जा कारोबार में दिया जाता है। इसके तहत आयात-निर्यात में आपस में विशेष छूट मिलती है। यह दर्जा प्राप्त देश कारोबार सबसे कम आयात शुल्क पर होता है।
- डब्ल्यूटीओ के सदस्य देश खुले व्यापार और बाजार से बंधे हैं मगर एमएफएन के नियम के तहत देशों को विशेष छूट दी जाती है।
- सीमेंट, चीनी, ऑर्गेनिक केमिकल, रुई, सब्जियों और कुछ चुनिंद फलों के अलावा मिनरल ऑयल, ड्राई फ्रूट्स, स्टील जैसी कमोडिटीज और वस्तुओं का कारोबार दोनों देशों के बीच होता है।
- भारत और पाकिस्तान के बीच वर्ष 2012 के आंकड़े के अनुसार लगभग 2.60 बिलियन डॉलर का व्यापार होता है।

क्या भारत को होगा पाकिस्तान से यह दर्जा छीनने का नुकसान?

- भारत अगर मोस्ट फेवर्ड नेशन (एमएफएन) का दर्जा खत्म करता है तो हो सकता है कि पाकिस्तान अपनी तरफ से भारत के साथ व्यापार ही रोक दे। भारत को ऐसे में घाटा हो सकता है लेकिन आतंकवाद से निपटने और देश की सुरक्षा के मद्देनजर भारत घाटे की कीमत पर भी ऐसा करने को तैयार हो गया है।

स्रोत: द हिंदू

यूरोपियन देशों ने ईरान के साथ व्यापार के लिए पेमेंट चैनल INSTEX की घोषणा की

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में जर्मनी, फ्रांस और इंग्लैंड ने ईरान के साथ एक अलग पेमेंट चैनल बनाने की घोषणा की है। यह पेमेंट चैनल INSTEX के नाम से बनाया गया है जिसका उद्देश्य अमेरिकी प्रतिबंधों को बाईपास करके ईरान के साथ व्यापार जारी रखना है।
- यूरोपियन देशों का कहना है कि उनकी कोशिश अमेरिकी प्रतिबंधों के बावजूद ईरान से कारोबार जारी करने की है। इस पर अमेरिका की ओर से अभी तक कोई विशेष टिप्पणी नहीं की गई है लेकिन उम्मीद लगाई जा रही है कि इससे विश्व में ट्रेड वॉर बढ़ सकती है।

ईरान पेमेंट चैनल के मुख्य बिंदु

- इस पेमेंट चैनल को जर्मनी, फ्रांस और ब्रिटेन ने तैयार किया है। INSTEX का पूरा नाम 'इंस्ट्रुमेंट इन सपोर्ट ऑफ ट्रेड एक्सचेंज' है।
- ईरान पर लगे अमेरिकी प्रतिबंधों के बावजूद इस चैनल के जरिए कारोबारी भुगतान किया जा सकेगा।
- INSTEX का बेस फ्रांस की राजधानी पेरिस में होगा। जर्मनी के बैंकिंग एक्सपर्ट इसका प्रबंधन करेंगे. यूनाइटेड किंगडम सुपरवाइजरी बोर्ड की अगुवाई करेगा।
- यूरोपीय देश शुरू में इस चैनल के माध्यम से ईरान को भोजन, दवाएं और मेडिकल उपकरण बेचेंगे, लेकिन भविष्य में अन्य सेवाओं या उत्पादों को इसमें शामिल किया जा सकता है।
- यह कंपनियों पर निर्भर है कि वे ईरान में काम करना चाहती हैं या नहीं। लेकिन उन्हें भी अमेरिकी प्रतिबंधों के कारण सामने आए जोखिमों का ख्याल करना पड़ रहा है।
- यूरोप की इन कोशिशों को ईरान के साथ 2015 में हुई परमाणु संधि को बचाने की कोशिश के रूप में देखा जा रहा है।

पृष्ठभूमि

- अक्टूबर 2015 में अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस, ब्रिटेन और जर्मनी ने ईरान के साथ समझौता किया था. इसके कुछ महीने बाद ही मई 2018 में अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने स्वयं को समझौते से अलग करने की घोषणा कर दी तथा तेहरान पर पुन: प्रतिबन्ध लगा दिए।
- संधि में शामिल अन्य देशों ने ट्रंप से ऐसा न करने की मांग की थी। अमेरिका के परमाणु समझौते से बाहर निकलने के बावजूद यूरोपीय संघ ने इस समझौते के साथ बने रहने की घोषणा की है।
- यूरोप में ईरानी सत्ता के विरोधियों की हत्या की साजिशों और ओरान मिसाइल टेस्ट के बाद जनवरी 2019 में यूरोपीय संघ ने भी ईरान पर कुछ प्रतिबंध लगाए हैं लेकिन यूरोपियन यूनियन ईरान से संबंध समाप्त करने के पक्ष में नहीं है।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारत और सऊदी अरब के बीच 5 अहम समझौते

चर्चा में क्यों?

☞ भारत और सऊदी अरब के बीच 20 फरवरी 2019 को 5 अहम समझौतों पर हस्ताक्षर हुए. ये समझौते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान के बीच बातचीत के बाद हुए।

☞ इसके अतिरिक्त सऊदी क्राउन प्रिंस ने खुफिया सूचना साझा करने सहित दूसरे क्षेत्रों में भारत के साथ सहयोग करने की बात कही है। सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान 19 फरवरी 2019 को दो दिन की यात्रा पर भारत पहुंचे थे।

भारत और सऊदी अरब के बीच हुए ये समझौते:

- राष्ट्रीय निवेश एवं अवसंरचना कोष में निवेश करने पर भारत सरकार और सऊदी अरब साम्राज्य की सरकार के बीच सहमति पत्र
- पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत के पर्यटन मंत्रालय और सऊदी अरब के पर्यटन आयोग एवं सऊदी अरब साम्राज्य की राष्ट्रीय धरोहर के बीच सहमति पत्र
- आवास के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत सरकार और सऊदी अरब की सरकार के बीच सहमति पत्र
- द्विपक्षीय निवेश संबंध मजबूत करने के लिए भारत के इन्वेस्ट इंडिया और सऊदी अरब साम्राज्य की सऊदी अरबियन जनरल इन्वेस्टमेंट अथॉरिटी के बीच फ्रेमवर्क सहयोग कार्यक्रम
- श्रव्य-दृश्य कार्यक्रम का आदान-प्रदान करने के उद्देश्य से प्रसार भारती, नई दिल्ली, भारत और सऊदी ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन (एसबीसी), सऊदी अरब के बीच प्रसारण संबंधी सहयोग के लिए एमओयू
- सऊदी अरब पक्ष ने अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) से जुड़े फ्रेमवर्क समझौते पर भी हस्ताक्षर किए हैं।

संयुक्त वक्तव्य:

- भारत में 100 अरब डॉलर निवेश के लिए तैयार: भारत और सऊदी अरब ने अपने आर्थिक संबंधों को नई ऊंचाइयों पर ले जाने तथा ऊर्जा संबंधों को खरीददार-विक्रेता से आगे बढ़ाते हुए सामरिक गठजोड़ में तब्दील करने का संकल्प व्यक्त किया है। सऊदी अरब के युवराज मोहम्मद बिन सलमान ने भारत में विभिन्न क्षेत्रों में 100 अरब डॉलर के निवेश करने की घोषणा की।
- भारतीय कैदियों को रिहा करने का फैसला: भारत के दौरे पर आए सऊदी अरब के प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात के बाद अपने देश की जेलों में बंद 850 भारतीय कैदियों को रिहा करने का फैसला किया है।
- भारतीय हज यात्रियों का कोटा बढ़ा: सऊदी अरब ने भारत से जाने वाले हज यात्रियों का कोटा बढ़ा कर दो लाख सालाना करने का फैसला किया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और सऊदी अरब के प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान बिन अब्दुल अजीज अल सऊद के बीच हैदराबाद हाउस में हुई प्रतिनिधिमंडल स्तर की बैठक में सऊदी अरब ने इस आशय की घोषणा की। वर्ष 2018 में भारतीय हज यात्रियों का कोटा एक लाख 75 हजार 25 था।

सऊदी अरब भारत का चौथा सबसे बड़ा कारोबारी पार्टनर:

☞ सऊदी अरब भारत का चौथा सबसे बड़ा कारोबारी साझेदार है। 2017-18 के दौरान दोनों देशों के बीच 1.95 लाख करोड़ का सालाना कारोबार हो रहा था। सऊदी अरब भारत की कुल जरूरत का 17% कच्चा तेल और 32% एलपीजी मुहैया करा रहा है।

स्रोत: पीआईबी

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

आरआईसी मंत्रियों की 16वीं बैठक चीन में संपन्न

चर्चा में क्यों?

☞ रूस, भारत और चीन (Russia, India, China – RIC) के विदेश मंत्रियों की 16वीं बैठक 27 फरवरी 2019 को चीन के झेजियांग प्रांत में संपन्न हुई।

मुख्य तथ्य

- आरआईसी की बैठक इसलिये महत्त्वपूर्ण मानी जाती है क्योंकि रूस, भारत और चीन अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं और दुनिया की घटनाओं को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं।
- इस बैठक में तीनों देशों ने बहुपक्षवाद और संयुक्त राष्ट्र के चार्टर के सिद्धांतों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताई। यह बैठक इसलिए भी महत्वपूर्ण थी क्योंकि इसमें प्रतिनिधियों को शामिल करने, इसे मजबूत बनाने तथा विकासशील देशों के प्रतिनिधित्व को और बढ़ाने के साथ संयुक्त राष्ट्र सहित सुरक्षा परिषद में व्यापक सुधार आदि विषयों पर चर्चा की गई।
- सम्मेलन में विभिन्न क्षेत्रीय मंचों और संगठनों, जैसे- पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन, आसियान क्षेत्रीय मंच, आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक, एशिया-यूरोप बैठक, द कांफ्रेंस ऑन इंटरेक्शन एंड कॉन्फिडेंस बिल्डिंग मेजर्स इन एशिया तथा एशिया को ऑपरेशन डायलॉग के महत्त्व को दोहराया गया।

संयुक्त वकतव्य

- बैठक में आतंकवाद के सभी रूपों और अभिव्यक्तियों की कड़ी निंदा की गई. इसमें अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक नीति को शीघ्र अपनाने का आह्वान किया गया।
- इसमें आतंकवाद के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) के प्रस्तावों को लागू करने का भी आह्वान किया गया।
- आरआईसी की बैठक में इस बात पर भी जोर दिया कि आतंकवादी कृत्यों को अंजाम देने वाले, इसे पोषित करने वाले, उकसाने वाले या समर्थन करने वालों को जवाबदेह ठहराया जाना चाहिये और उन्हें न्याय तंत्र के दायरे में लाया जाना चाहिये।
- नशीले पदार्थों की तस्करी, अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण उपयोग, जैविक तथा रासायनिक हथियारों के निषेध के विरुद्ध कन्वेंशन को अपनाने का भी आह्वान किया गया।
- अफगानिस्तान में एक अफगान-नेतृत्व वाली, अफगान स्वामित्व वाली शांति का आह्वान किया गया, कोरियाई प्रायद्वीप में महत्त्वपूर्ण और सकारात्मक परिवर्तनों का स्वागत किया गया, ईरान-परमाणु समझौते का समर्थन किया गया तथा फिलिस्तीन मुद्दे के निपटारे के लिये दो-राज्य समाधान का समर्थन किया गया गया।
- इसके अतिरिक्त सम्मेलन में यमन, सीरिया और वेनेजुएला में उत्पन्न संकट के राजनयिक और राजनीतिक समाधान निकालने का भी आह्वान किया गया।

स्रोतः द हिंदू

अफगानिस्तान ने चाबहार बंदरगाह के रास्ते निर्यात की पहली खेप भेजी

चर्चा में क्यों?

☞ अफगानिस्तान ने ईरान के चाबहार बंदरगाह से भारत को सामान निर्यात करना शुरू कर दिया है. काबुल से मेवा, टैक्सटाइल्स, कार्पेट और खनिज मिनरल प्रॉडक्ट्स 23 ट्रकों में भरकर चाबहार पोर्ट के लिए रवाना किया। यह खेप वहां से जहाज के जरिये मुंबई पहुंचेगी।

☞ अफगानिस्तान के राष्ट्रपति अशरफ गनी ने निर्यात के लिए नये मार्ग की शुरुआत करते हुए कहा कि व्यापार घाटे को कम करने के लिए धीरे-धीरे निर्यात में सुधार किया जा रहा है। उन्होंने कहा, 'चाबहार पोर्ट भारत, ईरान और अफगानिस्तान के बीच स्वस्थ सहयोग का परिणाम है और यह आर्थिक वृद्धि सुनिश्चत करेगा।'

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

अफगानिस्तान का चाबाहार से निर्यात

- इस खेप में 570 टन ड्राई फ्रूट्स, टैक्सटाइल्स, कार्पेट और मिनरल उत्पाद शामिल हैं जो जहाज के जरिये मुंबई पहुँचेगी।
- अफगानिस्तान द्वारा चाबहार से किया गया निर्यात इसलिये भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे भारत, ईरान तथा अफगानिस्तान के बीच अंतर्राष्ट्रीय परिवहन एवं पारगमन समझौता पूरी तरह से क्रियान्वित हो गया है।
- मई 2016 में इस समझौते पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, ईरान के राष्ट्रपति हसन रुहानी और अफगानिस्तान के राष्ट्रपति अशरफ गनी ने तेहरान में हस्ताक्षर किये थे।
- इससे पूर्व भारत ने भी चाबहार पोर्ट के जरिये अफगानिस्तान को 1.1 मिलियन टन गेहूँ और 2000 टन मसूर की दाल निर्यात किया था।
- दक्षिण एशिया में चीन और पाकिस्तान के रिश्तों के साथ-साथ भारत के लिए अफगानिस्तान और ईरान के साथ बनाये गये संबंध बेहद महत्वपूर्ण हैं।
- इस रास्ते के जरिए अफगानिस्तान और भारत के बीच से पाकिस्तान की बाधा दूर हुई है।
- ईरान का चाबहार बंदरगाह अफगानिस्तान को आसानी से समुद्र तक पहुंच देता है और भारत ने इस रूट को विकसित करने में मदद की है, जो कि दोनों देशों को पाकिस्तान को बाइपास करते हुए व्यापार की सुविधा देता है।

भारत के लिए चाबहार का महत्त्व

- भारत और ईरान दोनों ही देशों के लिए चाबहार परियोजना का बहुत महत्व है। यह ओमान सागर में अवस्थित यह बंदरगाह प्रांत की राजधानी जाहेदान से 645 किलोमीटर दूर है और मध्य एशिया व अफगानिस्तान को सिस्तान-बलूचिस्तान से जोड़ने वाला एक मात्र बंदरगाह है।
- चाबहार भारत के लिये अफगानिस्तान और मध्य एशिया के द्वार खोल सकता है. यह बंदरगाह एशिया, अफ्रीका और यूरोप को जोड़ने के लिहाज से सर्वश्रेष्ठ जगह है। भारत वर्ष 2003 से इस बंदरगाह के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के प्रति अपनी रुचि दिखा रहा है।
- चाबहार गहरे पानी में स्थित बंदरगाह है और यह जमीन के साथ मुख्य भू-भाग से भी जुड़ा हुआ है, जहाँ सामान उतारने-चढ़ाने का कोई शुल्क नहीं लगता। चाबहार बंदरगाह के जरिये अफगानिस्तान को भारत से व्यापार करने के लिये एक और रास्ता मिल जाएगा। विदित हो कि अभी तक पाकिस्तान के रास्ते भारत-अफगानिस्तान के बीच व्यापार होता है।

चाबहार के बारे में

- चाबहार ईरान में सिस्तान और बलूचिस्तान प्रांत का एक शहर है। यह एक मुक्त बन्दरगाह है और ओमान की खाड़ी के किनारे स्थित है। यह ईरान का सबसे दक्षिणी शहर है।
- इस नगर के अधिकांश लोग बलूच हैं और बलूची भाषा बोलते हैं। यहाँ मौसम सामान्य रहता है और हिंद महासागर से गुजरने वाले समुद्री रास्तों तक भी यहाँ से पहुँच बहुत आसान है।
- भारत ने मई 2015 में चाबहार बंदरगाह के विकास के लिए द्विपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किए थे. यह बंदरगाह ईरान के लिए रणनीति की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।
- इसके माध्यम से भारत के लिए समुद्री सड़क मार्ग से अफगानिस्तान पहुँचने का मार्ग प्रशस्त हो जायेगा और इस स्थान तक पहुँचने के लिए पाकिस्तान के रास्ते की आवश्यकता नहीं होगी।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

IP Index में भारत 36वें, पाकिस्तान 47वें स्थान पर

चर्चा में क्यों?

☞ अंतरराष्ट्रीय बौद्धिक संपदा (आईपी) सूचकांक में भारत आठ स्थानों की छलांग के साथ 36वें पायदान पर पहुंच गया। इस सूचकांक में इस साल 50 वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में बौद्धिक संपदा की स्थिति का विश्लेषण किया गया है।

☞ अमेरिकी चौंबर आफ कॉमर्स के वैश्विक नवोन्मेषण नीति केंद्र (जीआईपीसी) द्वारा तैयार वर्ष 2019 के इस सूचकांक में भारत आठ पायदान की छलांग के साथ 36वें स्थान पर पहुंच गया है।

भारत का 2018 में स्थान:

♦ भारत वर्ष 2018 में 44वें स्थान पर था। इसमें शामिल 50 देशों में भारत की स्थिति में सबसे ज्यादा सुधार आया है।

अमेरिका पहले स्थान पर:

♦ इस सूचकांक में अमेरिका पहले, ब्रिटेन दूसरे, स्वीडन तीसरे, फ्रांस चौथे और जर्मनी पांचवें स्थान पर रहा है। ये देश पिछले साल भी इन्हीं स्थानों पर थे।

वेनेजुएला अंतिम स्थान पर:

♦ भारत वर्ष 2017 में इस सूची में 45 देशों में 43वें स्थान पर था. पिछले दो साल से अमेरिकी चैंबर आफ कॉमर्स ने तुलनात्मक अध्ययन वाले देशों की संख्या बढ़ाकर 50 कर दी है। पाकिस्तान इस सूची में 47वें स्थान पर है। वहीं वेनेजुएला इस सूची में अंतिम स्थान पर है।

♦ यह सूचकांक जीआईपीसी ने 45 संकेतकों पर तैयार किया है। इनमें पेटेंट, कॉपीराइट और व्यापार गोपनीयता का संरक्षण आदि शामिल हैं।

भारत का स्कोर:

♦ भारत की स्थिति में यह सुधार भारतीय नीति निर्माताओं द्वारा घरेलू उद्यमियों और विदेशी निवेशकों के लिए समान रूप से एक सतत नवोन्मेषी पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने के प्रयासों को दर्शाता है। मौजूदा संस्करण में भारत का कुल स्कोर उल्लेखनीय रूप से सुधरकर 36.04 प्रतिशत (45 में से 16.22) पर पहुंच गया। पिछले संस्करण में यह 30.07 प्रतिशत (40 में 12.03) था। लगातार दूसरे साल भारत का स्कोर सबसे अधिक सुधरा है।

बौद्धिक संपदा

♦ किसी व्यक्ति अथवा संस्था द्वारा सृजित कोई रचना, संगीत, साहित्यिक कृति, कला, खोज, नाम अथवा डिजाइन आदि, उस व्यक्ति अथवा संस्था की 'बौद्धिक संपदा' कहलाती है।

♦ बौद्धिक संपदा अधिकार व्यक्ति या संस्था को अपनी रचना/आविष्कार पर एक निश्चित अवधि हेतु विशेषाधिकार प्रदान करते हैं.

♦ इन विशेषाधिकारों का विधि द्वारा संरक्षण पेटेंट, कॉपीराइट अथवा ट्रेडमार्क आदि के रूप में किया जाता है। इससे सर्जक खोज तथा नवाचार के लिए उत्साहित और उद्यत रहते हैं और वित्तीय एवं वाणिज्यिक लाभ प्राप्त करते हैं।

♦ अंतर्राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा अधिकार सूचकांक अमेरिकी वाणिज्यिक संगठन 'यूएस चैंबर ऑफ कॉमर्स' द्वारा वर्ष 2007 में स्थापित 'ग्लोबल इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी सेंटर' द्वारा दिसंबर 2012 से जारी किया जा रहा है।

♦ इसका मुख्य उद्देश्य अमेरिका और अन्य प्रमुख देशों में बौद्धिक संपदा अधिकारों का संरक्षण तथा इसके मानदंडों का बचाव और संवर्धन करना है।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

जेनेवा कन्वेंशन

चर्चा में क्यों?

☞ हाल ही में भारत की एक मिग विमान हादसे का शिकार हो गया और उसमें सवार विंग कमांडर 'अभिनंदन वर्तमान' लापता हो गये। पाकिस्तान का दावा था कि भारत का लापता पायलट अभिनंदन वर्तमान पाकिस्तान सेना के कब्जे में है। बाद में भारत और पाकिस्तान में जारी तनाव के बीच करीब 60 घंटे पाक की सरजमीं पर समय बिताकर भारतीय वायुसेना (IAF Pilot) के विंग कमांडर अभिनंदन सुरक्षित वतन लौटे।

जेनेवा कन्वेंशन क्या है?

- अगर लड़ाई में कोई जवान या अधिकारी शत्रु देश की सीमा में दाखिल हो जाता है तो गिरफ्तारी की सूरत में उसे युद्धबंदी माना जाता है। युद्धबंदियों के संबंध में जेनेवा में व्यापक विचार कर कुछ नियम बनाए गए जिसे हम जिनेवा कन्वेंशन के तौर पर जानते हैं।
- इस समझौते के तहत ऐसे किसी युद्धबंदी के साथ अमानवीय बर्ताव नहीं किया जा सकता है। युद्ध बंदी को डराया-धमकाया नहीं जा सकता है। उसे किसी तरह से अपमानित नहीं किया जा सकता है।
- इस संधि के तहत एक विकल्प ये भी है कि युद्ध के समाप्त हो जाने के बाद उन्हें वापस लौटा दिया जाए।
- जेनेवा कन्वेंशन के मुताबिक युद्धबंदियों पर मुकदमा चलाया जा सकता है। कोई भी देश युद्धबंदियों को लेकर जनता में उत्सुकता पैदा नहीं कर सकता। युद्धबंदियों से सिर्फ उनके नाम, सैन्य पद, नंबर और यूनिट के बारे में पूछा जा सकता है।

जेनेवा कन्वेंशन की खास बातें:

- जेनेवा कन्वेंशन के तहत घायल सैनिक की उचित देखरेख की जाएगी।
- इसके तहत उन्हें खाना-पीना और युद्ध की सभी जरूरी चीजें मुहैया कराई जाएगी।
- इस कन्वेंशन के मुताबिक किसी भी युद्धबंदी को प्रताड़ित नहीं किया जा सकता।
- किसी देश का सैनिक जैसे ही पकड़ा जाता है वह इस संधि के तहत आ जाता है।
- जेनेवा कन्वेंशन के मुताबिक उसे डराया-धमकाया नहीं जा सकता।
- इसके तहत युद्धबंदी से उसकी जाति, धर्म, जन्म आदि के बारे में नहीं पूछा जा सकता।

जेनेवा कन्वेंशन कब और क्यों हुआ?

- पहला जेनेवा समझौता वर्ष 1864 में हुआ था. दूसरा समझौता वर्ष 1906 और तीसरा वर्ष 1929 में हुआ. जेनेवा कन्वेंशन पर दूसरे विश्वयुद्ध के बाद वर्ष 1949 में चौथी सहमति बनी। युद्ध के दौरान भी मानवीय मूल्यों को बनाए रखने के लिए जेनेवा समझौता हुआ था।
- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वर्ष 1949 में 194 देशों ने मिलकर चौथी संधि की थी जो कि अब तक लागू है। इसमें युद्धबंदियों के अधिकार तय किये गये हैं। उसके खिलाफ मुकदमा भी इन्हीं नियमों के तहत चलाया जा सकता है। युद्धबंदी को लौटाना भी होता है।
- सामान्य तौर पर दुनिया के ज्यादातर देश जेनेवा कन्वेंशन का सम्मान करते रहे हैं। करगिल लड़ाई के दौरान पायलट नचिकेता को पाकिस्तान ने बंदी बना लिया था। नचिकेता के मामले को जेनेवा संधि के तहत उठाया गया था। तत्कालीन वाजपेयी सरकार ने पाकिस्तान पर अंतरराष्ट्रीय दबाव बनाया और पाकिस्तान सरकार ने नचिकेता को सकुशल स्वदेश वापस छोड़ा।
- भारत ने वर्ष 1971 की लड़ाई में पाकिस्तान के लगभग 93 हजार सैनिकों को युद्धबंदी बना लिया था। जिन्हें बाद में सुरक्षित छोड़ दिया गया था।

स्रोतः द हिंदू , इंडियन एक्सप्रेस

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

दुनिया भर में युद्ध से हर साल 1,00,000 बच्चों की मौत: सेव द चिल्ड्रेन की रिपोर्ट

चर्चा में क्यों?

☞ विश्व के प्रसिद्ध गैर सरकारी संगठन 'सेव द चिल्ड्रन इंटरनेशनल' द्वारा हाल ही में जारी रिपोर्ट में कहा गया कि युद्ध और उसके प्रभाव की वजह से हर साल कम से कम एक लाख बच्चों की मौत हो जाती है। इसमें भूख और मदद ना मिलने जैसे प्रभाव शामिल हैं।

☞ एनजीओ की रिपोर्ट में कहा गया है कि अनुमानत: 10 युद्धग्रस्त देशों में 2013 से 2017 के बीच युद्ध की वजह से 5.5 लाख बच्चे दम तोड़ चुके हैं। संगठन की मुख्य कार्यकारी अधिकारी थोरिंग श्मिट ने एक बयान में कहा, 'हर पांच में से करीब एक बच्चा संकटग्रस्त इलाकों में रह रहा है। बीते दो दशक में यह सबसे बड़ी संख्या है।'

रिपोर्ट के मुख्य बिंदु

- सेव द चिल्ड्रन ने कहा कि उसने ओस्लो स्थित पीस रिसर्च इंस्टिट्यूट के साथ अध्ययन में पाया कि 2017 में 42 करोड़ बच्चे संकटग्रस्त इलाकों में रह रहे थे।
- यह दुनिया भर के बच्चों की संख्या का 18 फीसदी हिस्सा है और बीते साल के मुकाबले इसमें 3 करोड़ बच्चों का इजाफा हुआ है।
- इन संकटग्रस्त इलाकों में अफगानिस्तान, मध्य अफ्रीकी गणराज्य, कांगो, इराक, माली, नाइजीरिया, सोमालिया, दक्षिण सूडान, सीरिया और यमन देश शामिल हैं।
- रिपोर्ट के मुताबिक इन बच्चों की मौत युद्ध और उसके प्रभावों से हुई है, जिसमें भूख, अस्पतालों और बुनियादी ढाचों को हुआ नुकसान, स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच की कमी, स्वच्छता और मदद नहीं मिल पाने जैसे कारण शामिल हैं।
- वर्ष 2017 में करीब 42 करोड़ बच्चे इन क्षेत्रों में रह रहे थे। यह दुनियाभर के बच्चों का 18 प्रतिशत है। वर्ष 2016 के मुकाबले 2017 में इनकी संख्या में तीन करोड़ का इजाफा हुआ था।
- रिपोर्ट के अनुसार युद्ध में घायल हुए और मारे गए बच्चों की संख्या तीन गुना बढ़ी है।
- संस्था की सीईओ थोरिंग श्मिट ने इस पर चिंता जताते हुए कहा, यह शर्मनाक है कि 21 वीं सदी में हम पीछे की तरफ जा रहे हैं और अपनी नैतिकता खो चुके हैं।

सेव द चिल्ड्रेन

- सेव द चिल्ड्रेन विश्व के सबसे पुराने बाल अधिकार संगठनों में से एक है। इसकी स्थापना संयुक्त राष्ट्र से भी पहले वर्ष 1919 में हुई थी। यह भारत में वर्ष 2008 से कार्यरत है। भारत के 18 राज्यों में यह अब तक 6.1 मिलियन बच्चों तक अपनी पहुंच बना चुका है।
- यह एनजीओ बच्चों को आपात स्थिति के दौरान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा, शोषण से सुरक्षा और जीवन रक्षक सहायता प्रदान करने के लिए भारत और शहरी क्षेत्रों के दूरस्थ कोनों में विभिन्न कार्यक्रम चलाता है।
- यह बच्चों के सर्वोत्तम हित के लिए नीतियों में बदलाव लाने के लिए सरकार के साथ मिलकर काम करता है। विश्व स्तर पर, सेव द चिल्ड्रेन 120 देशों में मौजूद है और वहां रहने वाले बच्चों की स्थिति को सुधारने के लिए काम करता है।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारत और अर्जेंटीना के मध्य 10 समझौतों पर हस्ताक्षर

चर्चा में क्यों?

☞ भारत और अर्जेंटीना ने 18 फरवरी 2019 को रक्षा, पर्यटन और कृषि सहित विभिन्न क्षेत्रों में 10 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं।

मुख्य तथ्य

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अर्जेंटीना के राष्ट्रपति मौरेसियो मैक्री के बीच नई दिल्ली में बातचीत के बाद इन समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए।
- दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय संबंधों में प्रगति की समीक्षा की, और सहयोग के नए क्षेत्रों की संभावनाओं पर चर्चा की।

भारत और अर्जेंटीना के मध्य किये गये समझौतों की सूची इस प्रकार है:

- भारत गणराज्य के रक्षा मंत्रालय तथा रक्षा सहयोग पर अर्जेंटीना गणराज्य के रक्षा मंत्रालय के बीच समझौता-ज्ञापन
- पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत गणराज्य और अर्जेंटीना गणराज्य के बीच समझौता-ज्ञापन
- भारत के प्रसार भारती और अर्जेंटीना के मीडिया एवं जनसामग्री की संघीय प्रणाली के बीच सहयोग पर समझौता-ज्ञापन
- भारत के केन्द्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन और अर्जेंटीना के औषधि, खाद्य एवं चिकित्सा प्रौद्योगिकी प्रशासन के बीच समझौता-ज्ञापन
- अर्जेंटीना गणराज्य के विदेशी मामलों के मंत्रालय तथा भारत गणराज्य के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के बीच अंटार्टिक सहयोग पर समझौता-ज्ञापन
- भारत गणराज्य के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय तथा अर्जेंटीना गणराज्य के उत्पादन एवं श्रम मंत्रालय के बीच 2010 में हस्ताक्षरित समझौता-ज्ञापन के आधार पर सहयोग पर कार्य योजना
- 2006 में दोनों देशों के बीच हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन के तहत भारत गणराज्य के भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और अर्जेंटीना गणराज्य के उत्पादकता एवं श्रम मंत्रालय के कृषि उद्योग के राज्य सचिव के बीच वर्ष 2019-21 के लिए कार्य योजना
- भारत गणराज्य के इलैक्ट्रॉनिक और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा अर्जेंटीना गणराज्य के आधुनिकीकरण के सचिव के बीच सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तथा इलेक्ट्रॉनिक्स में सहयोग के इरादे से संयुक्त घोषणा पत्र
- भारत के वैश्विक परमाणु ऊर्जा सहभागिता केन्द्र (जीसीएनईपी) और अर्जेंटीना के ऊर्जा सचिवालय सीएनईए के बीच समझौता-ज्ञापन
- सूचना एवं प्रौद्योगिकी के लिए भारत-अर्जेंटीना उत्कृष्टता केन्द्र की स्थापना के संबंध में समझौता
- भारत और अर्जेंटीना के बीच पिछले 70 वर्षों से पारंपरिक रूप से सौहार्दपूर्ण मैत्री संबंध रहे हैं। दोनों देशों के बीच परमाणु, अंतरिक्ष, आर्थिक, वाणिज्यिक, कृषि, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, संस्कृति और पर्यटन क्षेत्र में व्यापक संबंध हैं।

स्रोत: पीआईबी

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

डोनाल्ड ट्रम्प ने अमेरिका में आपातकाल घोषित किया

चर्चा में क्यों?

☞ अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 16 फरवरी 2019 को राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा की। डोनाल्ड ट्रम्प ने यह घोषणा की कि अवैध आव्रजकों से देश की रक्षा के लिए यह जरूरी कदम है। इस कदम से अमेरिका-मेक्सिको की सीमा पर दीवार निर्माण के लिए संघीय कोष से सरकारी सहायता राशि जारी हो सकती है।

☞ अमेरिकी राष्ट्रपति ने व्हाइट हाउस में संवाददाताओं से कहा कि आपातकाल की घोषणा करने का कदम अवैध आव्रजकों, अपराधियों तथा मादक पदार्थों के तस्करों के धावे से देश को बचाने के लिए जरूरी था।

अमेरिका में आपातकाल क्यों?

- अमेरिका में संसद ही सभी तरह के सरकारी खर्चों के लिए वित्तीय प्रस्तावों को मंजूरी देता है।
- अमेरिकी संसद अमेरिका-मेक्सिको सीमा पर दीवार बनाने के प्रस्ताव का विरोध कर रहा है। इस कारण ट्रंप और संसद में टकराव चल रहा है।
- इसलिए सरकारी खजाने का इस्तेमाल करने के लिए राष्ट्रपति ने अपनी शक्तियों का उपयोग करते हुए राष्ट्रीय आपातकाल घोषित किया है।
- इससे ट्रम्प अब मनचाहे तरीके से मेक्सिको की सीमा पर दीवार बनाने के लिए सरकारी खजाने का उपयोग कर सकेंगे।
- गौरतलब है कि करीब 200 मील लंबी इस दीवार के निर्माण के लिए ट्रंप ने अमेरिकी संसद से 5 बिलियन डॉलर की मांग की थी।
- संसद से उन्हें सिर्फ 1.3 बिलियन डॉलर का ही फंड मिला था। इससे ट्रंप नाखुश थे।

अमेरिका में पहले भी लगा है आपातकाल

- वर्ष 1976 में पारित किया गया एक कानून राष्ट्रपति को राष्ट्रीय आपातकाल घोषित करने का अधिकार देता है।
- ट्रंप से पहले भी कई राष्ट्रपति राष्ट्रीय आपातकाल लगा चुके हैं। वर्ष 2009 में स्वाइन फ्लू के प्रकोप के दौरान बराक ओबामा और 9/11 हमले के बाद जॉर्ज डब्ल्यू बुश ने राष्ट्रीय आपातकाल घोषित किया था।
- अभी तक अमेरिका में 31 बार राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा की जा चुकी है।
- आपातकाल के दौरान राष्ट्रपति उन विशिष्ट शक्तियों का उपयोग कर सकते हैं, जो अमेरिकी संसद के कानून के दायरे में होंगे।

राष्ट्रीय आपातकाल अधिनियम-1976

- अमेरिका का राष्ट्रीय आपातकालीन कानून 14 सितंबर 1976 को लागू किया गया था. इसके तहत राष्ट्रपति को विभिन्न आपातकालीन शक्तियां दी गई हैं।
- यह अधिनियम राष्ट्रपति को संकट के दौरान विशेष शक्तियों का प्रयोग करने का अधिकार देता है लेकिन ऐसी शक्तियों को लागू करते समय कुछ प्रक्रियात्मक औपचारिकताओं को भी पूरा करने का निर्देश जारी करता है।
- अमेरिकी राष्ट्रपति के पास राष्ट्रीय आपातकाल की स्थिति घोषित करने का अधिकार है, जिसमें देश को बड़े पैमाने पर आपदा या खतरे का सामना करने की स्थिति के दौरान लागू किया जा सकता है।
- जबकि, यदि आपातकाल कांग्रेस द्वारा लागू किया जाता है तो राष्ट्रपति को लगभग 136 अलग-अलग वैधानिक आपातकालीन शक्तियां सौंप दी जाती हैं।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

- इनमें केवल 13 को कांग्रेस से सहमति की आवश्यकता है; शेष 123 को कांग्रेस से सहमति के बिना भी राष्ट्रपति जारी कर सकता है।
- राष्ट्रपति द्वारा आपातकालीन शक्तियों का दुरुपयोग करने पर हाउस ऑफ रिप्रेजेन्टेटिव्स द्वारा महाभियोग चलाकर उसे पद से हटाया भी जा सकता है। अब तक ऐसा रिचर्ड निक्सन और बिल क्लिंटन के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव लाया गया था लेकिन दोनों को सीनेट से क्लीन चिट मिल गई थी।
- माना जा रहा है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प कई क्षेत्रों से दीवार बनाने के लिए फंड इकट्ठा कर सकते हैं। व्हाइट हाउस के अधिकारियों के मुताबिक, ट्रेजरी फॉरेस्ट फंड से लगभग 600 मिलियन डॉलर, रक्षा विभाग की दवा-विरोधी गतिविधियों से 2.5 बिलियन डॉलर और अन्य सैन्य निर्माण खातों से 3.6 बिलियन डॉलर फंड इकट्ठा किया जाएगा। आपदा राहत फंड में ट्रंप कोई कटौती नहीं करेंगे।

स्रोतः द हिंदू

भारत और पाकिस्तान के बीच सिंधु जल संधिः भारत में वर्तमान स्थिति

चर्चा में क्यों?

- ☞ केंद्र सरकार ने 21 फरवरी 2019 को सिंधु जल समझौते के बावजूद अब तक पाक को दिए जा रहे ब्यास, रावी और सतलुज नदी के पानी को रोकने का फैसला किया है। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा है कि इन तीनों नदियों पर बने प्रॉजेक्ट्स की मदद से पाकिस्तान को दिए जा रहे पानी को अब पंजाब और जम्मू-कश्मीर की नदियों में प्रवाहित किया जाएगा।
- ☞ केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा है कि रावी, ब्यास और सतलुज नदी का भारत के हिस्से का पानी पाकिस्तान ना जाए इसलिए कैबिनेट ने तीन बांध बनाने की मंजूरी दी है। यह फैसला जम्मू-कश्मीर के पुलवामा में हुए विनाशकारी आतंकी हमले की प्रतिक्रिया के रूप में आया, जिसमें 44 से अधिक भारतीय जवान शहीद हो गए।

सिंधु बेसिन प्रणालीः

- सिधुं प्रणाली में मुख्यत सिधुं, झेलम, चेनाब,रावी, ब्यास और सतलुज नदियां शामिल हैं. इन नदियों के बहाव वाले क्षेत्र (बेसिन) को मुख्यत भारत और पाकिस्तान साझा करते हैं। इसका एक बहुत छोटा हिस्सा चीन और अफगानिस्तान को भी मिला हुआ है। भारत और पाकिस्तान के बीच 1960 में हुई सिंधु नदी जल संधि के तहत सिंधु नदी की सहायक नदियों को पूर्वी और पश्चिमी नदियों में विभाजित किया गया।
- सतलज, ब्यास और रावी नदियों को पूर्वी नदी बताया गया जबकि झेलम, चेनाब और सिंधु को पश्चिमी नदी बताया गया। रावी, सतलुज और ब्यास जैसी पूर्वी नदियों का औसत 33 मिलियन (एमएएफ) पूरी तरह इस्तेमाल के लिए भारत को दे दिया गया। इसके साथ ही पश्चिम नदियों सिंधु, झेलम और चेनाव नदियों का करीब 135 एमएएफ पाकिस्तान को दिया गया।

सिंधु जल संधि

- सिंधु जल संधि, सिंधु एवं इसके सहायक नदियों के जल के अधिकतम उपयोग के लिए भारत सरकार और पाकिस्तान सरकार के बीच की गई संधि है। भारत और पाकिस्तान के बीच वर्ष 1960 में सिंधु जल संधि हुई थी। विश्व बैंक की मध्यस्थता के बाद देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू और पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान ने इस पर हस्ताक्षर किए थे। संधि के तहत 6 नदियों के पानी का बंटवारा तय हुआ, जो भारत से पाकिस्तान जाती हैं. इस समझौते के प्रावधानों के अनुसार दोनों पक्षों को प्रत्येक तीन महीने में नदी के प्रवाह से संबंधित जानकारी और हर साल कृषि उपयोग से संबंधित जानकारी का आदान प्रदान करना आवश्यक है। इस संधि के तहत भारत और पाकिस्तान दोनों देशों ने सिंधु जल आयुक्त के रूप में एक स्थायी पद का गठन किया है। इसके अलावा दोनों देशों ने एक स्थायी सिंधु आयोग (पीआईसी) का गठन किया है जो संधि के कार्यान्वयन के लिए नीतियां बनाता है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

सिंधु जल संधि के तहत चल रही परियोजनाएँ:

- जल संधि के तहत जिन पूर्वी नदियों के पानी के इस्तेमाल का अधिकार भारत को मिला था उसका उपयोग करते हुए भारत ने सतलुज पर भांखड़ा बांध, ब्यास नदी पर पोंग और पंदु बांध और रावी नदी पर रंजित सागर बांध का निर्माण किया।
- इसके अलावा भारत ने इन नदियों के पानी के बेहतर इस्तेमाल के लिए ब्यास-सतलुज लिंक, इंदिरा गांधी नहर और माधोपुर-ब्यास लिंक जैसी अन्य परियोजनाएं भी बनाई। इससे भारत को पूर्वी नदियों का करीब 95 प्रतिशत पानी का इस्तेमाल करने में मदद मिली। हालांकि इसके बावजूद रावी नदी का करीब 2 एमएएफ पानी हर साल बिना इस्तेमाल के पाकिस्तान की ओर चला जाता है।

इस पानी के प्रवाह को रोकने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं:

शाहपुरखांडी परियोजना का निर्माण कार्य फिर से शुरू करना:

- इस परियोजना से थेन बांध के पावर हाउस से निकलने वाले पानी का इस्तेमाल जम्मू कश्मीर और पंजाब में 37000 हेक्टर भूमि की सिंचाई तथा 206 मेगावाट बिजली के उत्पादन के लिए किया जा सकेगा।
- यह परियोजना सितंबर 2016 में ही पूरी हो जानी थी लेकिन जम्मू कश्मीर और पंजाब के बीच विवाद हो जाने के कारण 30 अगस्त 2014 से ही इसका काम रूका पड़ा है। दोनों राज्यों के बीच आखिरकार इसे लेकर 8 सितंबर 2018 को समझौता हो गया।
- परियोजना के निर्माण पर कुल 2715.7 करोड़ रुपये की लागत आएगी। भारत सरकार ने 19 दिसंबर 2018 को जारी आदेश के तहत परियोजना के लिए 485.38 करोड़ रुपये की केंद्रीय मदद मंजूर की है।

ə/ यह राशि परियोजना के सिंचाई वाले हिस्से के लिए होगी। केंद्र सरकार की देखरेख में पंजाब सरकार ने परियोजना का काम फिर से शुरू कर दिया है।

उझ बहुउद्देश्यीय परियोजना:

- 5850 करोड़ रुपये की लागत वाली इस परियोजना से उझ नदी पर 781 मिलियन सीयू एम जल का भंडारण किया जा सकेगा जिसका इस्तेमाल सिंचाई और बिजली बनाने में होगा।
- इस पानी से जम्मू कश्मीर के कठुआ, हिरानगर और सांभा जिलें में 31 हजार 380 हेक्टर भूमि की सिंचाई की जा सकेगी और उन्हें पीने के पानी की आपूर्ति हो सकेगी।
- परियोजना के डीपीआर को तकनीकी मंजूरी जुलाई 2017 में ही दी जा जुकी है। यह एक राष्ट्रीय परियोजना है जिसे केंद्र की ओर से 4892.47 करोड़ रुपये की मदद दी जा रही है।
- ये मदद परियोजना के सिंचाई से जुड़े हिस्से के लिए होगी। इसके अलावा परियोजना के लिए विशेष मदद पर भी विचार किया जा रहा है।

उझ के नीचे दूसरी रावी ब्यास लिंक परियोजना:

- इस परियोजना का उद्देश्य थेन बांध के निर्माण के बावजूद रावी से पाकिस्तान की ओर जाने वाले अतिरिक्त पानी को रोकना है।
- इसके लिए रावी नदी पर एक बराज बनाया जाएगा और ब्यास बेसिन से जुड़े एक टनल के जरिए नदी के पानी के बहाव को दूसरी ओर मोड़ा जाएगा।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारत और दक्षिण कोरिया के बीच वैश्विक अपराध से लड़ने समेत सात समझौतों पर हस्ताक्षर

चर्चा में क्यों?

☞ भारत और दक्षिण कोरिया ने 22 फरवरी 2019 को वैश्विक अपराध से लड़ने समेत सात समझौतों पर हस्ताक्षर किये। दोनों पक्षों ने आधारभूत ढांचे के विकास, मीडिया, स्टार्टअप्स, सीमा पार और अंतरराष्ट्रीय अपराध से निपटने जैसे अहम क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के लिए सात समझौतों पर हस्ताक्षर किए।

☞ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दक्षिण कोरिया के साथ कूटनीतिक संबंधों को मजबूत करने के लिए दो दिवसीय दौरे पर यहां 21 फरवरी 2019 को पहुंचे हैं। प्रधानमंत्री का 'द ब्लू हाउस' में आधिकारिक स्वागत किया गया। यह सियोल में राष्ट्रपति मून जेइ इन का कार्यकारी कार्यालय तथा आधिकारिक आवास है।

मुख्य बिंदु:

- दोनों नेताओं के बीच व्यापार, निवेश, रक्षा तथा सुरक्षा जैसे अनेक क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने पर रचनात्मक बातचीत के बाद समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुए।
- दोनों पक्षों ने निवेश, मीडिया, सड़क एवं परिवहन के क्षेत्र में ढांचागत विकास जैसे अनेक अहम क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर हस्ताक्षर किए है।
- दोनों नेताओं ने वर्ष 2010 से प्रभावी मुक्त व्यापार समझौते यानी व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (सीपा) को बढ़ाने के लिए वार्ता को गति देने पर सहमति व्यक्त की है। सीपा के तहत बाजार उदारीकरण पर जोर देने के लिए अबतक सात दौर की बातचीत हो चुकी है।
- दोनों नेताओं ने वर्ष 2030 तक व्यापार को दोगुना करके इसे 50 अरब डॉलर तक के अपने साझा लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सहयोग करने का भी आश्वासन दिया।
- पहला समझौता कोरियाई राष्ट्रीय पुलिस एजेंसी तथा गृह मंत्रालय के बीच हुआ। यह समझौता दोनों देशों में कानून लागू करने वाली एजेंसियों के बीच सहयोग बढ़ाने तथा सीमा पार और अंतरराष्ट्रीय अपराधों से निपटने के क्षेत्र में किया गया है।
- दूसरा समझौता राजकुमारी सूरीरत्ना (रानी हूर ह्वांग-ओक) की याद में संयुक्त टिकट जारी करने के लिए हुआ। वह अयोध्या की राजकुमारी थीं, जो कोरिया आई थीं और फिर उन्होंने किंग किम सूरो से विवाह कर लिया था। बड़ी संख्या में कोरियाई लोग उनके वंशज होने का दावा करते हैं।
- मोदी, राष्ट्रपति मून जेइ इन के आमंत्रण पर दक्षिण कोरिया आए। वर्ष 2015 के बाद से प्रधानमंत्री मोदी की कोरिया गणराज्य की यह दूसरी यात्रा है और राष्ट्रपति मून जेइ इन के साथ यह उनकी दूसरी शिखर बैठक है।

भारत-दक्षिण कोरिया संबंध:

- भारत और दक्षिण कोरिया के बीच व्यापारिक और आर्थिक संबंधों के अलावा सामरिक संबंधों में ऐसा बदलाव देखा गया जो ऐतिहासिक कहा जा सकता है। दक्षिण कोरिया ने भारत को अपना 'विशेष रणनीतिक साझेदार' घोषित किया। वहीं इस बीच उसने भारत का दर्जा बढ़ाते हुए उसे अपने उन पारंपरिक सहयोगियों की सूची में भी शामिल किया जिनमें केवल रूस, चीन, जापान और अमेरिका जैसे कुछ गिने-चुने देश ही हैं।
- दक्षिण कोरिया ने भारत में बुनियादी ढांचा विकास के लिए बड़ी आर्थिक मदद दी हैं। उसने स्मार्ट सिटी, सागरमाला जैसी योजनाओं के साथ ही बुनियादी ढांचा क्षेत्र से जुड़ी करीब आधा दर्जन परियोनाओं के लिए 10 अरब डॉलर से ज्यादा की मदद दी।
- भारत ने नवंबर 2018 में कोरियाई राष्ट्रपति की पत्नी को अपने यहां आमंत्रित किया था. वे दीपावली के मौके पर बनारस और अयोध्या में आयोजित कई कार्यक्रमों में बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुई थीं। दक्षिण कोरिया की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से निर्यात पर आधारित है. उसके सबसे बड़े निर्यातक देश चीन, अमेरिका और रूस हैं।
- भारत और दक्षिण कोरिया के बीच वर्ष 2017 के अंत तक द्विपक्षीय व्यापार 20 अरब डॉलर से ज्यादा हो चुका था, जो वर्ष 2015 और वर्ष 2016 में 16 अरब डॉलर के आसपास था। दोनों देशों ने बीते साल द्विपक्षीय व्यापार को 2030 तक 50 अरब डॉलर तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा है।

स्रोत: पीआईबी, द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारत और मोरक्को आतंकवाद का मुकाबला करने हेतु संयुक्त कार्यसमूह गठित करने पर सहमत

चर्चा में क्यों?

- भारत के विदेश मंत्री सुषमा स्वराज और मोरक्को के विदेश मंत्री नासेर बौरिटा के बीच मोरक्को की राजधानी रबात में प्रतिनिधि मंडल स्तर की वार्ता के बाद चार सहमति पत्रों पर हस्ताक्षर किए गये।
- विदेश मंत्री सुषमा स्वराज और मोरक्को के विदेश मंत्री ने रक्षा और सुरक्षा, आतंकवाद और व्यापार तथा निवेश सहित कई क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की।

मुख्य तथ्य:

- भारत और मोरक्को ने आतंकवाद से लड़ने के लिए संयुक्त कार्य समूह के गठन पर भी सहमत हुए जिसमें सीमा पार से आतंकवाद, आतंकी वित्त पोषण और आतंकवादियों की भर्ती से निपटना शामिल है।
- यह संयुक्त कार्यदल सीमापार आतंकवाद, आतंकवादियों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने वाले नेटवर्क की पहचान और उसके खिलाफ कार्रवाई, आतंकी संगठनों द्वारा युवाओं की बड़े पैमाने पर भर्ती जैसे विषयों पर काम करेगा।
- इस संयुक्त कार्य समूह की स्थापना होने पर आंतकवादी हमले से संबंधित मामले को सुलझाने में मदद मिलेगी. आंतकवादी गतिविधि यों के बारे में सूचना प्राप्त करने अथवा उसके आदान-प्रदान में यह समझौता एक आधार के रूप में काम करेगा।
- भारत के विदेश मंत्री सुषमा स्वराज बुल्गारिया मोरक्को और स्पेन तीन देशों की चार दिवसीय यात्रा पर हैं. इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य तीनों देशों के साथ भारत के संबंधों के मजबूत करना है. विदेश मंत्री सुषमा स्वराज की ये पहली मोरक्को यात्रा है.

चार समझौतों पर हस्ताक्षर:

- इन चार समझौतों में आतंकवाद से मुकाबले पर संयुक्त कार्य समूह का गठन, आवास और मानवीय बसावट, व्यापारिक वीजा जारी करने के लिए प्रक्रियाओं को सुविधाजनक बनाना शामिल है।

  विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने कहा की भारत कई दशकों से सीमा पार आतंकवाद का शिकार रहा है, इसलिए मोरक्को के साथ काउंटर टेरेरिज्म के विषय पर हुआ समझौता हमारे लिए बहुत अहमियत रखता है। उन्होंने कहा की इसी तरह व्यावसायिक वीजा को आसान करने वाला समझौता हम दोनों देशों के मध्य व्यापार बढ़ाने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा। भारत-मोरक्को के साथ बहुआयामी साझेदारी को काफी महत्व देता है।

स्रोत: पीआईबी

अबू धाबी में हिंदी बनी न्यायालय की तीसरी आधिकारिक भाषा

चर्चा में क्यों?

- संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) की राजधानी अबू धाबी में न्यायालय में इस्तेमाल के लिए अंग्रेजी और अरबी के अलावा हिंदी तीसरी आधिकारिक भाषा बन गई है। न्याय तक पहुंच बढ़ाने के लिहाज से यह कदम उठाया गया है।

उद्देश्य:

- इस कदम से हिंदी भाषियों को मुकदमे की प्रक्रिया, अपने अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में जानने में मदद मिलेगी।

मुख्य तथ्य

- सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, संयुक्त अरब अमीरात की आबादी का करीब दो तिहाई हिस्सा विदेशों के प्रवासी लोग हैं।
- संयुक्त अरब अमीरात में भारतीय लोगों की संख्या 26 लाख है जो देश की कुल आबादी का 30 फीसदी है और यह देश का सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय है।
- हिंदी भाषियों को अबू धाबी न्यायिक विभाग की आधिकारिक वेबसाइट के जरिए रजिस्ट्रेशन की सुविधा भी उपलब्ध कराई जा रही है।
- एडीजेडी के अवर सचिव युसूफ सईद अल अब्री ने कहा कि दावा शीट, शिकायतों और अनुरोधों के लिए बहुभाषा लागू करने का मकसद प्लान 2021 की तर्ज पर न्यायिक सेवाओं को बढ़ावा देना और मुकदमे की प्रक्रिया में पारदर्शिता बढ़ाना है।
- द्विभाषी कानूनी व्यवस्था का पहला चरण नवंबर 2018 में लॉन्च किया गया था, इसके तहत सिविल और वाणिज्यिक मामलों में अगर वादी विदेशी हो तो अभियोगी केस के दस्तावेजों का अंग्रेजी में अनुवाद करना होता है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

दुनिया में ऐसे कई देश हैं, जहां हिंदी को काफी मान-सम्मान दिया गया है:

- फिजी में सरकारी कामकाज के लिए चार भाषाओं का उपयोग किया जाता है, उनमें हिंदी का नाम भी शामिल है। बता दें कि फिजी में भारतीयों की संख्या करीब 3 लाख से अधिक है और यह आकड़ा देश की कुल आबादी का 33 फीसदी है।
- भारत के अलावा नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, त्रिनिदाद एंड टोबैगो, सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका और मॉरिशस में हिंदी बोली जाती है। हालांकि, यह भाषा यहां के सरकारी कामकाज के लिए उपयोग नहीं किया जाता है।
- भारत के अलावा अमेरिका, रूस और जापान समेत विश्व के 40 देशों के 600 से भी ज्यादा यूनिवर्सिटीज और कॉलेजों में हिंदी पढ़ाई जाती है।
- प्रतिवर्ष विश्वभर में 'हिंदी दिवस' 14 सितंबर को मनाया जाता हैं। हिंदी भाषा जिसे ना सिर्फ इसे जानने वाले पसंद करते हैं बल्कि विदेशी भी इस भाषा से खासा लगाव रखते हैं। हिंदी भाषा को ऐसी कड़ी माना जाता है जो भारत को किसी भी देश के साथ आसानी से जोड़ने का काम करती है। गौरतलब है कि 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला था उसी समय से प्रत्येक वर्ष यह दिन 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

स्रोत: द हिंदू

मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फतह अल-सीसी अफ्रीकी संघ के अध्यक्ष नियुक्त

चर्चा में क्यों?

- मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फतह अल-सीसी को हाल ही में अफ्रीकी संघ (African Union) का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। इथियोपिया में आयोजित अफ्रीकी संघ के शिखर सम्मेलन में अल-सीसी को संघ का अध्यक्ष चुना गया है।
- उनसे पूर्व पहले रवांडा के राष्ट्रपति पॉल कागामे अफ्रीकी संघ के अध्यक्ष पद पर आसीन थे। यह कयास लगाया जा रहा है कि मिस्र के राष्ट्रपति महाद्वीप में चल रहे सशस्त्र संघर्ष को समाप्त करने के लिए कार्य कर सकते हैं। गौरतलब है कि वर्ष 2002 में अफ्रीकी संघ की स्थापना के बाद मिस्र को पहली बार अध्यक्ष पद प्राप्त हुआ है।

अफ्रीकी संघ (African Union)

- अफ्रीकी संघ (AU) एक महाद्वीपीय संघ है, जिसमें अफ्रीका महाद्वीप के 55 देश शामिल हैं, जिसमें अफ्रीका में स्थित यूरोपीय संपत्ति के विभिन्न क्षेत्र हैं।
- इस ब्लॉक की स्थापना 26 मई 2001 को अदीस अबाबा, इथियोपिया में हुई थी और 09 जुलाई 2002 को दक्षिण अफ्रीका में लॉन्च किया गया था।
- अफरीकी संघ का इरादा 32 सांकेतिक सरकारों द्वारा अदीस अबाबा में स्थापित अफ्रीकन यूनिटी (OAU) के संगठन की जगह लेना है।
- अफरीकी संघ के सबसे महत्वपूर्ण फैसले अफ्रीकी संघ की विधानसभा द्वारा किए जाते हैं, जो इसके सदस्य राज्यों के राज्य और सरकार के प्रमुखों की एक अर्द्ध वार्षिक बैठक है।
- अफ्रीकी संघ का सचिवालय, अफ्रीकी संघ आयोग, अदीस अबाबा में स्थित है।
- इसका उद्देश्य अफ्रीकी देशों के बीच एकता को मजबूत करना है।
- इसकी अधिकारिक भाषाएँ अरबी, फ्रांसिसी, अंग्रेजी, पुर्तगाली, सोमाली, स्पेनिश, स्वाहिली तथा अफ्रीकी भाषाएँ हैं।

अफ्रीकी संघ के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं-

- सदस्य देशों के बीच एकता को मजबूत करना।
- सदस्य देशों की संप्रभुता तथा क्षेत्रीय अखंडता तथा स्वतंत्रता की सुरक्षा करना।
- महाद्वीप में राजनीती, सामाजिक तथा आर्थिक को बढ़ावा देना।
- अफ्रीकी महाद्वीप तथा लोगों के हितों की सुरक्षा करना।
- अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना।
- महाद्वीप में शांति, सुरक्षा तथा स्थायित्व को बढ़ावा देना।
- लोकतंत्र तथा सुशासन को बढ़ावा देना।

स्रोत: द हिंदू

भारतीय अर्थव्यवस्था एवं आर्थिक विकास

बजट 2019: विजन-2030

चर्चा में क्यों?

☞ कार्यकारी वित्त मंत्री पीयूष गोयल ने वर्ष 2019-20 का अंतरिम बजट पेश किया। इस बजट में जहां 5 लाख रुपये तक टैक्स में छूट दी गई वहीँ गरीब किसानों को प्रतिवर्ष 6,000 रुपये सहायता राशि भी दिए जाने की घोषणा की गई। रक्षा बजट पहली बार तीन लाख करोड़ रुपये का किया गया जबकि हादसे की स्थिति में EPFO बीमा 6 लाख रुपये का किये जाने की घोषणाएं की गई।

☞ वित्त मंत्री द्वारा की गई विभिन्न घोषणाओं के बीच वित्त मंत्री द्वारा पेश किये गये विजन 2030 पर भी ध्यान दिया जाना आवश्यक है। विजन-2030 के तहत वित्त मंत्री ने 10 आयामों के तहत विकास कार्यों और जनहित में उठाये जाने वाले कदमों को चिन्हित किया।

'विजन-2030' के 10 आयाम

1. ईज ऑफ लिविंग (Ease of Living): वित्त मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि सड़क, रेलवे, बंदरगाह, हवाईअड्डे और अंतर्देशीय जलमार्ग सहित सभी क्षेत्रों में अगली पीढ़ी के बुनियादी ढांचे का निर्माण करना "ईज ऑफ लिविंग" (जीवन जीने में आसानी) प्रदान करने वाला पहला आयाम है। देश में इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण किया जायेगा ताकि लोगों का जीवनयापन आसान हो सके।

2. डिजिटल इंडिया (Digital India): कार्यकारी वित्त मंत्री ने बजट भाषण के दौरान कहा कि भारत डिजिटल क्रांति की दौर से गुजर रहा है। इस पहल के तहत अगले पांच सालों में एक लाख डिजिटल गांव बनाये जाने का प्रस्ताव रखा गया है तथा यह भी बताया गया कि पिछले पांच सालों में मोबाइल डेटा का उपयोग 50% बढ़ा है।

3. क्लीन एंड ग्रीन इंडिया (Clean and Green India): पीयूष गोयल ने अपने बजट भाषण में कहा कि भारत को स्वच्छ और हरित बनाया जायेगा जिसके अंतर्गत देश में इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ाया जायेगा। अक्षय उर्जा को देश में उर्जा का मुख्य स्रोत बनाया जायेगा। आयात पर निर्भरता को कम किया जायेगा तथा देश की उर्जा आवश्यकताओं को भी पूरा किया जायेगा।

4. ग्रामीण औद्योगीकरण (Rural Industrialisation): पीयूष गोयल द्वारा पेश किये गये विजन 2030 में चौथे स्थान पर ग्रामीण औद्योगीकरण को रखा गया है। इसके तहत 'मेक इन इंडिया' योजना से सूक्ष्म, लघु और मध्यम स्टार्टअप तथा ग्रामीण पृष्ठभूमि में स्थापित औद्योगिक इकाईयों की मॉडर्न टेक्नोलॉजी से सहायता की जाएगी।

5. **स्वच्छ नदियां (Clean Rivers) :** अंतरिम बजट पेश करते हुए पीयूष गोयल ने विजन 2030 के पांचवें आयाम के तहत स्वच्छ नदियों की बात भी कही. कार्यकारी वित्त मंत्री के अनुसार वर्ष 2030 तक स्वच्छ नदियों के साथ-साथ सभी को सुरक्षित पेयजल, माइक्रो सिंचाई तकनीक द्वारा पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित कराना तथा गंगा को स्वच्छ बनाना इस पहल में शामिल होंगे।

6. **समुद्र एवं तटीय क्षेत्र (Oceans and Coastlines) :** विजन 2030 के छठे आयाम के तहत कार्यकारी वित्त मंत्री पीयूष गोयल ने स्पष्ट किया कि भारत के तटीय क्षेत्रों और समुद्री क्षेत्रों को स्वच्छ, सुरक्षित और पर्यटकों के लिए आकर्षक स्थलों के रूप में विकसित किया जाएगा। भारत को सभी ओर से विकास की दिशा देने के लिए यह महत्वपूर्ण कदम होगा।

7. **अंतरिक्ष क्षेत्र (Space Sector) :** पीयूष गोयल ने बजट भाषण में कहा कि भारत अंतरिक्ष क्षेत्र में विभिन्न कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। इसी दिशा में आगे कदम बढ़ाते हुए वर्ष 2022 तक मानवयान को अंतरिक्ष में भेजने और गगनयान को सफलतापूर्वक लॉन्च किया जाना सुनिश्चित किया जायेगा।

8. **खाद्य गुणवत्ता एवं उत्पादकता (Food quality and productivity improvement) :** कार्यकारी वित्त मंत्री के अनुसार विजन इंडिया 2030 को हासिल करने के लिए देश में मौजूद खाद्य उत्पाद और कृषि उत्पाद की गुणवत्ता को निखारना आवश्यक है। इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक कदम उठाये जायेंगे तथा आर्गेनिक खाद्य पदार्थों के उत्पादन को बढ़ावा दिया जायेगा।

9. **स्वस्थ भारत (Healthy India) :** विजन 2030 के नौंवें बिंदु के तहत स्वस्थ भारत को बताया गया। पीयूष गोयल ने आयुष्मान योजना तथा जन आरोग्य योजना के लाभ भी गिनाये। वित्त मंत्री ने अनुसार वर्ष 2030 तक संकट मुक्त और सभी के लिए व्यापक कल्याणकारी नीतियों की सुगम उपलब्धता मुहैया कराई जाएगी।

10. **मिनिमम गवर्नमेंट, मैक्सिमम गवर्नेंस (Minimum Government Maximum Governance) :** वित्त मंत्री का कहना है कि वे अपनी सरकार के मिनिमम गवर्नमेंट, मैक्सिमम गवर्नेंस के वादे पर कायम हैं तथा देश के अंतिम व्यक्ति तक सरकारी नीतियों का लाभ पहुंचाने के लिए इसे आवश्यक समझते हैं।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

अंतरिम बजट क्या होता है?

- अंतरिम बजट चुनावी वर्ष में एक प्रकार की आर्थिक व्यवस्था है जिसके तहत सरकार बनने तक सरकारी खर्चों का इंतजाम करने की औपचारिकता पूरी की जाती है।
- नई सरकार बनाने के लिए जो समय होता है, उस अवधि के लिए अंतरिम बजट संसद में पेश किया जाता है।
- इस बजट में कोई भी ऐसा फैसला नहीं किया जाता है जिसमें ऐसे नीतिगत फैसले हों जिसके लिए संसद की मंजूरी लेनी पड़े या फिर कानून में संशोधन की जरूरत हो।

स्रोत: पीआईबी , बिजनेस स्टैंडर्ड

भारतीय रिजर्व बैंक ने मौद्रिक नीति समीक्षा जारी की

चर्चा में क्यों?

☞ भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने 07 फरवरी 2019 को छठी द्विमासिक मौद्रिक नीति समीक्षा पेश की है। आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास की अध्यक्षता में यह तीन दिवसीय बैठक 05 फरवरी को शुरू हो गई थी और इस पर 07 फरवरी 2019 को फैसला लिया गया है। तीन दिवसीय इस बैठक में आरबीआई ने नीतिगत ब्याज दरों पर भी निर्णय लिया है।

मुख्य तथ्य

- नीतिगत ब्याज दर (रेपो) 6.50 प्रतिशत से घटाकर 6.25 प्रतिशत की गई।
- रिवर्स रेपो दर भी इसी अनुपात में कम होकर 6 प्रतिशत रह गई।
- बैंक दर, सीमांत स्थायी दर 6.5 प्रतिशत रही।
- नकद आरक्षित अनुपात 4 प्रतिशत पर बरकरार है।
- मार्च तिमाही के लिये मुख्य मुद्रास्फीति (हेडलाइन) अनुमान को कम कर 2.8 प्रतिशत किया गया है।
- अगले वित्त वर्ष की पहली छमाही में मुद्रास्फीति 3.2 से 3.4 प्रतिशत तथा तीसरी तिमाही में 3.9 प्रतिशत रहने का अनुमान।
- जीडीपी वृद्धि दर अगले वित्त वर्ष में बढ़कर 7.4 प्रतिशत रहने का अनुमान जो 2018-19 में 7.2 प्रतिशत रहने का अनुमान है।
- वित्त वर्ष 2019-20 में अप्रैल-सितंबर के दौरान वृद्धि दर 7.2 से 7.4 प्रतिशत तथा तीसरी तिमाही में 7.5 प्रतिशत रहने का अनुमान।
- तेल कीमत परिदृश्य अस्पष्ट, व्यापार तनाव का वैश्विक वृद्धि संभावना पर होगा असर।
- केंद्रीय बजट प्रस्तावों से खर्च योग्य आय बढ़ेगी जिससे मांग को बढ़ावा मिलेगा।
- एक बार में थोक जमा परिभाषा को संशोधित किया गया। अब एक करोड़ रुपये के बजाए एक बार में 2 करोड़ रुपये अथवा इससे अधिक की जमा इस श्रेणी में आएगी।
- बड़ी श्रेणियों की गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) में तालमेल को लेकर दिशा-निर्देश जारी किया जाएगा।
- रुपये के मूल्य में स्थिरता सुनिश्चित करने के लिये विदेशी रुपया बाजार के लिये कार्य बल गठित करने का प्रस्ताव।
- बिना गारंटी के कृषि कर्ज देने की सीमा 1 लाख रुपये से बढ़ाकर 1.60 लाख रुपये की गयी. इससे छोटे एवं सीमांत किसानों को मदद मिलेगी।
- कृषि कर्ज की समीक्षा के लिये कार्यकारी समूह का गठन।
- मौद्रिक नीति समिति के चार सदस्यों ने नीतिगत दर में कटौती के पक्ष में तथा दो ने यथास्थिति बनाये रखने को लेकर मत दिया। समिति के दो सदस्यों चेतन घाटे तथा विरल आचार्य यथास्थिति बनाये रखने के पक्ष में थे।
- मौद्रिक नीति समिति की अगली बैठक 2-4 अप्रैल को होगी।

स्रोत: इकोनॉमिक टाइम्स

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

स्टार्टअप से जुड़ी पहलों के आधार पर राज्यों की रैंकिंग का दूसरा संस्करण लांच

चर्चा में क्यों?

☞ उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) ने वर्ष 2019 के लिए स्टार्टअप से जुड़ी पहलों के आधार पर राज्यों की रैंकिंग का दूसरा संस्करण लांच किया। राज्यों की स्टार्टअप रैंकिंग के प्रथम संस्करण में 27 राज्यों और 3 केंद्र शासित प्रदेशों ने भाग लिया था।

मुख्य तथ्य

- डीआईपीपी ने 20 दिसंबर 2018 को नई दिल्ली में राज्यों की स्टार्ट-अप रैंकिंग 2018 के परिणाम घोषित किये थे। यह अपने तरह की पहली रैंकिंग थी।
- इस रूपरेखा के तहत राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि वे एक-दूसरे की अच्छी प्रथाओं या तौर-तरीकों की पहचान करें, उनसे सीखें और उन्हें अपने यहां अमल में लाएं।

उद्देश्य:

- स्टार्टअप रैंकिंग की रूपरेखा का उद्देश्य स्टार्टअप्स को आवश्यक सहयोग प्रदान करने की सुदृढ़ व्यवस्था करने की दृष्टि से राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों की रैंकिंग करना है।
- इसका मुख्य मकसद देश में उभरते उद्यमियों को प्रोत्साहन देना है। योजना के तहत कर अवकाश और पूंजीगत लाभ कर की छूट दी जा रही है।

रैंकिंग रूपरेखा (फ्रेमवर्क) 2019:

- रैंकिंग रूपरेखा (फ्रेमवर्क) 2019 में 7 आधार और 30 कार्य-बिंदु शामिल हैं। इन आधारों के जरिए संस्थागत सहायता, नियम-कायदों को सरल करने, सार्वजनिक खरीद को आसान करने, इन्क्यूबेशन संबंधी सहयोग, प्रारंभिक पूंजी के वित्त पोषण संबंधी सहयोग, उद्यम वित्त पोषण संबंधी सहायता एवं जागरूकता और पहुंच संबंधी गतिविधियों के लिए राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा किए गए प्रयासों का आकलन किया जाता है।
- रैंकिंग से जुड़ी इस कवायद का उद्देश्य 1 मई 2018 से लेकर 30 जून 2019 तक की आकलन अवधि के दौरान राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा किए जाने वाले उपायों का आकलन करना है।
- डीपीआईआईटी ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की सरकारों के साथ सलाह-मशविरा के अनेक दौर पूरे करने के बाद यह रूपरेखा तैयार की है।
- स्टार्टअप से जुड़े परिवेश के लिए स्टार्टअप्स और अन्य महत्वपूर्ण हितधारको से आवश्यक जानकारियां प्राप्त करने पर विशेष जोर देने से यह रूपरेखा पिछले वर्ष की तुलना में स्पष्ट रूप से काफी विकसित हो गई है।
- डीपीआईआईटी ने रैंकिंग रूपरेखा के 7 आधारों से जुड़े उल्लेखनीय प्रदर्शन को ध्यान में रखते हुए राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को मान्यता प्रदान करने का भी प्रस्ताव किया है।
- रैंकिंग 2019 कवायद के एक हिस्से के रूप में डीपीआईआईटी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों की सरकारों के अभिनव स्टार्टअप कार्यक्रमों और पहलों को मान्यता प्रदान करेगा।

स्टार्ट-अप को प्रोत्साहन:

- इस रैंकिंग से राज्यों को स्टार्ट-अप को प्रोत्साहन के लिए पारिस्थितिकी तंत्र को सुधारने में मदद मिलेगी। इस रैंकिंग का आधार राज्यों द्वारा स्टार्ट-अप के लिए अनुकूल तंत्र विकसित करने के लिए किए गए प्रयास है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

पृष्ठभूमि:

- वर्ष 2018 में रैंकिंग रूपरेखा को लांच किए जाने से राज्यों/केंद्र शासित प्रदेश इस दिशा में तेजी से प्रयासरत हो गए जिससे देश में स्टार्टअप से जुड़े अभियान को काफी बढ़ावा मिला। अब तक 25 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने अपनी-अपनी विशिष्ट स्टार्टअप नीतियों की शुरुआत कर दी है, ताकि उनके क्षेत्राधिकार में आने वाले स्टार्टअप्स को विशेष प्रोत्साहन मिल सके।
- स्टार्टअप रैंकिंग 2019 से देश में स्टार्टअप से जुड़े परिवेश को बेहतर करने तथा 'भारत के एक स्टार्टअप राष्ट्र के रूप में उभरने' के विजन को काफी बढ़ावा मिलने की आशा है।
- हाल ही में, केंद्र सरकार ने औद्योगिक नीति एवं संवर्द्धन विभाग (डीआईपीपी) का नाम बदलकर उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्द्धन विभाग (डीपीआईआईटी) कर दिया है। साथ ही उसे अन्य कामों के साथ स्टार्टअप से जुड़े मुद्दों और कारोबार सुगमता सुनिश्चित करने की भी जिम्मेदारी दी गई है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के तहत काम करने वाला डीपीआईआईटी आंतरिक व्यापार के संवर्द्धन से जुड़े मुद्दों को देखेगा। व्यापारियों और उनके कर्मचारियों के कल्याण की जिम्मेदारी उसके पास होगी। साथ ही कारोबार सुगमता सुनिश्चित करने और स्टार्टअप से जुड़े मुद्दों को भी उसे देखना होगा। इससे पहले आंतरिक व्यापार को उपभोक्ता मामलों का मंत्रालय देखता था।

स्रोत: पीआईबी

रूफटॉप सोलर कार्य्रकम के दूसरे चरण को मंजूरी

चर्चा में क्यों?

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों पर कैबिनेट समिति ने वर्ष 2022 तक रूफटॉप सोलर (आरटीएस) परियोजनाओं से 40,000 मेगावाट की संचयी क्षमता हासिल करने के लिए ग्रिड से जुड़े रूफटॉप सोलर कार्यक्रम के दूसरे चरण को मंजूरी दे दी है। इस कार्यक्रम को 11,814 करोड़ रुपये की कुल केन्द्रीय वित्तीय सहायता के साथ कार्यान्वित किया जाएगा।
- कार्यक्रम के दूसरे चरण में आवासीय क्षेत्र के लिए केन्द्रीय वित्तीय सहायता (सीएफए) का पुनर्गठन किया गया है। इसके तहत 3 किलोवाट तक की क्षमता वाली आरटीएस प्रणालियों के लिए 40 प्रतिशत सीएफए और 3 किलोवाट से ज्यादा एवं 10 किलोवाट तक की क्षमता वाली आरटीएस प्रणालियों के लिए 20 प्रतिशत सीएफए उपलब्ध कराई जाएगी।

मुख्य बिंदु

- ग्रुप हाउसिंग सोसायटियों/आवासीय कल्याण संघों (जीएचएस/आरएडब्ल्यू) के मामले में साझा सुविधाओं को विद्युत आपूर्ति हेतु आरटीएस संयंत्रों के लिए सीएफए को 20 प्रतिशत तक सीमित रखा जाएगा। हालांकि, जीएचएस/आरएडब्ल्यू के लिए सीएफए हेतु मान्य क्षमता प्रति मकान 10 किलोवाट तक ही सीमित होगी।
- इसके तहत अधिकतम कुल क्षमता 500 केडब्ल्यूपी तक होगी, जिसमें जीएचएस/आरएडब्ल्यू के अंतर्गत व्यक्तिगत मकानों में लगाए गए आरटीएस की क्षमता भी शामिल होगी।
- आवासीय श्रेणी के तहत सीएफए 4000 मेगावाट की क्षमता के लिए मुहैया कराई जाएगी और यह मानक (बेंचमार्क) लागत या निविदा लागत, इनमें से जो भी कम हो, के आधार पर उपलब्ध कराई जाएगी।
- केन्द्रीय वित्तीय सहायता अन्य श्रेणियों यथा संस्थागत, शैक्षणिक, सामाजिक, सरकारी, वाणिज्यिक, औद्योगिक इत्यादि के लिए उपलब्ध नहीं होगी।
- कार्यक्रम के दूसरे चरण के तहत वितरण कंपनियों (डिस्कॉम) की ज्यादा सहभागिता पर फोकस किया जाएगा। डिस्कॉम को प्रदर्शन आधारित प्रोत्साहन दिए जाएंगे, जो पिछले वित्त वर्ष के आखिर में प्राप्त आधार क्षमता अर्थात संचयी क्षमता के अलावा किसी वित्त वर्ष (योजना की अवधि तक प्रत्येक वर्ष 1 अप्रैल से 31 मार्च तक) में हासिल आरटीएस क्षमता पर आधारित होंगे।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

डिस्कॉम को प्रोत्साहन कुछ इस तरह से होंगे:

क्र.सं.	मानदंड	प्रोत्साहन
1	किसी वित्त वर्ष में स्थापित आधार क्षमता के अलावा 10 प्रतिशत तक हासिल स्थापित क्षमता के लिए	कोई प्रोत्साहन नहीं
2	किसी वित्त वर्ष में स्थापित आधार क्षमता के अलावा 10 प्रतिशत से ज्यादा और 15 प्रतिशत तक हासिल स्थापित क्षमता के लिए	स्थापित आधार क्षमता के 10 प्रतिशत से ज्यादा हासिल क्षमता के लिए लागू लागत का 5 प्रतिशत
3	किसी वित्त वर्ष में स्थापित आधार क्षमता के अलावा 15 प्रतिशत से ज्यादा हासिल स्थापित क्षमता के लिए	स्थापित आधार क्षमता के 10 प्रतिशत से ज्यादा और 15 प्रतिशत तक हासिल क्षमता के लिए लागू लागत का 5 प्रतिशत प्लस स्थापित आधार क्षमता के 15 प्रतिशत से ज्यादा हासिल क्षमता के लिए लागू लागत का 10 प्रतिशत।

प्रभाव

- इस कार्यक्रम में रोजगार सृजन की संभावनाएं भी निहित हैं। इस मंजूरी से स्व-रोजगार को बढ़ावा मिलने के अलावा वर्ष 2022 तक योजना के चरण-2 के तहत 38 जीडब्ल्यू की क्षमता वृद्धि हेतु कुशल एवं अकुशल कामगारों के लिए 9.39 लाख रोजगारों के समतुल्य रोजगार अवसर सृजित होने की संभावना है।
- प्रति मेगावाट 1.5 मिलियन यूनिट औसत ऊर्जा उत्पादन के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए यह उम्मीद की जा रही है कि वर्ष 2022 तक कार्यक्रम के चरण-2 के तहत 38 गीगावाट की क्षमता वाले सोलर रूफटॉप संयंत्रों की स्थापना से प्रतिवर्ष कार्बन डाईऑक्साइड के उत्सर्जन में लगभग 45.6 टन की कमी होगी।

स्रोत: पीआईबी

12 सरकारी बैंकों को 48,239 करोड़ रु. की रिकैपिटलाइजेशन राशि दी जाएगी

चर्चा में क्यों?

- सरकार ने वित्तीय समस्याओं से जूझ रहे 12 बैंकों के रिकैपिटलाइजेशन के लिए 48,239 करोड़ रुपये मंजूर किए हैं। इसमें पंजाब नेशनल बैंक सहित 12 सरकारी बैंक शामिल हैं। कॉरपोरेशन बैंक को सबसे ज्यादा 9,086 करोड़ रुपये मिलेंगे। पीएनबी में 5,908 करोड़ रुपये की रकम डाली जाएगी।
- रिकैपिटलाइजेशन के तहत मिलने वाली रकम से बैंकों के पास आरबीआई के नियम पूरे करने के लिए पर्याप्त पूंजी उपलब्ध हो पाएगी। बैंक रिकैपिटलाइजेशन से सरकारी बैंकों को रेग्युलेटरी कैपिटल रिक्वायरमेंट्स को बनाए रखने और फाइनेंस ग्रोथ प्लान पर काम करने में मदद मिलेगी।

रिकैपिटलाइजेशन की घोषणा के मुख्य बिंदु

- केंद्र सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक की निगरानी में चल रहे प्रॉम्प्ट करेक्टिव एक्शन (पीसीए) के तहत बेहतर प्रदर्शन करने वाले दो बैंकों, कॉरपोरेशन बैंक और इलाहाबाद बैंक में सबसे ज्यादा क्रमश 9,086 करोड़ रुपये और 6,896 करोड़ रुपये लगाएगी।
- इसके अलावा बैंक ऑफ इंडिया और बैंक ऑफ महाराष्ट्र में क्रमशः 4,638 करोड़ रुपये और 205 रुपये का फंड लगाया जायेगा।
- पंजाब नेशनल बैंक को 5908 करोड़ रुपये, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को 4112 करोड़ रुपये, आंध्र बैंक को 3256 करोड़ रुपये और सिंडिकेट बैंक 1603 करोड़ रुपये मिलेंगे।
- सरकार पीसीए के तहत आने वाले चार अन्य बैंकों- सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, यूनाइटेड बैंक, यूको बैंक और इंडियन ओवरसीज बैंक में 12,535 करोड़ रुपये लगाएगी।
- गौरतलब है कि सरकार ने दिसंबर 2018 में रिकैपिटलाइजेशन बॉन्ड्स के माध्यम से 7 सरकारी बैंकों में 28,615 करोड़ रुपये लगाए थे।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

पीसीए क्या है?

- रिटर्न ऑफ असेट्स, कैपिटल टू रिस्क वेटेड असेट्स रेश्यो और एनपीए, के मापदंड़ों का उल्लंघन करने पर किसी बैंक को पीसीए लिस्ट में डाल दिया जाता है।
- ऐसे बैंकों पर कर्ज बांटने और गैर जरूरी खर्चों पर रोक लागू हो जाती है. बैंक ऑफ इंडिया, बैंक ऑफ महाराष्ट्र और ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स भी इस लिस्ट में शामिल हुए थे लेकिन पिछले महीने वे बाहर हो गए हैं।
- बैंकों को रिकैपिटलाइजेश के तहत रकम इसलिए दी जा रही है ताकि वो पर्याप्त पूंजी के रिजर्व बैंक के नियम को पूरा कर सकें।
- उन बैंकों को आरबीआई की प्रॉम्प्ट करेक्टिव एक्शन (पीसीए) लिस्ट से बाहर होने में मदद मिल सके जो इसमें शामिल हैं। साथ ही पीसीए की कगार पर पहुंच चुके बैंक इससे बच सकें।

स्रोत: इकोनॉमिक टाइम्स

राष्ट्रीय खनिज नीति 2019 को मंजूरी

चर्चा में क्यों?

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 28 फरवरी 2019 को राष्ट्रीय खनिज नीति (एमएनपी), 2019 को मंजूरी दी।
- नई राष्ट्रीय खनिज नीति अधिक प्रभावी नियमन सुनिश्चित करेगी। यह खनन क्षेत्र के स्थायी विकास में सहायता प्रदान करेगी तथा इससे परियोजना से प्रभावित होनेवाले लोगों विशेषकर जनजातीय क्षेत्र के लोगों की समस्याओं के बेहतर समाधान में मदद मिलेगी।

उद्देश्य

- राष्ट्रीय खनिज नीति, 2019 का उद्देश्य प्रभावी, अर्थपूर्ण और कार्यान्वयन-योग्य नीति का निर्माण करना है जो बेहतर पारदर्शिता, नियमन और कार्यान्वयन, संतुलित सामाजिक व आर्थिक विकास के साथ-साथ दीर्घावधि खनन अभ्यासों को समर्थन प्रदान करती है।

मुख्य तथ्य

राष्ट्रीय खनिज नीति, 2019 में ऐसे प्रावधान शामिल हैं जो खनन क्षेत्र को प्रोत्साहन प्रदान करेंगे, जैसे:

- आरपी/पीएल धारकों के लिए पहले अस्वीकार के अधिकार की शुरूआत
- अन्वेषण कार्य के लिए निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन देना
- राजस्व-साझा के आधार पर समग्र आरपी-सह-पीएल-सह-एमएल के लिए नये क्षेत्रों में नीलामी
- खनन कंपनियों में विलय और अधिग्रहण को प्रोत्साहन तथा खनन में निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन देने के लिए खनन-पट्टों के हस्तांतरण की अनुमति तथा समर्पित खनिज कॉरीडोर का निर्माण।
- 2019 नीति में प्रस्ताव दिया गया है कि खनन गतिविधि को उद्योग का दर्जा दिया जाए. इससे निजी क्षेत्र को खनन-संपत्ति अधि ग्रहण के लिए वित्त पोषण प्राप्त होगा।
- यह भी उल्लेख किया गया है कि खनिज के लिए दीर्घकालिक आयात-निर्यात नीति के निर्माण से निजी क्षेत्र बेहतर नीतियां बनाने में सक्षम होगा और व्यापार में स्थिरता आएगी।
- नीति में सार्वजनिक उपक्रमों को दिए गए आरक्षित क्षेत्रों को भी युक्तिसंगत बनाने का उल्लेख किया गया है। ऐसे क्षेत्रों जहां खनन गतिविधियों की शुरूआत नहीं हुई है की नीलामी होनी चाहिए। इससे निजी क्षेत्र को भागीदारी के लिए अधिक अवसर प्राप्त होंगे।
- नीति में निजी क्षेत्र को सहायता प्रदान करने के लिए वैश्विक मानदंडों के आधार पर टैक्स, लेवी और रॉयल्टी को युक्तिसंगत बनाने के प्रयासों का भी उल्लेख किया गया है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

पृष्ठभूमि:

- राष्ट्रीय खनिज नीति, 2019 में कुछ बदलाव किये गए हैं जैसे नीति के विजन के रूप में मेक इन इंडिया और लैंगिक समानता पर विशेष ध्यान देना। खनिजों के विनियमन के लिए ई-प्रशासन, आई-टी सक्षम प्रणाली, जागरूकता तथा सूचना अभियान आदि को शामिल किया गया है।
- स्वीकृति मिलने में विलंब होने की स्थिति में ऑनलाइन पोर्टल में ऐसे प्रावधान शामिल किये गए हैं जिससे उच्च-स्तर पर मामलों को निपटाया जा सकेगा। एमएनपी, 2019 का उद्देश्य निजी निवेश को आकर्षित करना है और इसके लिए प्रोत्साहन देने की व्यवस्था की गई है।
- खनन पट्टा-भूमि प्रणाली के तहत खनिज संसाधनों तथा पट्टे पर दी गई भूमि का डेटाबेस तैयार किया जाएगा। नई नीति के तहत खनिजों के परिवहन के लिए तटीय तथा अंतर्देशीय जलमार्ग पर विशेष ध्यान दिया गया है। नीति में खनिजों के परिवहन को सुविधजनक बनाने के लिए समर्पित खनिज कॉरीडोर का उल्लेख किया गया है।
- एमएनपी, 2019 में खनिज क्षेत्र के लिए लंबी अवधि के आयात-निर्यात नीति का प्रस्ताव दिया गया है। इससे खनिज गतिविधि में स्थिरता आएगी और बड़े पैमाने पर होने वाली वाणिज्यिक खनिज गतिविधि में निवेश आकर्षित होगा।

स्रोत: पीआईबी

सूक्ष्म वन उपज के लिए एमएसपी का शुभारंभ

चर्चा में क्यों?

- केंद्रीय जनजातीय मंत्री जुएल ओराम ने 28 फरवरी 2019 को 'सूक्ष्म वन उपज के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य एवं वन धन के मूल्य वर्धन संघटक' का शुभारंभ किये।
- इसका शुभारंभ जनजातीय कार्य मंत्रालय के तहत ट्राइफेड द्वारा अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित कार्यशाला में किया गया। दिनभर चलने वाली इस कार्यशाला में 30 राज्यों की सरकारों और हितधारक संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में इन प्रतिनिधियों के साथ इस योजना के प्रारंभ और उसके कार्यान्वयन के बारे में चर्चा की गई।

मुख्य बिंदु:

- प्रधानमंत्री ने 14 अप्रैल 2018 को छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में वन धन योजना का शुभारंभ किया था।
- जनजातीय कार्य मंत्रालय अब "वन धन योजना" का विस्तार कर रहा है और उसे चरणबद्ध रूप से देश के सभी जनजातीय जिलों में लागू करने के लिए तैयार है। इसकी शुरूआत बड़ी जनजातीय आबादी वाले महत्वाकांक्षी जिलों के साथ की जाएगी।
- मंत्रालय ने सूक्ष्म वन उपज योजना के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की कवरेज के दायरे में 50 सूक्ष्म वन उत्पादों को शामिल किया है।
- प्रत्येक जींस के संदर्भ में एमएसपी में 30 प्रतिशत से 40 प्रतिशत तक की वृद्धि की गई है।
- लघु वन उपजों की खरीददारी की शुरूआत हाट बाजारों में होगी, जहां जनजातीय लोग राज्य सरकार की एजेंसियों और संबंधित जिला कलेक्टरों की सहायता के जरिए अपनी उपज लाएंगे।
- देश में प्रति 300 जनजातीय संग्रहकर्ताओं वाले लगभग 6000 वन धन विकास केंद्र स्थापित करने का प्रस्ताव है। इस तरह लगभग 45 लाख जनजातीय लोगों को रोजगार प्रदान किया जाएगा।

अन्य जानकारी:

- खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय और जनजातीय कार्य मंत्रालय ने लगभग 11 करोड़ रुपये की लागत से छत्तीसगढ़ के जगदलपुर और महाराष्ट्र के रायगढ़ में दो लघु वन उपज प्रसंस्करण इकाइयां स्थापित करने का निर्णय लिया है।
- ये इकाइयां जनजातीय संग्रहकर्ताओं और एमएसपी से लघु वन उपज प्राप्त करेंगी और उन्हें पूरे देश में जनजातीय संस्थाओं के माध्यम से विपणन के लिए संसाधित करेंगी।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

- इसका प्रमुख घटक पारंपरिक जनजातीय पेय हेरिटेज महुआ को मुख्यधारा में लाना होगा, जिसका उत्पादन और विपणन पूरे देश में किया जाएगा।
- ट्राइफेड ने सीएसआर निधियां एकत्र करने के लिए 'फ्रेंडस ऑफ ट्राइब्स' योजना भी प्रारंभ की है और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) से अपने सीएसआर प्रयासों के माध्यम से जनजातीय उद्यमिता विकास कार्यक्रम का वित्त पोषण करने का अनुरोध किया गया है।
- इसके अलावा, बीपीसीएल, आईओसीएल और एसपीएमसीएल ने छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के बड़वानी, राजनांदगांव, देवास और होशंगाबाद जिलों में वन धन के लिए 10 करोड़ रुपये की राशि मंजूर की है।

स्रोत: पीआईबी , इकोनॉमिक टाइम्स

GST परिषद ने निर्माणाधीन घरों पर टैक्स 12% से घटाकर 5% किया

चर्चा में क्यों?

- माल एवं सेवा कर (GST) परिषद ने निर्माणाधीन परियोजनाओं में मकानों पर जीएसटी की दर 12 प्रतिशत से घटाकर पांच प्रतिशत कर दी है और इसमें इनपुट कर का लाभ खत्म करने का फैसला किया है। साथ ही किफायती दर के मकानों पर भी जीएसटी दर को आठ प्रतिशत से घटाकर एक प्रतिशत करने का फैसला किया गया है।
- वित्त मंत्री अरुण जेटली ने जीएसटी परिषद की बैठक के बाद 24 फरवरी 2019 को इस फैसले की जानकारी दी। इस फैसले से मकान खरीदारों को बड़ी राहत मिलने की उम्मीद है। परिषद ने इसके साथ ही किफायती दर की परिभाषा को भी उदार किया है।

GST परिषद की घोषणा

- जीएसटी काउंसिल ने निर्माणाधीन घरों पर टैक्स घटाकर 5% और अफोर्डेबल घरों पर 1% कर दिया है। पहले यह दरें 12% और 8% थीं। जीएसटी की नई दरें 1 अप्रैल से लागू होंगी।
- मेट्रो शहरों के लिए 60 स्क्वायर मीटर कार्पेट एरिया और 45 लाख रुपए तक कीमत वाले घर अफोर्डेबल की श्रेणी में माने जाएंगे।
- नॉन-मेट्रो शहरों के लिए यह 90 स्क्वायर मीटर कार्पेट एरिया और 45 लाख रुपए तक कीमत वाले घर अफोर्डेबल माने जाएंगे।
- वित्त मंत्री ने कहा कि जीएसटी घटने से हाउसिंग सेक्टर को उत्साह मिलेगा और मध्यम वर्ग के लोगों की उम्मीदें पूरी होंगी।

नई दरों के अनुसार टैक्स की गणना

पहले (8% जीएसटी) अब	**(1% जीएसटी)**	
घर की कुल कीमत	45 लाख रुपये	45 लाख रुपये
जमीन की एक तिहाई कीमत	15 लाख रुपये	15 लाख रुपये
बाकी 30 लाख पर जीएसटी	2.40 लाख रुपये	30,000 रुपये
टैक्स में लाभ	2.10 लाख रुपये	

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

जीएसटी परिषद

☞ देश में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) के लिए संविधान (122वें संशोधन) विधेयक 2016 को राष्ट्रपति ने 8 सितंबर 2016 को मंजूरी दे दी थी। इसके साथ ही इसे अधिसूचित कर दिया गया। यह अधिसूचना अनुच्छेद 279 ए के तहत लागू किया गया जो 12 सितंबर 2016 से क्रियान्यवित हो गया। अनुच्छेद 279 ए के अनुसार संविधान संशोधन, जीएसटी परिषद केंद्र एवं राज्य सरकारों का संयुक्त मंच होगा. इसमें निम्मलिखित सदस्य शामिल होंगे:

- केंद्रीय वित्त मंत्री – अध्यक्ष
- राज्य मंत्री, वित्त राजस्व के प्रभारी – सदस्य
- मंत्री प्रभारी वित्त, कराधान अथवा
- किसी राज्य सरकार द्वारा मनोनीत अन्य मंत्री – सदस्य
- अनुच्छेद 279, (4) के अनुसार, परिषद जीएसटी से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों पर केंद्र और राज्यों के लिए सिफारिशें करेगा। भारत में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) 01 जुलाई 2017 से लागू कर दिया गया है।

स्रोतः पीआईबी

वस्त्र मंत्रालय द्वारा हितधारकों के लिए 'आउटरीच' कार्यक्रम आयोजित

चर्चा में क्यों?

☞ वस्त्र मंत्रालय द्वारा 13 फरवरी 2019 को नई दिल्ली में वस्त्र उद्योग क्षेत्र के सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्यमों के लिए 'आउटरीच' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हितधारकों को समर्थन व सहयोग प्रदान करने के लिए 100 दिनों के परस्पर बातचीत कार्यक्रम की घोषणा की थी।

☞ इस अवसर पर एमएसएमई से जुड़ी वस्त्र क्षेत्र की उपलब्धियों को एक प्रदर्शनी के माध्यम से दर्शाया गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2 नवंबर, 2018 को एमएसएमई के लिए 100 दिनों के आउटरीच कार्यक्रम का शुभारंभ किया था। इसके लिए पूरे देश में 100 जिलों की पहचान की गई थी। 39 जिलों को वस्त्र मंत्रालय के लिए चिन्हित किया गया था. 39 जिलों में 12 हैंडलूम, 19 हस्तशिल्प और 8 पावरलूम के लिए निर्धारित किए गए थे।

आउटरीच कार्यक्रम

- आउटरीच कार्यक्रम के तहत कई कार्यक्रम आयोजित किए गए जैसे स्थानीय बैंकों के सहयोग से मुद्रा ऋण के लिए कैंप लगाना, ई-धागा के लिए लाभार्थियों का पंजीकरण, लाभार्थियों को उपकरण किट का वितरण, कारीगारों तथा बुनकरों के लिए पहचान-पत्र का पंजीयन व वितरण, 24०7 हेल्पलाइन नंबर को लोकप्रिय बनाना, गुणवत्ता प्रमाण-पत्र देना और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना।
- इसमें 9 तथा 10 फरवरी, 2019 को जिला स्तर पर कार्यक्रम आयोजित किए गए. इसके बाद 11 और 12 फरवरी को राज्य स्तर पर हैंडलूम, हस्तशिल्प और पावरलूम उत्पादों पर प्रदर्शनियां आयोजित की गई।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

आउटरीच कार्यक्रम का लाभ

- एमएसएमई क्षेत्र को दिए जाने वाले ऋण सुविधा, बाजार तक पहुंच तथा समर्थन व सहयोग से इकाइयों को प्रोत्साहन मिलेगा और भारतीय वस्त्र क्षेत्र विकसित होगा।
- आउटरीच कार्यक्रम से गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश जैसे टेक्सटाइल हब की एमएमएफ वस्त्र निर्माण इकाइयों को लाभ मिलेगा।
- एक घंटे से कम समय में ऋण स्वीकृति से सूक्ष्म, लघु व मध्यम क्षेत्र के उद्यमियों के समय की बचत होगी।
- निरीक्षक द्वारा जांच को समाप्त करने, निरीक्षक के जांच को कम्प्यूटर द्वारा चयनित करने, पोर्टल पर 48 घंटों के अंदर रिपोर्ट अपलोड करने आदि कदमों से उद्यमियों को व्यापार करने में आसानी होगी।
- भारत के कुल वस्त्र उद्योग में एमएसएमई क्षेत्र का हिस्सा 75 प्रतिशत से अधिक है। नई पहलों से अधिकांश इकाइयों को फायदा मिलेगा जैसे नए ऋणों के लिए ब्याज दर में दो प्रतिशत की कटौती, निर्यात क्रेडिट के लिए दो प्रतिशत की अतिरिक्त कटौती, 59 मिनटों के अंदर 1 करोड़ तक के ऋण-स्वीकृति आदि।

स्रोत: पीआईबी

पीएम-किसान योजना लॉन्च

चर्चा में क्यों?

- ☞ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 24 फरवरी 2019 को गोरखपुर से प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम किसान) योजना का शुभारंभ किया गया। लघु एवं सीमांत कृषकों की आय बढ़ाए जाने एवं उनके सुनहरे भविष्य के लिए इस योजना को भारत सरकार ने पूरे देश में लागू किया है।
- ☞ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 75,000 करोड़ रुपये की प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम किसान) योजना का शुभारंभ किया है। इस दौरान उन्होंने एक करोड़ से ज्यादा किसानों के खाते में 2,000 रुपये की पहली किस्त भेजी। इसके अतिरिक्त प्रधानमंत्री ने, प्रधानमंत्री-किसान योजना के तहत चुने हुए किसानों को प्रमाण-पत्र भी वितरित किये।
- ☞ विदित हो कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना (पीएम-किसान) की घोषणा 1 फरवरी, 2019 को अंतरिम बजट 2019-20 को की गई थी। इस योजना के तहत 2 हेक्टेयर तक की संयुक्त जोत/ स्वामित्व वाले छोटे एवं सीमान्त कृषक परिवारों को प्रतिवर्ष 6000 रुपए दिए जाएंगे।

मुख्य तथ्य

- बजट भाषण के दौरान वित्त मंत्री ने घोषणा की थी कि इसमें छोटे और सीमांत किसानों के लिये 6,000 रुपए की आय समर्थन राशि दी जाएगी।
- यह राशि 2000 रुपए प्रत्येक की तीन किस्तों में दी जाएगी।
- यह राशि प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण के जरिए सीधे लाभार्थियों के बैंक खाते में अंतरित की जाएगी। डीबीटी पूरी प्रक्रिया में पारदर्शिता सुनिश्चित करेगा और किसानों का समय बचाएगा।
- यह योजना छोटे एवं सीमान्त किसानों (एसएमएफ) की आय में संवर्धन के लिए लागू की गई थी। इससे 12 करोड़ छोटे एवं सीमान्त किसानों को लाभ पहुंचने का अनुमान है।
- प्रधानमंत्री-किसान योजना भारत सरकार से 100 प्रतिशत वित्त पोषण प्राप्त एक केन्द्रीय क्षेत्र की योजना है। योग्य लाभार्थियों को लाभ पहुंचाने के लिए अंतरण हेतु यह योजना 01.12.2018 से प्रभावी हो गई है।
- राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों (केंद्र शासित प्रदेशों) में मौजूदा भूमि-स्वामित्व प्रणाली का उपयोग लाभार्थियों की पहचान के लिए किया जाएगा। 01 फरवरी 2019 तक जिनके भी नाम भूमि रिकॉर्ड में होंगे उन्हें इस योजना का लाभ लेने के पात्र माना जाएगा।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

उद्देश्य

- प्रधानमंत्री-किसान योजना का उद्देश्य प्रत्येक फसल चक्र की समाप्ति पर अनुमानित कृषि आय के अनुरूप उचित फसल स्वास्थ्य एवं उपयुक्त उपज सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न निविष्टियों को प्राप्त करने में एसएमएफ की वित्तीय आवश्यकताओं में सहायता प्रदान करना है।
- यह उन्हें ऐसे व्ययों की पूर्ति के लिए सूदखोरों के चंगुल में फंसने से बचाएगा तथा कृषि कार्यकलापों में उनकी नियमितता भी सुनिश्चित करेगा।

किसे नहीं मिलेगा लाभ?

- यदि किसी किसान परिवार के एक या अधिक सदस्य निम्न श्रेणियों, किसी संस्थागत पद पर पूर्व में या वर्तमान में कार्यरत, मौजूदा या पूर्व मंत्री, राज्य मंत्री, लोकसभा-राज्यसभा, विधानसभा या विधान परिषद के पूर्व या मौजूदा सदस्य, नगर निगमों के पूर्व या मौजूदा मेयर और जिला पंचायतों के मौजूदा या पूर्व चेयरपर्सन में आते हैं तो उनको भी इस योजना का लाभ नहीं मिलेगा।
- केंद्र और राज्य सरकारों के मौजूदा या सेवानिवृत्त कर्मचारियों के अलावा स्थानीय निकायों के नियमित कर्मचारियों (इसमें मल्टी टास्किंग कम्रचारी-श्रेणी चार-समूह डी के कर्मचारी शामिल नहीं हैं) को भी इस योजना का फायदा नहीं मिल सकेगा।
- ऐसे सभी सेवानिवृत्त कर्मचारी या पेंशनभोगी जिनकी मासिक पेंशन 10,000 रुपए या उससे अधिक है, को भी इस योजना का लाभ नहीं मिलेगा।

स्रोतः पीआईबी

केंद्र सरकार ने कुसुम योजना को शुभारंभ करने की मंजूरी दी

चर्चा में क्यों?

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडल समिति ने किसानों को वित्तीय और जल सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान (कुसुम) का शुभारंभ करने की मंजूरी दी।
- इस योजना के लिए केंद्र सरकार 34,422 करोड़ रुपए का वित्त उपलब्ध कराएगी। इसका उद्देश्य 2022 तक 25.75 गीगावाट की सौर ऊर्जा क्षमताओं का दोहन कर किसानों को वित्तीय और जल सुरक्षा उपलब्ध कराना है।

योजना के घटक:

- प्रस्तावित योजना के तीन घटक हैं.
- घटक ए: नवीकरणीय ऊर्जा संयंत्रों से 10,000 मेगावाट के भूमि के ऊपर बनाए गए विकेन्द्रीकृत ग्रिडों को जोड़ना।
- घटक बी: 17.50 लाख सौर ऊर्जा चालित कृषि पंपों को लगाना।
- घटक सी: 10 लाख ग्रिड से जुड़े सौर ऊर्जा चालित कृषि पंपों का सौरकरण।
- तीनों घटको को सम्मिलित करने से संबंधित इस योजना का लक्ष्य वर्ष 2022 तक 25,750 मेगावाट सौर क्षमता जोड़ना है।
- घटक ए और घटक सी को पायलट आधार पर लागू किया जाएगा. घटक ए के तहत 1000 मेगावाट क्षमता का निर्माण किया जाएगा तथा घटक सी के अंतर्गत एक लाख कृषि पंपों को ग्रिड से जोड़ा जाएगा। पायलट योजना की सफलता के बाद इसे बड़े पैमाने पर कार्यान्वित किया जाएगा। घटक बी को संपूर्ण रूप से लागू किया जाएगा।

घटक ए:

- घटक ए के तहत, किसान/सहकारी समितियां/पंचायत /कृषि उत्पादक संघ (एफपीओ) अपनी बंजर या कृषि योग्य भूमि पर 500 किलोवाट से लेकर 2 मेगावाट क्षमता वाले नवीकरणीय ऊर्जा संयंत्र स्थापित कर सकेंगे। बिजली वितरण कंपनियां उत्पादित ऊर्जा की खरीद करेंगी। दर का निर्धारण एसईआरसी करेंगी। इस योजना से ग्रामीण भू-स्वामियों को स्थायी व निरंतर आय का स्रोत प्राप्त होगा। प्रदर्शन के आधार पर बिजली वितरण कंपनियों को पांच वर्षों की अवधि के लिए 0.40 रुपये की दर से प्रोत्साहन दिया जाएगा।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

घटक बी:

- घटक बी के तहत, किसानों को 7.5 एचपी क्षमता तक के सौर पंप स्थापित करने के लिए सहायता प्रदान की जाएगी। इस योजना में पंप क्षमता को सौर पीवी क्षमता (केवी में) के समान मानने की अनुमति दी गई है।

घटक सी:

- योजना के घटक सी के अंतर्गत किसानों को 7.5 एचपी की क्षमता वाले पंपों के सौरकरण के लिए सहायता प्रदान की जाएगी। इस योजना में पंप क्षमता को दोगुने सौर पीवी क्षमता के समान माना गया है। किसान उत्पादित ऊर्जा का उपयोग सिंचाई जरूरतों के लिए कर पाएंगे तथा अतिरिक्त ऊर्जा बिजली वितरण कंपनियों को बेच पाएंगे। इससे किसानों को अतिरिक्त आय प्राप्त होगी और राज्य अपने पीआरओ लक्ष्य को प्राप्त कर पाएंगे।

घटक-बी और घटक-सी की फंडिंग:

- घटक बी और घटक सी के लिए मानदंड लागत का 30 प्रतिशत या निविदा लागत, इनमें जो भी कम हो, के लिए केन्द्रीय वित्तीय सहायता (सीएफए) प्रदान की जाएगी। राज्य सरकार 30 प्रतिशत की सब्सिडी देगी और शेष 40 प्रतिशत खर्च का वहन किसानों को करना होगा।
- लागत के 30 प्रतिशत खर्च के लिए बैंक सहायता भी प्राप्त की जा सकती है. शेष 10 प्रतिशत लागत किसान के द्वारा उपलब्ध कराई जाएगी। पूर्वोत्तर राज्यों, सिक्किम, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, लक्षदीप और अंडबार-निकोबार दीप समूहों में 50 प्रतिशत केन्द्रीय वित्तीय सहायता (सीएफए) उपलब्ध कराई जाएगी।

प्रभाव:

- इस योजना से कार्बन डाईआक्साइड में कमी आएगी और वायुमंडल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। योजना के तीनों घटकों को सम्मिलित करने में पूरे वर्ष में कार्बन डाईआक्साइड उत्सर्जन में 27 मिलियन टन की कमी आएगी।
- घटक बी के अंतर्गत सौर कृषि पंपों से प्रतिवर्ष 1.2 बिलियन लीटर डीजल की बचत होगी। इससे कच्चे तेल के आयात में खर्च होने वाली विदेशी मुद्रा की भी बचत होगी। इस योजना में रोजगार के प्रत्यक्ष अवसरों को सृजित करने की क्षमता है।
- स्वरोजगार में वृद्धि के साथ इस योजना से कुशल व अकुशल श्रमिकों के लिए 6.31 लाख रोजगार के नए अवसरों के सृजन होने की संभावना है।

स्रोत: पीआईबी

कई रेल परियोजनाओं का शुभारम्भ

चर्चा में क्यों?

- उपराष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू ने 21 फरवरी 2019 को कई रेल परियोजनाओं का शुभारम्भ किया। इनमें वेंकटचलम से वेलीकैल्लु और ओबुलावरिपल्ले से चेरलोपल्ली (कृष्णापटनम- ओबुलावरिपल्ले रेल लाइन परियोजना का हिस्सा) तक बहुप्रतीक्षित नई रेल लाइन का उद्घाटन शामिल हैं।
- इस अवसर पर केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री थावरचंद गहलोत, केंद्रीय रेल और कोयला मंत्री पीयूष गोयल, आंध्र प्रदेश के नगरपालिका प्रशासन मंत्री पोंगुरु नारायण, आंध्र प्रदेश के कृषि, बागवानी, रेशम कीट-पालन, कृषि संसाधन मंत्री सोमीरेड्डी चंद्रमोहन रेड्डी उपस्थित थे।

मुख्य तथ्य

- नेल्लोर रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास और कृष्णापटनम से रापुर स्टेशन तक के सभी रेलवे स्टेशनों पर यात्री सुविधाएं विकसित करने के कार्यों की आधारशिला रखी। यात्री हित की अन्य पहलों में नेल्लोर-चेन्नई सेंट्रल एमईएमयू सेवा का शुभारम्भ शामिल है। इससे दिन के समय नेल्लोर शहर से चेन्नई तक यात्रा सुविधा उपलब्ध होगी।
- इसके अलावा उपराष्ट्रपति ने नेल्लोर, गुंटूर और रेनिगुटां रेलवे स्टेशनों पर उच्च गति की वाई-फाई सेवा भी समर्पित की। उपराष्ट्रपति ने अक्कमपेट रेलवे स्टेशन पर नया बुकिंग कार्यालय, तिरुवोट्टियूर रेलवे स्टेशन पर नया फुट ओवर ब्रिज, नया बुकिंग कार्यालय और गुम्मिडिपुंडी में लेवल क्रॉसिंग के बदले नया सब-वे भी समर्पित किया।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

- उपराष्ट्रपति ने तिरुपति रेलवे स्टेशन पर (वीडियो लिंक के जरिए) नवीनतम यात्री सुविधाओं और नेल्लोर दक्षिण रेलवे स्टेशन पर नए फुट ओवर ब्रिज का भी उद्घाटन किया। गुडूर को विजयवाड़ा से जोड़ने के लिए एक नई इंटरसिटी ट्रेन चलाने के उपराष्ट्रपति के सुझाव पर प्रतिक्रिया देते हुए रेलमंत्री पीयूष गोयल ने इस अवसर पर घोषणा की कि शीघ्र ही दिन के समय चलने वाली एक नई रेलगाड़ी शुरू की जाएगी।
- ओबुलावरिपल्ले से कृष्णापटनम बंदरगाह तक की नई रेल लाइन बन जाने के बाद दूरी 72 किमी तक कम होगी और माल परिवहन के लिए निर्बाध संपर्कता उपलब्ध होगी, क्योंकि यह लाइन वेंकटचलम स्टेशन पर विजयवाड़ा-गुडूर मुख्य लाइन से बंदरगाह को जोड़ती है।
- क्षेत्र के विकास के लिए कृष्णापटनम बंदरगाह-ओबुलावरिपल्ले लाइन के महत्व की दृष्टि से सबसे पहले यह प्रस्ताव अटल बिहारी वाजपेयी के मंत्रिमंडल में जब नीतीश कुमार रेल मंत्री थे तब रखा था और तब से वे इसके लिए प्रयास कर रहे थे।
- वेंकटचलम से रापुर तक यात्री सेवा शुरू होने से सात स्टेशनों के यात्रियों की लंबे समय से की जा रही मांग पूरी होगी और कई रेल परियोजनाओं से संपर्कता में काफी सुधार होगा।

स्रोत: पीआईबी

वाराणसी में 2,900 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का शिलान्यास

चर्चा में क्यों?

☞ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 19 फरवरी 2019 को वाराणसी का दौरा किया। उन्होंने यहां कई विकास परियोजनाओं का अनावरण किया। प्रधानमंत्री ने वाराणसी में डीजल लोकोमोटिव वर्क्स में डीजल से बिजली में परिवर्तित पहले इंजन को झंडी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने लोकोमोटिव का अवलोकन किया और प्रदर्शनी का दौरा भी किया।

प्रधानमंत्री द्वारा वाराणसी में आरंभ परियोजनाएं

- प्रधानमंत्री मोदी ने सड़क, पर्यटन, स्वास्थ्य, पेयजल और आवास की 39 परियोजनाओं का लोकार्पण किया।
- प्रधानमंत्री ने श्रीगोर्वधनपुर में श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर में गुरु रविदास जन्म स्थान विकास परियोजना का शिलान्यास किया।
- प्रधानमंत्री ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के नवनिर्मित मदन मोहन मालवीय कैंसर केन्द्र का उद्घाटन किया।
- यह अस्पताल उत्तर प्रदेश, झारखंड, बिहार, उत्तराखंड सहित नेपाल जैसे पड़ोसी देशों के मरीजों को सस्ता कैंसर उपचार प्रदान करेंगे।
- प्रधानमंत्री ने होमी भाभा कैंसर अस्पताल लहरतारा का भी उद्घाटन किया. इन दोनों कैंसर अस्पतालों के उद्घाटन के जरिए वाराणसी कैंसर संबंधी बीमारियों के बेहतर उपचार के लिए महत्वपूर्ण केन्द्र बन जाएगा।
- प्रधानमंत्री ने पहले नये भाभाट्रॉन प्रीसिजन टेक्नोलॉजी (मल्टी लीफ कॉलीमेटर) का लोकार्पण भी किया।
- पीएम मोदी ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में पंडित मदन मोहन मालवीय की प्रतिमा और वाराणसी घाटों के भित्तिचित्रों का अनावरण किया। उन्होंने विश्वविद्यालय में पीएम-जेएवाई आयुष्मान भारत के लाभार्थियों से बातचीत भी की।
- इसके बाद प्रधानमंत्री मोदी ने वाराणसी स्थित औरे गांव में कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन किया, जिनका उद्देश्य वाराणसी और आस-पास के क्षेत्रों में स्वास्थ्य तथा अन्य सुविधाओं को बढ़ावा देना है।
- उन्होंने विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को प्रमाणपत्र प्रदान किया। उन्होंने दिव्यांगजनों को सहयोगी उपकरण भी वितरित किये।

डीजल से बिजली में परावर्तित इंजन

- डीजल लोकोमोटिव वर्क्स ने दो डब्ल्यूडीजी-3ए डीजल इंजनों को 10 हजार अश्वशक्ति वाले दोहरे इलेक्ट्रिक डब्ल्यूएजीसी-3ए लोको में परिवर्तित किया है। यह 'मेक इन इंडिया' पहल के तहत भारतीय अनुसंधान एवं विकास नवाचार के जरिए किया गया है। परिवर्तित इंजनों से ग्रीन हाऊस गैस उत्सर्जन कम होगा और भारतीय रेल के लिए कारगर इंजन तैयार होंगे।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

विज्ञान और प्रौद्योगिकी, रक्षा एवं स्वास्थ्य

अरुण-3 जल विद्युत परियोजना में निवेश प्रस्ताव को मंजूरी

चर्चा में क्यों?

☞ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल की आर्थिक समिति ने अरुण-3 जल विद्युत परियोजना (नेपाल भाग) के ट्रांसमिशन घटक के लिए 1236.13 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से निवेश को अपनी स्वीकृति दे दी है।

☞ वर्तमान स्वीकृति 400 किलोवाट डी/सी डिडिंग (नेपाल में)- बथनाहा (अंतरराष्ट्रीय सीमा) वाया धलकेबर (नेपाल में) ट्रांसमिशन लाइन के लिए है। यह ट्रांसमिशन लाइन 217 किलोवाट की है और नेपाल में अरुण-3 एचईपी से बिजली पैदा करने के लिए है। यह नेपाल के भूभाग के अंदर है।

लाभ

♦ परियोजना के ट्रांसमिशन घटक के निर्माण से लगभग 400 व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। यह परियोजना नेपाल के साथ आर्थिक संपर्क को मजबूत बनाने के लिए भारत को अधिशेष विद्युत प्रदान करेगी। इस परियोजना से बिजली नेपाल के धलकेबर से भारत में मुजफ्फरपुर भेजी जाएगी।

अरुण-3 जल विद्युत परियोजना

♦ अरुण-3 जल विद्युत परियोजना पूर्वी नेपाल के सनखुवासभा जिले में अरुण नदी पर है।

♦ इस परियोजना के अंतर्गत 70 मीटर ऊँचा गुरुत्व बांध और भूमिगत पावर हाउस के साथ 11.74 किलोमीटर की हेड रेस सुरंग नदी के बाएँ किनारे पर बनाई जाएगी तथा 4 इकाइयों में से प्रत्येक ईकाई 225 मेगावाट विद्युत उत्पादन करेंगी।

♦ एसजेवीएन लिमिटेड ने यह परियोजना अंतर्राष्ट्रीय स्पर्द्धी बोली के माध्यम से प्राप्त की है। नेपाल सरकार और एसजेवीएन लिमिटेड ने परियोजना के लिये मार्च 2008 में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये थे।

♦ यह समझौता ज्ञापन 30 वर्ष की अवधि के लिये बिल्ड ओन ऑपरेट तथा ट्रांसफर के आधार पर किया गया था। इस 30 वर्ष की अवधि में 5 वर्ष की निर्माण अवधि भी शामिल है।

♦ परियोजना विकास समझौते पर नवंबर 2014 में हस्ताक्षर किये गए थे। इस समझौते में 25 वर्षों की संपूर्ण रियायत अवधि के लिये नेपाल को नि:शुल्क 21.9 प्रतिशत विद्युत प्रदान करने का प्रावधान है।

पृष्ठभूमि

♦ प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल की आर्थिक समिति की बैठक के दौरान फरवरी 2017 में मंत्रिमंडल की आर्थिक समिति की बैठक में अरुण-3 जलविद्युत परियोजना (900 मेगावॉट) के उत्पादन घटक के लिये मई, 2015 के मूल्य स्तर पर 5723.72 करोड़ रुपए लागत की परियोजना के लिये निवेश प्रस्ताव को मंजूरी दी गई थी।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

अस्पतालों के लिए एंट्री लेवल प्रमाणन प्रक्रिया हेतु HOPE पोर्टल

चर्चा में क्यों?

☞ अस्पतालों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के लिए राष्ट्रीय प्रमाणन बोर्ड एनएबीएच (NABH) ने एंट्री लेवल प्रमाणन प्रक्रिया को संशोधित किया है ताकि यह प्रक्रिया सरल, त्वरित, डिजिटल और इस्तेमाल में आसान हो सके। एनएबीएच ने इसके लिए एचओपीई (HOPE) नाम से एक नया पोर्टल बनाया है।

मुख्य तथ्य

- इसका उद्देश्य देशभर के अस्पतालों सहित स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में अपनी सेवाएं दे रहे छोटी इकाइयों को उनके शुरुआती चरण में ही गुणवत्ता युक्त सेवाओं के लायक बनाना है।
- इसका लक्ष्य ऐसे स्वास्थ्य सेवा से जुड़े ऐसे संगठनों को गति प्रदान करना भी है जो एनएबीएच प्रमाणन हासिल कर भारतीय बीमा नियामक और विकास प्राधिकरण (IRDA) तथा आयुष्मान भारत से जुड़े लाभ प्राप्त करना चाहते हैं, और इस तरह से देश में एक गुणवत्ता स्वास्थ्य सेवा पारिस्थितिकी तंत्र बनाने में मदद करना चाहते हैं।

होप (HOPE) पोर्टल का उद्देश्य

- होप का काम सिर्फ प्रमाणन तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह अस्पतालों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं को मरीजों के लिए एक सुगम, सुरक्षित और गुणवत्ता युक्त सेवाएं देने के लिए भी बाध्य करता है।
- इसमें ऐसे संगठनों के लिए स्वत जानकारी देने वाली एक प्रश्नावली भी है। होप के माध्यम से एक मोबाइल एप्प भी विकसित किया गया है जो अस्पतालों और अन्य स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं को यह सुविधा प्रदान करता है कि वह एनबीएच प्रमाणन हासिल करने के लिए जरूरी सभी शर्तों से संबधित दस्तावेज सीधे अपलोड कर सकें।
- होप के जरिए आंकलन प्रक्रिया में भी बदलाव किया गया है। इसके माध्यम से प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल कर डाटा का संकलन और प्रमाणन किया जाता है।
- होप (HOPE) में अस्पतालों और अन्य छोटे स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए कई गतिविधि यों शुरु की गई हैं।
- अस्पतालों को संपूर्ण आंकलन प्रक्रिया से अवगत कराने के लिए राष्ट्रव्यापी जागरुकता कार्यशालाओं का आयोजन।
- आवेदन पत्र भरते समय जरूरी मदद के लिए अस्पतालों के वास्ते कॉल सेंटर और हेल्पलाइन सेवा।
- प्रमाण प्रक्रिया को कम खर्चीली बनाने के प्रमाणीकरण प्रक्रिया में सहायता के लिए अस्पतालों को प्रमाणित सलाहकारों से जोड़ने का मंच प्रदान करना।
- प्रमाणन प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी के साथ एक व्यापक गाइडबुक और प्रस्तुति के लिए नालेज बैंक।
- प्रमाणित आंकलनकर्ताओं का मजबूत नेटवर्क।

पृष्ठभूमि

☞ देश में गुणवत्ता प्रमाणन के लिए वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के तहत 1997 में गठित भारतीय गुणवत्ता परिषद् (क्यूसीआई) एक स्वतंत्र निकाय है। यह देश में गुणवत्ता प्रमाणन और गुणवत्ता को बढ़ावा देने वाली वाली शीर्ष संस्था है। एनएबीएच इस क्यूसीआई का ही एक हिस्सा है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि देश में स्वास्थ्य सेवाएं अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप बन सकें।

स्रोतः पीआईबी

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

40 हजार करोड़ रुपये की 6 पनडुब्बियों के निर्माण को मंजूरी

चर्चा में क्यों?

☞ रक्षा मंत्रालय ने भारतीय नौसेना के लिए 40 हजार करोड़ रुपये की लागत से छह पनडुब्बियों के स्वदेश में निर्माण को मंजूरी प्रदान कर दी है। रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता में हुई रक्षा अधिग्रहण परिषद (डीएसी) की बैठक में इस प्रस्ताव को मंजूरी दी गई।

☞ रक्षा मंत्रालय की यह परियोजना रणनीतिक साझेदारी मॉडल के तहत पूरी की जाएगी जो विदेशी रक्षा निर्माताओं के साथ मिलकर भारत में चुनिंदा सैन्य प्लेटफॉर्म बनाने के लिए निजी फर्म को जिम्मेदारी देने की व्यवस्था करता है। रणनीतिक साझेदारी मॉडल के तहत लागू होने वाली यह दूसरी परियोजना होगी। नए मॉडल के तहत लागू होने के लिए सरकार की मंजूरी वाली पहली परियोजना 21 हजार करोड़ रुपये की लागत से नौसेना के लिए हेलीकॉप्टर की खरीद की थी।

मुख्य बिंदु

- इस परियोजना को प्रोजेक्ट 75 नाम दिया गया है। इन पनडुब्बियों में एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन (एआईपी) होगा, जिससे यह पनडुब्बियां 14 दिन तक जलमग्न रह सकती हैं।
- इस परियोजना को रणनीतिक साझेदारी मॉडल के तहत मंजूरी दी गयी है। इस परियोजना को पूरा होने एक दशक का समय लग सकता है।
- इस परियोजना के लिए भारतीय रक्षा निर्माता कंपनी विदेशी कंपनी ओरिजिनल इक्विपमेंट मैन्युफैक्चरर। के साथ मिलकर कार्य करेगा।
- बैठक में रक्षा खरीद प्रक्रिया 2016 में महत्वपूर्ण बदलावों को भी मंजूरी दी गयी। बैठक में सेना के लिए लगभग 5000 मिलन टैंक रोधी मिसाइलों की खरीद को भी मंजूरी दी गई।
- इससे पहले सरकार ने अगस्त 2018 में इसी माडल के तहत नौसेना के लिए देश में ही 111 बहुउद्देशीय हेलिकॉप्टर बनाने की मंजूरी दी थी।

रक्षा अधिग्रहण परिषद् (डीएसी)

☞ रक्षा अधिग्रहण परिषद् का गठन सैन्य सामान शीघ्रता से प्राप्त करने के लिए वर्ष 2001 में सरकार द्वारा किया गया था। इसकी अध्यक्षता रक्षा मंत्री द्वारा की जाती है। रक्षा अधिग्रहण परिषद् सैन्य सामान के अधिग्रहण के लिए दिशा-निर्देश भी जारी करता है।

स्रोत: पीआईबी

भारत ने स्वदेशी तकनीक से निर्मित पहली सेमिकंडक्टर चिप जारी की

चर्चा में क्यों?

☞ दूरसंचार सचिव अरूणा सुंदरराजन ने 27 फरवरी 2019 को नई दिल्ली में बंगलुरु स्थित सेमिकंडक्टर कंपनी "सिग्नलचिप" द्वारा 4जी/एलटीई और 5जी एनआर मॉडम्स के लिए भारत की प्रथम स्वदेशी तकनीक से निर्मित सेमिकंडक्टर चिप्स को जारी किया।

☞ इस चिप के जारी होने को भारत के लिए बेहद महत्वपूर्ण करार दिया जा रहा है। वर्तमान में केवल 8 कंपनियां और कुछ ही देश सेमिकंडक्टर चिप्स का निर्माण कर सकते हैं और ऐसे में स्वदेशी तकनीक से निर्मित चिप का जारी होना सही मायने में विश्व के लिए मेक इन इंडिया है। यह अग्रगामी कार्य उत्सर्जन की शिकायतों और पर्यावरण की बढ़ती चिंताओं के आलोक में बिल्कुल नई संरचना का मार्ग प्रशस्त करेगा।

☞ इस अवसर पर सिग्नलचिप द्वारा डिजाइन की गई चार चिप्स को जारी किया गया है:

1. एससीबीएम 3412: एकल डिवाइस में बेसबैंड और ट्रांसीवर सेक्शन्स सहित एकल चिप 4जी/एलटीई मॉडम
2. एससीबीएम 3404: सिंगल चिप 4X4 एलटीई बेसबैंड मॉडम
3. एससीआरएफ 3402: एलटीई के लिए 2X2 ट्रांसीवर
4. एससीआरएफ 4502: 5जीएनआर मानकों के लिए 2X2 ट्रांसीवर

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

विशेषताएं

- ये चिप्स आरएफ खंड 6 जीएचजेड तक के समस्त एलटीई/5जी-एनआर बैंड्स को कवर करेंगे।
- ये चिप्स भारत की अपनी उपग्रह नेविगेशन प्रणाली, एनएवीआईसी का उपयोग करके पोजीशनिंग का भी समर्थन करते हैं।
- मिश्रित मल्टी-स्टेंडर्ड सिस्टम ऑन चिप (एसओसी) लो-कॉस्ट इंडोर स्माल सेल्ज से हाई परफार्मेंस वायरलेस बेस स्टेशनों तक व्यापक रेंज वाले फॉर्म फैक्टर्स के लिए एक बेस स्टेशन चिपसेट के रूप में सेवाएं प्रदान कर सकता है।
- भारत 1.1 बिलियन से अधिक मोबाइल फोन उपयोगकर्ताओं के साथ विश्व में सर्वाधिक मोबाइल फोन इस्तेमाल होने वाले देशों में से एक है।
- ऐसे में सिग्नलचिप ने हाई परफार्मेंस और किफायती प्रणालियों का सृजन किया है जो नेटवर्क के घनीभवन या डेंसिफिकेशन को समर्थ बनाता है।
- एससीआरएफ 1401 पर निर्मित अगम्बे श्रृंखला: सिग्नलचिप द्वारा 2015 में निर्मित की 3जी/4जी और वाईफाई जैसे हाई परफार्मेंस वायरलेस मानकों के लिए भारत की पहली आरएफ ट्रांस-रिसीवर चिप है।

स्रोत: द हिंदू

भारतीय वैज्ञानिकों ने कवक की नई प्रजातियां खोजीं, कैंसर उपचार में लाभ का दावा

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में भारतीय वैज्ञानिकों ने अंटार्कटिका में कवक की नई प्रजातियों की तलाश की है. वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि इस कवक से ब्लड कैंसर का उपचार करने में सहायता मिल सकती है। इन खास कवक प्रजातियों से ब्लड कैंसर के इलाज में उपयोग होने वाले एंजाइम L-एस्पेरेजिनेज (L&asparaginase) का उत्पादन किया जा सकता है।
- राष्ट्रीय ध्रुवीय एवं समुद्री अनुसंधान केंद्र (NCPOR), गोवा और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद के वैज्ञानिकों ने अंटार्कटिका में कवक प्रजातियों के विभिन्न नमूने एकत्रित किये थे। इनमें शामिल लगभग 30 नमूनों में शुद्ध एल-एस्पेरेजिनेज पाया गया है.

मुख्य बिंदु

- एल-एस्पेरेजिनेज नामक एंजाइम का उपयोग एक्यूट लिम्फोब्लास्टिक ल्यूकेमिया नामक ब्लड कैंसर के उपचार की एंजाइम-आधारित कीमोथेरेपी में किया जाता है।
- वर्तमान में कीमोथेरेपी के लिये एल-एस्पेरेजिनेज का उत्पादन साधारण जीवाणुओं जैसे - एश्चेरीचिया कोलाई (Escherichia coli) और इरवीनिया क्राइसेंथेमी (Irveenia Kraisenthemi) से किया जाता है।
- वैज्ञानिकों के अनुसार अंटार्कटिका में खोजे गए कवक से शुद्ध एल-एस्पेरेजिनेज प्राप्त किया जा सकता है तथा सस्ते इलाज के साथ दोनों अन्य एंजाइमों से होने वाले दुष्प्रभावों को भी रोका जा सकता है।
- खोजी गई अंटार्कटिका कवक प्रजातियाँ अत्यंत ठंडे वातावरण में वृद्धि करने में सक्षम सूक्ष्मजीवों के अंतर्गत आती हैं।

महत्व

- एल-एस्पेरेजिनेज एंजाइम ब्लड कैंसर के इलाज में सबसे ज्यादा इस्तेमाल की जाने वाली कीमोथेरेपी दवाओं में से एक है। यह कैंसर कोशिकाओं में पाए जाने वाले प्रोटीन के संश्लेषण के लिये आवश्यक एस्पेरेजिन नामक अमीनो अम्ल की आपूर्ति को कम करता है। इस प्रकार यह एंजाइम कैंसर कोशिकाओं की वृद्धि और प्रसार को रोकता है।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस:28 फरवरी

चर्चा में क्यों?

☞ भारत में 28 फरवरी 2019 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया. वर्ष 2019 के लिए राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की थीम 'लोगों के लिए विज्ञान और विज्ञान के लिए लोग' (Science for the People and People for Science) है।

मुख्य तथ्य

☞ यह दिवस रमन प्रभाव की खोज के कारण मनाया जाता है। यह खोज भारतीय वैज्ञानिक सर चंद्रशेखर वेंकट रमन द्वारा 28 फरवरी 1928 को की गई थी।

☞ सीवी रमन को इस खोज के कारण वर्ष 1930 में नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। यह किसी भी भारतीय एवं एशियन व्यक्ति द्वारा जीता गया पहला नोबल पुरस्कार था।

उद्देश्य:

- राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाये जाने का उद्देश्य देश में विज्ञान के प्रति लोगों की रुचि में बढ़ोतरी करना है। इस दिन सभी विज्ञान संस्थानों, जैसे राष्ट्रीय एवं अन्य विज्ञान प्रयोगशालाएं, विज्ञान अकादमियों, स्कूल और कॉलेज तथा प्रशिक्षण संस्थानों में विभिन्न वैज्ञानिक गतिविधियों से संबंधित कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।
- परमाणु ऊर्जा को लेकर लोगों के मन में कायम भ्रातियों को दूर करना इसका मुख्य उद्देश्य है तथा इसके विकास के द्वारा ही हम समाज के लोगों का जीवन स्तर अधिक से अधिक खुशहाल बना सकते हैं।
- राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाने का उद्देश्य दैनिक जीवन में वैज्ञानिक अनुप्रयोग के महत्व के संदेशों को लोगों के बीच फैलाना, मानव कल्याण के लिए विज्ञान के क्षेत्र की सभी गतिविधियों, प्रयासों और उपलब्धियों को प्रदर्शित करना तथा विज्ञान के विकास के लिए इन मुद्दों पर चर्चा करके नई प्रौद्योगिकी को लागू करना हैं।
- विज्ञान और तकनीक को प्रसिद्ध करने के साथ ही देश के नागरिकों को इस क्षेत्र मौका देकर नई उंचाइयों को हासिल करना इसका मुख्य उद्देश्य है।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

☞ राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद (एनसीएसटीसी) ने वर्ष 1986 में 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के तौर पर मनाने के लिए केंद्र सरकार को कहा था। केंद्र सरकार ने यह प्रस्ताव स्वीकार किया और वर्ष 1986 में 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के तौर पर नामित किया गया। पहला राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 28 फरवरी 1987 को मनाया गया था।

रमन प्रभाव

- रमन प्रभाव एक ऐसी घटना है जिसमें प्रकाश की किरण को अणुओं द्वारा हटाए जाने पर वह प्रकाश अपने तरंगदैर्ध्य में परिवर्तित हो जाता है।
- प्रकाश की किरण जब एक धूलख़मुक्त, पारदर्शी रसायनिक मिश्रण से गुजरती है तो घटना (आनेवाली) बीम की दूसरी दिशा में प्रकाश का छोटा सा अंश उभरता है।
- इस बिखरे हुए प्रकाश का ज्यादातर हिस्से का तरंगदैर्ध्य अपरिवर्तित रहता है।
- हालांकि, छोटा सा अंश मूल प्रकाश की तरंगदैर्ध्य की तुलना में अलग तरंगदैर्ध्य वाला होता है और उसकी उपस्थिति रमण प्रभाव का परिणाम है।
- सीवी रमन ने इसकी खोज इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टिवेशन ऑफ साइंस, कोलकाता की प्रयोगशाला में काम करने के दौरान की थी।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

रेलवे ने नई वेबसाइट रेल दृष्टि लॉन्च की

चर्चा में क्यों?

☞ केंद्रीय रेल मंत्री पीयूष गोयल ने 25 फरवरी 2019 को यात्रियों के लिए एक डैशबोर्ड लॉन्च किया, जिसे वे ट्रेन के आने-जाने के समय पर निगरानी के साथ-साथ देश में कहीं भी ट्रेन से जुड़ी जानकारी हासिल कर सकेंगे।

☞ डैशबोर्ड को लॉन्च करते हुए पीयूष गोयल ने कहा कि अब लोग कहीं भी जाते वक्त मात्र एक स्वाइप पर भारतीय रेलवे से संबंधित किसी भी प्रकार की जानकारी को हासिल कर सकते हैं।

☞ यह डैशबोर्ड यात्रियों, रेलवे के अधिकारियों व स्टाफ के लिए बहुत मददगार साबित होगा। इसके जरिए यात्री रेलवे से जुड़ी हर तरह की जानकारी अब एक स्वाइप से प्राप्त कर सकेंगे।

मुख्य बिंदु:

- 'रेल-दृष्टि' डैशबोर्ड को रेलवे सूचना प्रणाली केन्द्र (सीआरआईएस) द्वारा विकसित किया गया है और इस पर https@@raildrishti-cris-org.पद के जरिए पहुंचा जा सकता है।
- इस वेबसाइट की मदद से रेल मंत्री मालगाड़ी और यात्री ट्रेनों से होने वाली कमाई, मालगाड़ियों में सामान की लदाई और उसे उतारने, ट्रेनों के समय पर पहुंचने, बड़ी परियोजनाओं, शिकायतों, ट्रेनों का लाइव स्टेटस, स्टेशनों की जानकारी और अन्य तमाम चीजें देख सकेंगे।
- ट्रेनों में परोसे जाने वाले खाने की गुणवत्ता से संबंधित लगातार शिकायतों के संबंध में डैशबोर्ड को भारतीय रेल खानपान एवं पर्यटन निगम (आईआरसीटीसी) के बेस रसोईघरों से भी जोड़ दिया गया है, जिससे लाइव वीडियो के जरिए आईआरसीटीसी रसोईघरों में क्या चल रहा है, उसकी निगरानी की जा सकेगी।
- डैशबोर्ड के लिए भारतीय रेलवे की संपूर्ण उपलब्धियों और विभिन्न राज्यों में रेलवे की उपलब्धियों को देखा जा सकता है।
- यह भारतीय रेलवे नेटवर्क पर यात्रियों के अनुभव बेहतर बनाने के लिए शुरू की गई कुछ प्रमुख पहलों की प्रगति की निगरानी करता है। यह काम से पहले और काम के बाद नेटवर्क में विभिन्न क्षेत्रों की छवि को दर्शाता है।
- भारतीय रेलवे के मालभाड़ा व्यवसाय के बारे में जानकारी तक पहुंच प्रदान करता है। यह ग्राहकों को अपने खेप पर नजर रखने में मदद करती है। यह विभिन्न टर्मिनलों और संबद्ध शीर्ष अधिकारियों, मांगपत्र स्थिति, वर्तमान मालभाड़ा दरों, रेक आवंटन योजना, लागू प्रतिबंधों आदि के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

यात्रियों का लाइव स्टेटस:

- डैशबोर्ड ट्रेनों में यात्रा कर रहे आरक्षित एवं अनारक्षित यात्रियों का लाइव स्टेटस भी मुहैया कराएगा. इसके साथ यह सुविधा किसी भी वक्त ट्रेनों की सटीक स्थिति भी मुहैया कराएगी। इस ई-दृष्टि का लक्ष्य रेलवे को अधिक पारदर्शी बनाना है. साथ ही यात्री रेल सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए सुझाव भी दे सकेंगे।

रेल सेवाओं को और बेहतर बनाने के मांगे सुझाव:

- रेल मंत्री ने कहा कि 'ई-दृष्टि' का लक्ष्य है कि भारतीय रेलवे को और अधिक पारदर्शी बनाया जाए. उन्होंने लोगों से रेल सेवाओं को बेहतर बनाने हेतु सुझाव भी मांगे हैं।
- इसे कंप्यूटर, मोबाइल और लैपटॉप किसी भी चीज से और कहीं से भी एक्सेस किया जा सकता है। इसकी मदद भारतीय रेल के कई विभागों के कार्यों की स्थिति की रियल टाइम बेसिस पर जानकारी मिल सकेगी।

यात्रियों को होगा फायदा:

- 'ई-दृष्टि' के तहत ट्रेन में मिलने वाले हर खाने के पैकेट पर बार कोर्ड और फोन नंबर लिखा होगा। उस बार कोड के जरिये आप लाइव देख सकते हैं कि खाना किस तरह के किचन में तैयार किया गया है और वहां कितनी साफ सफाई है। अगर आप उस किचन से संतुष्ट नहीं हैं तो raildrishti-org पद पर शिकायत कर सकते हैं।
- इस कार्यक्रम में कहा गया कि रेल लैंड डेवलपमेंट अथॉरिटी (Rail Land development Authority) और धारावी डेवलपमेंट अथॉरिटी (Dharavi development Authority) के बीच में समझौता हुआ है। समझौते के तहत रेलवे के अतिरिक्त 45 एकड़ जमीन धारावी डेवलपमेंट अथॉरिटी को दिए जाएंगे। धारावी डेवलपमेंट अथॉरिटी इस जमीन पर री-डेवलपमेंट का काम करेगी।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

फेम इंडिया के दूसरे चरण को मंजूरी

चर्चा में क्यों?

☞ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने 28 फरवरी 2019 को देश में इलेक्ट्रिक वाहनों के विनिर्माण और उनके तेजी से इस्तेमाल को बढ़ावा देने के लिए फेम इंडिया योजना के दूसरे चरण को मंजूरी दे दी है।

☞ कुल 10,000 करोड़ रुपये के परिव्यय वाली यह योजना 01 अप्रैल 2019 से तीन वर्षों के लिए शुरू की जाएगी. यह योजना मौजूदा 'फेम इंडिया वन' का विस्तारित संस्करण है. 'फेम इंडिया वन' योजना 01 अप्रैल 2015 को लागू की गई थी.

फेम इंडिया-II का उद्देश्य

♦ इस योजना का मुख्य उद्देश्य देश में इलेक्ट्रिक और हाईब्रिड वाहनों के तेजी से इस्तेमाल को बढ़ावा देना है। इसके लिए लोगों को इलेक्ट्रिक वाहनों की खरीद में शुरूआती स्तर पर प्रोत्साहन राशि देने तथा ऐसे वाहनों की चार्जिंग के लिए पर्याप्त आधारभूत ढांचा विकसित करना है। यह योजना पर्यावरण प्रदूषण और ईंधन सुरक्षा जैसी समस्याओं का समाधान करेगी।

फेम इंडिया योजना का विवरण

♦ बिजली से चलने वाली सार्वजनिक परिवहन सेवाओं पर जोर देना।

♦ इलेक्ट्रिक बसों के संचालन पर होने वाले खर्चों के लिए मांग आधारित प्रोत्साहन राशि मॉडल अपनाना, ऐसे खर्च राज्य और शहरी परिवहन निगमों द्वारा दिया जाना।

♦ सार्वजनिक परिवहन सेवाओं और वाणिज्यिक इस्तेमाल के लिए पंजीकृत 3 वॉट और 4 वॉट श्रेणी वाले इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए प्रोत्साहन राशि देना।

♦ दो वॉट श्रेणी वाले इलेक्ट्रिक वाहनों में मुख्य ध्यान निजी वाहनों पर केन्द्रित रखना।

♦ इस योजना के तहत 2 वॉट वाले 10 लाख, 3 वॉट वाले 5 लाख, 4 वॉट वाले 55,000 वाहन और 7000 बसों को वित्तीय प्रोत्साहन राशि देने की योजना है।

♦ नवीन प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन राशि का लाभ केवल उन्हीं वाहनों को दिया जाएगा, जिनमें अत्याधुनिक लिथियम आयोन या ऐसी ही अन्य नई तकनीक वाली बैट्रियां लगाई गई हों।

♦ योजना के तहत इलेक्ट्रिक वाहनों की चार्जिंग के लिए पर्याप्त आधारभूत ढांचा उपलब्ध कराने का प्रस्ताव है इसके तहत महानगरों, 10 लाख से ज्यादा की आबादी वाले शहरों, स्मार्ट शहरों, छोटे शहरों और पर्वतीय राज्यों के शहरों में तीन किलोमीटर के अंतराल में 2700 चार्जिंग स्टेशन बनाने का प्रस्ताव हैं।

♦ बड़े शहरों को जोड़ने वाले प्रमुख राजमार्गों पर भी चार्जिंग स्टेशन बनाने की योजना है।

♦ ऐसे राजमार्गों पर 25 किलोमीटर के अंतराल पर दोनों तरफ भी ऐसे चार्जिंग स्टेशन लगाने की योजना है।

स्रोत: पीआईबी

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

वैज्ञानिकों ने GPS इस्तेमाल किए बिना चलने वाला 'पहला' रोबोट बनाया

चर्चा में क्यों?

☞ फ्रेंच वैज्ञानिकों ने पहला ऐसा रोबोट बनाने का दावा किया है जो बिना जीपीएस (GPS) इस्तेमाल किए आस-पास के वातावरण का निरीक्षण कर अपने बेस पर लौट सकता है।

मुख्य तथ्य

- यह रोबोट ऑप्टिकल कम्पास के जरिए दिशा और ऑप्टिकल मूवमेंट सेंसर की मदद से तय की गई दूरी निर्धारित करता है। बतौर वैज्ञानिक, यह रेगिस्तानी चींटियों की नैविगेशन क्षमता से प्रेरित है।
- वैज्ञानिकों के अनुसार, यह रोबोट अपने वातावरण को पहचान सकता है और बिना जीपीएस या नक्शे के चल सकता है. यह खोज स्वचालित वाहनों के परिचालन के लिए नये रास्ते खोल सकती है।
- फ्रेंच नेशनल सेंटर फॉर साइंटिफिक रिसर्च (सीएनआरएस) के अनुसंधानकर्ताओं ने 'एंटबोट' नामक इस रोबोट के डिजाइन के लिए रेगिस्तान में रहने वाली चींटियों से प्रेरणा ली।
- ये चींटियां रेगिस्तान में सीधी धूप में खाने की तलाश में सैकड़ों मीटर तक चल सकती हैं और उसी रास्ते से बिना भटके वापस आ सकती हैं।
- अनुसंधानकर्ताओं ने कहा कि नये 'एंटबोट' रोबोट में भी रेगिस्तानी चींटियों की रास्ते पहचानने की बेमिसाल क्षमता का अनुसरण किया गया है। इस रोबोट का वजन केवल 2.3 किलोग्राम हैं। यह रोबोट जटिल वातावरण में स्थानांतरित करने की अनुमति देता है।

जीपीएस (GPS) क्या है?

- जीपीएस (Global Positioning System) एक वैश्विक नौवहन उपग्रह प्रणाली है जिसका विकास संयुक्त राज्य अमेरिका के रक्षा विभाग ने किया है।
- इस प्रणाली ने 27 अप्रैल 1995 से पूरी तरह से काम करना शुरू कर दिया था. वर्तमान समय में जीपीएस का प्रयोग बड़े पैमाने पर होने लगा है।
- इस प्रणाली के प्रमुख प्रयोग नक्शा बनाने, जमीन का सर्वेक्षण करने, वाणिज्यिक कार्य, वैज्ञानिक प्रयोग, सर्विलैंस और ट्रेकिंग करने तथा जियोकैचिंग के लिये भी होते हैं।
- आरंभिक चरण में जीपीएस प्रणाली का प्रयोग सेना के लिए किया जाता था, लेकिन बाद में इसका प्रयोग नागरिक कार्यो में भी होने लगा।
- जीपीएस रिसीवर अपनी स्थिति का आकलन, पृथ्वी से ऊपर स्थित किये गए जीपीएस उपग्रहों के समूह द्वारा भेजे जाने वाले संकेतों के आधार पर करता है।
- एक बार जीपीएस प्रणाली द्वारा स्थिति का ज्ञात होने के बाद, जीपीएस उपकरण द्वारा दूसरी जानकारियां जैसे कि गति, ट्रेक, ट्रिप, दूरी, जगह से दूरी, वहां के सूर्यास्त और सूर्योदय के समय के बारे में भी जानकारी एकत्र कर लेता है। भारत में भी इस प्रणाली के प्रयोग बढ़ते जा रहे हैं।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

रोबोट क्या है?

- रोबोट एक आभासी या यांत्रिक (mechanical) कृत्रिम (artificial) एजेंट है। व्यवहारिक रूप से, यह प्राय: एक विद्युत यांत्रिकी निकाय होता है, जिसकी दिखावट और गति ऐसी होती है की लगता है जैसे उसका अपना एक इरादा और अपना एक अभिकरण है। रोबोट शब्द भौतिक रोबोट और आभासी (virtual) सॉफ्टवेयर एजेंट (software agent), दोनों को ही प्रतिबिंबित करता है।
- पहला रोबोट युनिमेट, 1961 में ठप्पा बनाने वाली मशीन से धातु के गर्म टुकड़ों को उठाकर उनके ढेर बनाने के लिए लगाया गया था। आज, वाणिज्यिक और औद्योगिक रोबोट व्यापक रूप से सस्ते में और अधि कसे अधिक सटीकता और मनुष्यों की तुलना में ज्यादा विश्वसनीयता के साथ प्रयोग में आ रहे हैं।
- रोबोट्स का प्रयोग व्यापक रूप से विनिर्माण (manufacturing), सभा और गठरी लादने, परिवहन, पृथ्वी और अन्तरिक्षीय खोज, सर्जरी, हथियारों के निर्माण, प्रयोगशाला अनुसंधान और उपभोक्ता और औद्योगिक उत्पादन के लिए किया जा रहा है।

स्रोत: द हिंदू

भारत ने 'क्विक रिएक्शन मिसाइल' का सफल परीक्षण किया

चर्चा में क्यों?

- भारत ने 26 फरवरी 2019 को जमीन से हवा में मार करने वाली क्विक रिएक्शन मिसाइल (QRSAM) का ओडिशा के तट से सफलतापूर्वक परीक्षण किया है।
- इस मिसाइल का निर्माण डीआरडीओ ने भारत इलेक्ट्रानिक लिमिटेड और भारत डायनामिक लिमिटेड के साथ मिलकर भारतीय सेना के लिए किया है। इस मिसाइल को भारतीय रक्षा पंक्ति में बेहद अहम और खास माना जा रहा है।

क्विक रिएक्शन मिसाइल की विशेषताएं

- हर मौसम में काम करने वाली इस स्वदेशी मिसाइल की रेंज 25 से 30 किलोमीटर है, जो तुरंत टारगेट को ध्वस्त कर सकती है।
- परीक्षण को पूरी तरह से सफल बताते हुए डीआरडीओ के एक अधिकारी ने कहा कि परीक्षण के दौरान मिशन के उद्देश्यों को पूरा किया गया।
- अलग-अलग ऊंचाइयों और स्थितियों से दो मिसाइलों का परीक्षण किया गया।
- दो मिसाइलों का परीक्षण भिन्न परिस्थितियों में किया गया और दोनों कामयाब रहे। इस दौरान मिसाइल की ऐरोडायनामिक्स, प्रोपल्सन, ढांचागत प्रदर्शन और उच्च मैनुवर क्षमता को परखा गया।
- परीक्षण के दौरान मिसाइल के रेडार, इलेक्ट्रोआप्टिकल सिस्टम्स, टेलीमीट्री, आदि के परीक्षण पैमाने सटीक आंके गये।
- इस मिसाइल के सफल परीक्षण के बाद भारतीय सेना जमीन से ही किसी भी संदिग्ध एयरक्राफ्ट, हेलीकॉप्टर, एंटी-शिप मिसाइल, यूएवी, बैलेस्टिक मिसाइल, क्रूज मिसाइल और कॉम्बैट जेट को हवा में ही नेस्तानाबूत कर सकती है।
- इससे पहले डीआरडीओ ने लंबी दूरी की जमीन से हवा में मार करने वाली बराक-8 मिसाइल का सफल परीक्षण किया था।
- बराक-8 मिसाइल को नेवल शिप से लॉन्च किया जा सकता है। यह परीक्षण भी ओडिशा के तटवर्ती इलाकों में किया गया था।

QRSAM क्या है?

- QRSAM अथवा क्विक रिएक्शन मिसाइल डीआरडीओ तथा भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड एवं भारत डायनामिक्स द्वारा भारतीय सेना के लिए बनाई गई है।
- इस मिसाइल का पहला परीक्षण 4 जून 2017 को किया गया था और दूसरा सफल परीक्षण 3 जुलाई 2017 को किया गया था। जमीन से हवा में मार कर सकने के कारण यह भारतीय थल सेना के लिए एक अहम रक्षा उपकरण है।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

पहली सेमी हाईस्पीड ट्रेन वंदे भारत एक्सप्रेस

चर्चा में क्यों?

☞ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 फरवरी 2019 को देश की सबसे तेज ट्रेन 'वंदे भारत' एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से रवाना किया।

मुख्य तथ्य

- वंदे भारत एक्सप्रेस भारत की पहली सेमी हाई स्पीड ट्रेन है. यह ट्रेन अधिकतम 160 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चल सकती है।
- वंदे भारत एक्सप्रेस का निर्माण 'मेक इन इंडिया' पहल के तहत चेन्नई में इंटिग्रल कोच फैक्टरी (आईसीएफ) में किया गया है। इसका उद्देश्य यात्रियों को बिल्कुल नया यात्रा अनुभव प्रदान करना है।

वंदे भारत एक्सप्रेस की खासियत:

- वंदे भारत को ट्रेन 18 के नाम से भी जाना जाता है। इसे चेन्नई की इंटिग्रल कोच फैक्ट्री में 100 करोड़ रु. की लागत से 18 महीने में तैयार कर लिया गया।
- इन कोच में दिव्यांग जनों के लिए विशेष रूप से दो बाथरूम और बेबी केयर के लिए विशेष स्थान दिया गया है।
- इस ट्रेन की पूरी बॉडी खघस एल्यूमिनियम की बनी है यानी यह ट्रेन वजन में हल्की भी होगी।
- इसे तुरंत ही ब्रेक लगाकर रोकना आसान है और इसके तुरंत ही तेज गति भी दी जा सकती है।
- ट्रेन के कोच में स्पेन से मंगाई गई विशेष सीट लगी है, जिन्हें जरूरत पर 360 डिग्री तक घुमाया जा सकता है।
- इस ट्रेन में यात्रियों के लिए दूसरे आम ट्रेनों के मुकाबले ज्यादा सुविधायें मिलेंगी. जिसमें आपको तेज गति, बेहतर सुविधा और सुरक्षा शामिल है।
- हर कोच में छह सीसीटीवी कैमरा लगाए गए हैं। ड्राइवर के कोच में एक सीसीटीवी इंस्टॉल किया गया है, जहां से यात्रियों पर नजर रखी जा सकती है।
- हर कोच में दो इमर्जेंसी स्विच लगाए गए हैं। आपात स्थिति में इसे दबाकर मदद ली जा सकती है।
- वंदे भारत के दरवाजे मेट्रो ट्रेनों की तरह स्वचालित होंगे। यानी, प्लैटफॉर्म पर ही खुलेंगे और बंद हो जाएंगे।
- बाहरी शोर से बचाने के लिए ट्रेन को काफी हद तक साउंड प्रूफ बनाया गया है।
- इस ट्रेन की एक अन्य खास बात इसकी रीजनरेटिव ब्रेकिंग प्रणाली है जिससे 30 प्रतिशत बिजली की बचत होती है।
- इंटीग्रल कोच फैक्ट्री में निर्मित इस ट्रेन के ऐसे ही सौ और सेट तैयार करने की योजना है।
- ट्रेन में 16 कोच मिलेगें जिसमें दो एग्जीक्यूटिव और 14 नॉन एग्जीक्यूटिव कोच दिए गए हैं।
- एग्जीक्यूटिव कोच में 56 यात्रियों की बैठने की क्षमता दी गई है। वही नॉन एग्जीक्यूटिव प्रत्येक कोच में 78 लोगों के बैठने की सुविधा दी गई है।
- इस ट्रेन में वाई-फाई के साथ हर कोच में टीवी स्क्रीन भी मिलेगा। जिससे यात्री मनोरंजन का भरपूर आनंद ले सकते है।
- इसमें सीट के साथ आपको टेबल भी मिलेगी और दरवाजे भी ऑटोमैटिक होगें। ट्रेन की सीट शानदार तरीके से डिजाइन की गई है।

भारतीय रेलवे:

- भारतीय रेलवे दुनिया के सबसे बड़े रेल नेटवर्कों में से एक है, जो उत्तर से दक्षिण तक देश को पार करती है। यह 9,000 से अधिक ट्रेनों का संचालन करती है और प्रतिदिन 23 मिलियन यात्री इन ट्रेनों में सफर करते हैं।
- भारत में भारतीय रेल का सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण स्थान है. सुस्थापित रेल प्रणाली देश के दूरतम स्थानों से लोगों को एक साथ मिलाती है और व्यापार करना, दृश्य दर्शन, तीर्थ और शिक्षा संभव बनाती है।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारतीय वायुसेना को मिले 4 चिनूक हेलिकॉप्टर

चर्चा में क्यों?

☞ अमेरिकी एयरोस्पेस कंपनी बोईंग ने 10 फरवरी 2019 को भारतीय वायुसेना के लिए चार चिनूक सैन्य हेलिकॉप्टरों की आपूर्ति गुजरात में मुंद्रा बंदरगाह पर की।

मुख्य तथ्य

- भारत को कुल 15 और चिनूक हेलिकॉप्टर प्राप्त होंगे। भारत के लिए रणनीतिक नजरिए से चिनूक हेलिकॉप्टर इसलिए महत्वपूर्ण है कि इनके आने से एयरफोर्स की क्षमता और बढ़ जाएगी।
- यह हेलिकॉप्टर ऊंचे पहाड़ी क्षेत्रों में हवित्जर तोपों को माल पहुंचाने में मददगार साबित होगा।
- गौरतलब है कि भारत ने बोईंग के साथ 22 अपाचे हेलिकॉप्टर और 15 चिनूक हेलिकॉप्टर खरीदने की प्रक्रिया को सितम्बर 2015 में अंतिम रूप दिया था।

चिनूक हेलिकॉप्टर की विशेषताएं

- चिनूक हेलीकॉप्टर अमेरिकी सेना का विशेष हेलिकॉप्टर है। इसी चिनूक हेलीकॉप्टर की मदद से अमेरिकी सेना ने लादेन को मार गिराया था।
- वियतनाम और इराक के युद्धों में इसे शामिल किया गया था। यह दो रोटर वाला हैवीलिफ्ट हेलीकॉप्टर है।
- चिनूक बहुद्देशीय, वर्टिकल लिफ्ट प्लेटफॉर्म हेलिकॉप्टर है, जिसका इस्तेमाल सैनिकों, हथियारों, उपकरण और ईंधन को ढोने में किया जाता है।
- इसका इस्तेमाल मानवीय और आपदा राहत अभियानों में भी किया जाता है।
- राहत सामग्री पहुंचाने और बड़ी संख्या में लोगों को बचाने में भी इसका उपयोग किया जा सकता है।
- यह 9.6 टन वजन उठा सकता है, जिससे भारी मशीनरी, तोप और बख्तरबंद गाड़ियां लाने-ले जाने में सक्षम है।
- जहां अपाचे को दुनिया के सबसे अच्छे लड़ाकू हेलिकॉप्टर्स में गिना जाता है, वहीं, चिनूक हेलिकॉप्टर बहुत ऊंचाई पर उड़ान भरने में सक्षम है।
- भारत अपाचे का इस्तेमाल करने वाला 14वां और चिनूक को इस्तेमाल करने वाला 19वां देश होगा

भारत के लिए महत्व

- भारतीय वायुसेना के नजरिए से देखें तो रणनीतिक दृष्टि से यह काफी फायदेमंद साबित हो सकता है। भारत के पड़ोसी देशों चीन और पाकिस्तान की ओर से जिस प्रकार का माहौल बनता है उसमें चिनूक और अपाचे हेलीकॉप्टर्स भारतीय वायुसेना के लिए काफी अहम माने जा रहे हैं।
- चिनूक हेलीकॉप्टर्स की मदद से सीमावर्ती इलाकों में सड़क निर्माण की सामाग्री आसानी से पहुंचायी जा सकती है, जिससे भारतीय सीमाओं पर ढांचागत विकास में तेजी आएगी। साथ ही अपाचे हेलिकॉप्टर सैन्य दृष्टि से काफी उत्तम माने जा रहे हैं।

स्रोत: *द हिंदू*

भारत का 40वां संचार उपग्रह जीसैट-31 सफलतापूर्वक प्रक्षेपित

चर्चा में क्यों?

☞ भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने फ्रेंच गुएना के अंतरिक्ष केंद्र से अपने 40वें संचार उपग्रह जीसैट-31 का 05 फरवरी 2019 को सफल प्रक्षेपण किया। इसरो द्वारा जारी जानकारी के अनुसार उपग्रह की आयु 15 वर्ष है।

☞ यह कक्षा के अंदर मौजूद कुछ उपग्रहों पर संचालन संबंधी सेवाओं को जारी रखने में मदद मुहैया करेगा और जियोस्टेशनरी कक्षा में केयू-बैंड ट्रांसपोंडर की क्षमता बढ़ायेगा। यह उपग्रह 2,535 किलोग्राम वजनी है जिसे फ्रेंच गुएना के कुरू से रॉकेट एरिएन-5 (वी ए 247) के माध्यम से प्रक्षेपित किया गया है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

जीसैट-31 संचार उपग्रह के लाभ

- अंतरिक्ष एजेंसी इसरो के मुताबिक, उपग्रह जीसैट-31' को इसरो के परिष्कृत आइ-2 के बेस पर स्थापित किया गया है।
- यह इसरो के पूर्ववर्ती इनसैट/जीसैट उपग्रह श्रेणी के उपग्रहों का उन्नत रूप है।
- यह उपग्रह भारतीय भू-भाग और द्वीप को कवरेज प्रदान करेगा।
- इसरो ने यह भी कहा है कि जीसैट-31 का इस्तेमाल सहायक वीसैट नेटवर्क, टेलीविजन अपलिंक्स, डिजिटल उपग्रह समाचार जुटाने, डीटीएच टेलीविजन सेवाओं, सेलुलर बैक हॉल संपर्क और इस तरह के कई कार्यों में किया जायेगा।
- यह उपग्रह अपने व्यापक बैंड ट्रांसपोंडर की मदद से अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर के विशाल समुद्री क्षेत्र के ऊपर संचार की सुविधा के लिये विस्तृत बीम कवरेज प्रदान करेगा।

संचार उपग्रह

- दूरसंचार के प्रयोजनों के लिए संचार उपग्रह अंतरिक्ष में तैनात एक कृत्रिम उपग्रह है। आधुनिक संचार उपग्रह भू-स्थिर कक्ष, दीर्घवृत्ताकार कक्ष और पृथ्वी के निचले (ध्रूवीय और गैर-ध्रूवीय) कक्ष सहित विभिन्न प्रकार के परिक्रमा-पथों का उपयोग करते हैं। निश्चित सेवाओं के लिए, संचार उपग्रह माइक्रोवेव रेडियो प्रसारण तकनीक उपलब्ध कराते हैं।
- उनका इस्तेमाल मोबाइल अनुप्रयोगों, जैसे जहाज, वाहनों, विमानों और हस्तचालित टर्मिनलों तथा टी.वी. और रेडियो प्रसारण के लिए होता है, जहां केबल जैसे अन्य प्रौद्योगिकियों का अनुप्रयोग अव्यावहारिक या असंभव है।
- भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह (इन्सैट) प्रणाली, भूस्थिर कक्षा में स्थापित नौ प्रचलनात्मक संचार उपग्रहों सहित एशिया-पेसिफिक क्षेत्र में सबसे बडे घरेलू संचार उपग्रहों में से एक है।
- इन्सैट-1 बी से शुरूआत करते हुए इसकी स्थापना 1983 में की गई। इसने भारत के संचार क्षेत्र में एक महत्वतपूर्ण क्रांति की शुरूआत की तथा बाद में भी इसे बरकरार रखा. वर्तमान में प्रचलनात्मक संचार उपग्रह है - इन्सैट-3ए, इन्सैट-3सी, इन्सैट-3ई, इन्सैट-4 ए, इन्सैट-4 सी.आर., जीसैट-8, जीसैट-10 तथा जीसैट-12 आदि।

स्रोत: द हिंदू

राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स नीति 2019 को स्वीकृति

चर्चा में क्यों?

- केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने 19 फरवरी 2019 को इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा प्रस्तावित राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स नीति 2019 (एनपीई 2019) को अपनी स्वीकृति दे दी। यह बैठक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में हुई।
- राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स नीति 2019 (एनपीई 2019) ने राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स नीति 2012 (एनपीई 2012) का स्थान लिया है. देश में चिप निर्माण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नई नीति में सावरेन पेटेंट फंड स्थापित करने का प्रस्ताव किया गया है।

एनपीई 2019 का उद्देश्य:

- इस नीति में चिपसेटों सहित महत्वपूर्ण घटकों को देश में विकसित करने की क्षमताओं को प्रोत्साहित कर और विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने हेतु उद्योग के लिए अनुकूल माहौल बना कर भारत को 'इलेक्ट्रॉनिक्स सिस्टम डिजाइन एंड मैन्युफैक्चरिंग (ईएसडीएम)' के एक वैश्विक केन्द्र के रूप में स्थापित करने की परिकल्पना की गई है।

एनपीई 2019 से संबंधित मुख्य तथ्य:

- वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी ईएसडीएम सेक्टर के लिए अनुकूल माहौल बनाया जाएगा। ईएसडीएम की समूची मूल्य श्रृंखला (वैल्यू चेन) में घरेलू विनिर्माण और निर्यात को बढ़ावा दिया जाएगा।
- प्रमुख इलेक्ट्रॉनिक कलपुर्जो के विनिर्माण के लिए प्रोत्साहन एवं सहायता दी जाएगी।
- ऐसी मेगा परियोजनाओं के लिए प्रोत्साहनों का विशेष पैकेज दिया जाएगा, जो अत्यंत हाई-टेक हैं और जिनमें भारी-भरकम निवेश की जरूरत है। इनमें सेमी कंडक्टर सुविधाएं, डिस्प्ले फैब्रिकेशन इत्यादि शामिल हैं।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

- नई यूनिटों को बढ़ावा देने और वर्तमान यूनिटों के विस्तारीकरण हेतु उपयुक्त योजनाएं और प्रोत्साहन देने से जुड़ी व्यवस्थाएं बनाई जाएंगी।
- इलेक्ट्रॉनिक्स कअ` सभी उप-क्षेत्रों में उद्योग की अगुवाई में अनुसंधान एवं विकास और नवाचार को बढ़ावा दिया जाएगा।
- इनमें बुनियादी या जमीन स्तर के नवाचार और उभरते प्रौद्योगिकी क्षेत्रों जैसे कि 5जी, आईओटी/सेंसर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), मशीन लर्निंग, वर्चुअल रियल्टी (वीआर), ड्रोन, रोबोटिक्स, एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग, फोटोनिक्स, नैनो आधारित उपकरणों इत्यादि के क्षेत्र में प्रारंभिक चरण वाले स्टार्ट-अप्स भी शामिल हैं।
- कुशल श्रमबल की उपलब्धता में उल्लेखनीय वृद्धि के लिए प्रोत्साहन और सहायता दी जाएगी। इसमें कामगारों का कौशल फिर से सुनिश्चित करना भी शामिल है।
- फैबलेस चिप डिजाइन उद्योग, मेडिकल इलेक्ट्रॉनिक उपकरण उद्योग, ऑटोमोटिव इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग और मोबिलिटी एवं रणनीतिक इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग के लिए पावर इलेक्ट्रॉनिक्स पर विशेष जोर दिया जाएगा।
- ईएसडीएम क्षेत्र में आईपी के विकास एवं अधिग्रहण को बढ़ावा देने के लिए सॉवरेन पेटेंट फंड (एसपीएफ) बनाया जाएगा।
- राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा व्यवस्था को बेहतर करने के लिए विश्वसनीय इलेक्ट्रॉनिक्स मूल्य श्रृंखला (वैल्यू चेन) से जुड़ी पहलों को बढ़ावा दिया जाएगा।

कार्यान्वयन रणनीति:

- इस नीति से इसमें परिकल्पित रोडमैप के अनुसार ही देश में ईएसडीएम सेक्टर के विकास के लिए अनेक योजनाओं, पहलों, परियोजनाओं एवं उपायों को मूर्त रूप देने का मार्ग प्रशस्त होगा।

लक्ष्य:

- वर्ष 2025 तक 400 अरब अमेरिकी डॉलर (लगभग 26,00,000 करोड़ रुपये) का कारोबार हासिल करने हेतु आर्थिक विकास के लिए ईएसडीएम की समूची वैल्यू चेन में घरेलू विनिर्माण और निर्यात को बढ़ावा दिया जाएगा।
- इसमें वर्ष 2025 तक 190 अरब अमेरिकी डॉलर (लगभग 13,00,000 करोड़ रुपये) मूल्य के एक अरब (100 करोड़) मोबाइल हैंडसेटों का लक्षित उत्पादन शामिल होगा।
- इसमें निर्यात के लिए 100 अरब अमेरिकी डॉलर (लगभग 7,00,000 करोड़ रुपये) मूल्य के 600 मिलियन (60 करोड़) मोबाइल हैंडसेटों का उत्पादन करना भी शामिल है।

प्रभाव:

- एनपीई 2019 को कार्यान्वित करने पर संबंधित मंत्रालयों/विभागों के परामर्श से देश में ईएसडीएम सेक्टर के विकास के लिए अनेक योजनाओं, पहलों, परियोजनाओं इत्यादि को मूर्त रूप देने का मार्ग प्रशस्त होगा।
- इससे भारत में निवेश एवं प्रौद्योगिकी का प्रवाह सुनिश्चित होगा, जिससे देश में ही निर्मित इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के ज्यादा मूल्य वर्धन और देश में इलेक्ट्रॉनिक्स हार्डवेयर के अधिक उत्पादन के साथ-साथ उनके निर्यात का मार्ग भी प्रशस्त होगा। इसके अलावा बड़ी संख्या में रोजगार अवसर भी सृजित होंगे।

पृष्ठभूमि:

- राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स नीति 2012 (एनपीई 2012) के तत्वावधान में विभिन्न योजनाओं/कार्यक्रमों के कार्यान्वयन से एक प्रतिस्पर्धी भारतीय ईएसडीएम वैल्यू चेन से जुड़ी नींव सफलतापूर्वक मजबूत हो गई है। एनपीई 2019 में इस नींव को और मजबूत करने का प्रस्ताव किया गया है, ताकि देश में ईएसडीएम उद्योग के विकास की गति तेज की जा सके।

स्रोत: *द हिंदू*

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

नासा की हबल दूरबीन ने बौनी आकाशगंगा की खोज की

चर्चा में क्यों?

☞ नासा के अंतरिक्ष टेलिस्कोप हबल ने हाल ही में ब्रह्मांड में एक और आकाशगंगा का पता लगाया है लेकिन नासा का कहना है कि यह आकाशगंगा हमारी मौजूदा आकाशगंगा की तुलना में बौनी है। नासा के स्पेस टेलिस्कोप हबल से इस आकाशगंगा का अध्ययन किया गया जिसके बाद ही इसे बौना (Dwarf) कहा गया है।

☞ नई आकाशगंगा को बेदिन-1 (Bedin-1) नाम दिया गया है। रॉयल एस्ट्रॉनोमिकल सोसायटी लेटर्स जर्नल के मासिक नोटिस में प्रकाशित अध्ययन के मुताबिक हबल के एडवांस कैमरे का उपयोग कर अध्ययन करने पर पता चला कि सितारों का एक छोटा संग्रह दिखाई दे रहा था। इन तारों की चमक और तापमान का ध्यानपूर्वक विश्लेषण करने के बाद खगोलविदों ने यह निष्कर्ष निकाला कि ये तारे आकाशगंगा के तारामंडल का हिस्सा नहीं हैं बल्कि उससे करोड़ों प्रकाश वर्ष दूर स्थित हैं।

खोज के मुख्य बिंदु

- नासा के स्पेस टेलीस्कोप 'हबल' ने तीन करोड़ प्रकाश वर्ष दूर, हमारे ब्रह्मांड में पीछे की ओर मौजूद एक बौनी आकाशगंगा का पता लगाया है।
- शोधकर्त्ताओं ने तारों के गोल गुच्छे NGC 6752 के भीतर सफेद बौने तारों का अध्ययन करने के लिये स्पेस टेलीस्कोप 'हबल' का इस्तेमाल किया था।
- इस अध्ययन का उद्देश्य गोल तारामंडल की आयु का पता लगाने के लिये इन तारों का इस्तेमाल करना था, लेकिन इस प्रक्रिया में शोधकर्त्ताओं को बौनी आकाशगंगा मिली।
- गौरतलब है कि बौनी आकाशगंगा में दूसरी आकाशगंगाओं की तुलना में काफी कम तारे होते हैं।

बौनी (Dwarf) आकाशगंगा

☞ बौनी आकाशगंगाओं को उनके छोटे आकार, धूमिल, धूल की कमी आदि द्वारा परिभाषित किया जाता है। इनमें पुराने तारे मौजूद होते हैं। इस प्रकार की 36 आकाशगंगाएँ पहले से ही ज्ञात हैं जो आकाशगंगा के स्थानीय समूह में मौजूद हैं, जिनमें से 22 अपनी मिल्की वे की उपग्रह आकाशगंगाएँ हैं। तारों की विशेषताओं का अध्ययन करने के बाद शोधकर्ताओं ने इस आकाशगंगा की उम्र पता की है उन्होंने बताया कि यह बौनी आकाशगंगा लगभग 1300 करोड़ वर्ष पुरानी है। अर्थात यह लगभग उतनी ही पुरानी है जितना ब्रह्मांड पुराना है। वैज्ञानिकों का मानना है कि शुरुआत में ही यह अन्य आकाशगंगाओं से दूर हो गई होंगी और इसका विकास नहीं हुआ होगा। वैज्ञानिकों का मानना है कि यहां पर जीवन की संभावना बेहद कम है।

हबल स्पेस टेलिस्कोप

- हबल अंतरिक्ष दूरदर्शी (Hubble Space Telescope) वास्तव में एक खगोलीय दूरदर्शी है जो अंतरिक्ष में कृत्रिम उपग्रह के रूप में स्थित है।
- इसे 25 अप्रैल सन् 1990 में अमेरिकी अंतरिक्ष यान डिस्कवरी की मदद से इसकी कक्षा में स्थापित किया गया था।
- हबल स्पेस टेलिस्कोप को अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने यूरोपियन अंतरिक्ष एजेंसी के सहयोग से तैयार किया था।
- अमेरिकी खगोलविज्ञानी एडविन पोंवेल हबल के नाम पर इसे 'हबल' नाम दिया गया है। यह नासा की प्रमुख वेधशालाओं में से एक है।
- यह एकमात्र स्पेस टेलिस्कोप है, जिसे अंतरिक्ष में ही सर्विसिंग के हिसाब से डिजाइन किया गया है।

स्रोतः द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारत-बांग्लादेश संयुक्त सैन्य अभ्यास "सम्प्रीति" - 2019

चर्चा में क्यों?

☞ भारत और बांग्लादेश के बीच रक्षा सहयोग के हिस्से के रूप में 02 मार्च से 15 मार्च 2019 तक बांग्लादेश के तंगेल में दोनों देशों का संयुक्त सैन्य अभ्यास "सम्प्रीति" - 2019 संचालित किया जाएगा।

☞ यह आठवां अभ्यास होगा। दोनों देश वैकल्पिक रूप से संयुक्त अभ्यास करते हैं। यह अभ्यास भारत और बंगलादेश के बीच महत्वपूर्ण द्विपक्षीय रक्षा सहयोग का प्रयास है। इस दौरान संयुक्त राष्ट्र के निर्देश के तहत उग्रवाद और आतंकवाद से निपटने में रणनीतिक कार्रवाई का भी अभ्यास किया जाएगा।

उद्देश्य:

- इस अभ्यास का उद्देश्य भारत और बंगलादेश की सेनाओं के बीच अंतर-संचालन और सहयोग के पक्षों को मजबूत और व्यापक बनाना है।
- इस युद्धाभ्यास का मुख्य उद्देश्य भारत और बांग्लादेश की सेनाओं के बीच पारस्परिक सहयोग के पहलुओं को मजबूत बनाना और उनका विस्तार करना है, साथ ही संयुक्त राष्ट्र के अधिदेश के अंतर्गत विद्रोही और आंतकवादी गतिविधियों से निपटने के लिए मिलकर कार्य करना है।
- इस अभ्यास में आतंकवाद विरोधी कार्रवाइयों से निपटने में रणनीतिक स्तर की कार्रवाई होगा और यह संयुक्त राष्ट्र की व्यवस्था के अनुसार होगा।
- यह अभ्यास एक दूसरे की रणनीति को समझने के अतिरिक्त दोनों देशों की आपसी साझेदारी, मजबूत सैन्य विश्वास और सहयोग का आधार रखेगा।

संयुक्त सैन्य अभ्यास "सम्प्रीति" - 2019:

- यह सैन्य अभ्यास एक साल बांग्लादेश और दूसरे साल भारत में होता है। इसका मकसद दोनों पड़ोसी देशों की सेनाओं के मध्य सकारात्मक संबंध बनाना है।
- दोनों देशों के बीच सैन्य संबंधों को बेहतर बनाने के लिए इसे हर साल किया जाता है। आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में दोनों के बीच सहयोग को बढ़ाना भी मकसद है।
- यह अभ्यास वर्ष 2016 में बंगलादेश में ढाका के समीप तंगाइल में तथा वर्ष 2015 में पश्चिम बंगाल के बिन्नागुड़ी में आयोजित किया गया था। पहला अभ्यास वर्ष 2010 में असम के जोरहाट में हुआ था।

भारत-बांग्लादेश संबंध:

- भारत और बांग्लादेश दक्षिण एशियाई पड़ोसी देश हैं और आमतौर पर उन दोनों के बीच संबंध मैत्रीपूर्ण रहे हैं, हालांकि कभी-कभी सीमा विवाद होते हैं। बांग्लादेश की सीमा तीन ओर से भारत द्वारा ही आच्छादित है। ये दोनो देश सार्क, बिम्सटेक, हिंद महासागर तटीय क्षेत्रीय सहयोग संघ और राष्ट्रकुल के सदस्य हैं।
- विशेष रूप से, बांग्लादेश और पूर्व भारतीय राज्य जैसे पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा बंगाली भाषा बोलने वाले प्रांत हैं. भारत और बांग्लादेश अपने 68 साल पुराने द्विपक्षीय सीमा विवाद को पीछे छोड़ते हुए नया इतिहास रच रहे हैं।
- भारत और बांग्लादेश की सेनाओं के बीच युद्धाभ्यास सम्प्रीति से दोनों देशों की सेनाओँ के बीच न केवल संबंध मजबूत होते हैं, बल्कि दोनों सेनाओं के बीच आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

डिजिटल सिविलिटी इंडेक्स

चर्चा में क्यों?

☞ माइक्रोसॉफ्ट ने 05 फरवरी 2019 को 'सेफर इंटरनेट डे' पर तीसरा डिजिटल सिविलिटी इंडेक्स जारी किया। इस रिपोर्ट में माइक्रोसॉफ्ट ने कहा है कि भारत में ऑनलाइन शिष्टाचार (सिविलिटी) का स्तर बढ़ा है यानी इंटरनेट पर भारतीय अब तरीके से पेश आने लगे हैं।

☞ इस इंडेक्स के अनुसार भारत सहित पूरी दुनिया में इंटरनेट पर अब लोग सुलझे तरीके से व्यवहार कर रहे हैं। इसमें 18 से 34 साल के लोगों पर 22 देशों में किए गए सर्वे में भारत 7वें नंबर पर आया है। भारत का इंडेक्स जहां 59% था, वहीं ग्लोबल इंडेक्स 66% था। इस मामले में भारत ने अपनी स्थिति पहले के मुकाबले दो फीसदी ठीक है।

डिजिटल सिविलिटी इंडेक्स में भारत (सकारात्मक परिणाम)

- ऑनलाइन उत्पीड़न भारत में विश्व के अन्य देशों की तुलना में सबसे कम होता है। विश्व में जहां 18% प्रतिशत ऑनलाइन उत्पीड़न के मामले दर्ज होते हैं वहीँ भारत में यह आंकड़ा महज 10% है।
- इसी प्रकार भारत में इन्टरनेट पर अभद्र भाषा का उपयोग करने वालों की संख्या 13% है जबकि बाकी विश्व में यह आंकड़ा 16% है।
- भारत में किसी व्यक्ति अथवा निजी जानकारी को सर्च करने का प्रतिशत महज 10% है जबकि बाकी विश्व में यह आंकड़ा 12% है।
- भारत में इन्टरनेट के माध्यम से होने वाले यौन उत्पीड़न की दर भी अन्य देशों के मुकाबले कम है। भारत में यह आंकड़ा 25% है जबकि बाकी विश्व में इसकी संख्या 30% है।
- विश्व भर में 18 वर्ष से अधिक 67% लोगों को ऑनलाइन रिस्क का सामना करना पड़ता है जबकि अवयस्क लोगों में यह आंकड़ा 62% है।

डिजिटल सिविलिटी इंडेक्स में भारत (नकारात्मक परिणाम)

- विश्व के अन्य देशों की तुलना में भारत में इन्टरनेट के माध्यम से आपातकालीन नंबरों पर सबसे अधिक झूठी कॉल की जाती है। भारत में 4% जबकि विश्व भर में 3% इस प्रकार की कॉल की जाती है।
- भारत में बिना जान पहचान के नंबरों पर कॉल करने की संख्या 46% है जो बाकी विश्व में 43% है।
- भारतीय इन्टरनेट पर किसी दूसरे व्यक्ति की प्रतिष्ठा खराब करने में सबसे आगे हैं, भारतीयों को इस श्रेणी में 9% जबकि बाकी विश्व को 8% अंक मिले हैं।
- भारत में 64% पुरुषों को इन्टरनेट परविभिन्न प्रकार के खतरों का सामना करना पड़ता है जबकि महिलाओं के मामले में यह आंकड़ा 61% है।

भारत में डिजिटल सिविलिटी बनाने हेतु माइक्रोसॉफ्ट के सुझाव

- माइक्रोसॉफ्ट द्वारा जारी डिजिटल सिविलिटी इंडेक्स द्वारा भारत में स्थिति में और सुधार लाये जाने हेतु कुछ सुझाव भी दिए गये हैं। माइक्रोसॉफ्ट के अनुसार सकारात्मक परिणाम वाले माहौल बनाये जाने की आवश्यकता है। संस्थानों के लिए कोड ऑफ कंडक्ट लागू किये जाने चाहिए। पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप बढ़ाकर भी डिजिटल सिविलिटी बढ़ाई जा सकती है।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

थाईलैंड में सैन्य अभ्यास कोबरा गोल्ड 2019 आरंभ

चर्चा में क्यों?

☞ थाईलैंड और संयुक्त राज्य अमेरिका का वार्षिक कोबरा गोल्ड सैन्य अभ्यास थाईलैंड की मेजबानी में शुरू हो गया। कोबरा गोल्ड थाईलैंड और संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा एक वार्षिक बहुपक्षीय सैन्य अभ्यास है।

☞ इसे एशिया–प्रशांत क्षेत्र का सबसे बड़ा सैन्य युद्धाभ्यास माना जाता है। इसमें 29 देशों से लगभग 10,000 सैनिक हिस्सा ले रहे हैं। इस अभ्यास का समापन 22 फरवरी को होगा. इस अभ्यास के कारण प्राकृतिक आपदा के दौरान अनुक्रिया में सेना के समन्वय में वृद्धि हुई है।

उद्देश्य:

- अमेरिका और थाईलैंड की इस पहल का उद्देश्य सशस्त्र सेनाओं के बीच समन्वय को बढ़ावा देना है। इस अभ्यास का उद्देश्य सहयोग और अंतर–संचालन को मजबूत करना भी है।

मुख्य तथ्य

- थाईलैंड और संयुक्त राज्य अमेरिका के अलावा सात अन्य राष्ट्र सक्रिय सिंगापुर, जापान, चीन, भारत, इंडोनेशिया, मलेशिया और दक्षिण कोरिया इसके सक्रिय भागीदार हैं। इस सैन्य अभ्यास में अमेरिका के सबसे अधिक सैनिक भाग लेते हैं।
- यह बहुपक्षीय सैन्य अभ्यास का 38वां संस्करण है। प्रत्येक वर्ष इसका आयोजन थाईलैंड में होता है।
- भारत इस अभ्यास में 14 सदस्यीय दल के साथ हिस्सा ले रहा है।
- कोबरा गोल्ड में तीन प्रमुख प्रशिक्षण सैन्य क्षेत्र प्रशिक्षण, मानवीय सहायता और आपदा राहत प्रशिक्षण शामिल हैं।
- भारत वर्ष 2016 में पहली बार इस युद्ध अभ्यास में शामिल हुआ था जबकि चीन इस युद्ध अभ्यास में पहली बार वर्ष 2015 में शामिल हुआ था।

स्रोत: द हिंदू

राष्ट्रीय सॉफ्टवेयर उत्पाद नीति को मंजूरी

चर्चा में क्यों?

☞ केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 28 फरवरी 2019 को राष्ट्रीय सॉफ्टवेयर उत्पाद नीति को मंजूरी प्रदान की है। इस नीति का उद्देश्य देश को सॉफ्टवेयर उत्पाद विकास का प्रमुख केंद्र बनाना है। केंद्र सरकार का कहना है कि इससे वर्ष 2025 तक 65 लाख नौकरियों का सृजन होगा।

☞ भारत का सूचना प्रौद्योगिकी कारोबार 168 अरब डॉलर का है। इसमें अधिकतर हिस्सेदारी सेवाओं की है जबकि इसमें सॉफ्टवेयर उत्पादों का हिस्सा कम है। यह मात्र 7.1 अरब डॉलर है। अधिकतर सॉफ्टवेयर उत्पाद आयात किए जाते हैं। यही वजह है कि सॉफ्टवेयर उत्पाद नीति को 2025 तक देश को सॉफ्टवेयर उत्पाद क्षेत्र में एक बड़ा केंद्र बनाने का लक्ष्य लेकर तैयार किया गया है।

क्रियान्वयन रणनीति और लक्ष्य

- इस नीति के अंदर जिस रूपरेखा की परिकल्पना की गई है उससे देश में सॉफ्टवेयर उत्पाद क्षेत्र के विकास के लिए विभिन्न योजनाओं, पहलों, परियोजनाओं और तौर–तरीकों के सूत्रीकरण की राह बनेगी।
- सॉफ्टवेयर उत्पादों पर राष्ट्रीय नीति (एनपीएसपी–2019) के सपने को हासिल करने के लिए इस नीति में निम्नलिखित पांच मिशन रखे गए हैं–
- बौद्धिक संपदा (आईपी) से संचालित होने वाले एक स्थायी भारतीय सॉफ्टवेयर उत्पाद उद्योग के निर्माण को प्रोत्साहित करना जिससे 2025 तक वैश्विक सॉफ्टवेयर उत्पाद बाजार में भारत की हिस्सेदारी में दस गुना बढ़ोतरी तक पहुंचा जा सके।
- सॉफ्टवेयर उत्पाद उद्योग में 10,000 प्रौद्योगिकी स्टार्टअप को पोषित करना जिसमें टीयर–2 और टीयर–3 नगरों व शहरों में ऐसे 1000 प्रौद्योगिकी स्टार्टअप भी शामिल हैं और 2025 तक सीधे या अप्रत्यक्ष तौर पर 35 लाख लोगों के लिए रोजगार निर्मित करना।
- सॉफ्टवेयर उत्पाद उद्योग के लिए एक प्रतिभा समूह का निर्माण करना। इसके लिए ये किया जाएगा – (क) 1,000,000 सूचना प्रौद्योगिकी पेशेवरों को अतिरिक्त कुशलताओं से सुसज्जित करना (ख) 100,000 स्कूल और कॉलेज विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना, और (ग) 10,000 विशेषीकृत पेशेवरों का निर्माण करना जो नेतृत्व प्रदान कर सकें।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

- एकीकृत आईसीटी आधारभूत ढांचे, मार्केटिंग, इनक्यूबेशन, अनुसंधान व विकास / परीक्षण मंच और परामर्श सहयोग वाले 20 क्षेत्रवार व रणनीतिक रूप से स्थित सॉफ्टवेयर उत्पाद विकास क्लस्टर विकसित करते हुए एक क्लस्टर आधारित नवाचार संचालित पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना।
- इस नीति की योजना और कार्यक्रमों पर निगरानी रखने और उन्हें विकसित करने की दिशा में राष्ट्रीय सॉफ्टवेयर उत्पाद मिशन की स्थापना की जाएगी जिसमें सरकार, शिक्षा समुदाय और उद्योग की भागीदारी होगी।

स्रोत: पीआईबी

भारत और फिनलैंड बाह्य अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण उपयोग के लिए सहमत

चर्चा में क्यों?

☞ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने 13 फरवरी 2019 को बाह्य अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण उपयोग के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत और फिनलैंड के बीच सहमति पत्र (एमओयू) को अपनी मंजूरी दे दी है। इस एमओयू पर जनवरी, 2019 को नई दिल्ली में हस्ताक्षर किये जा चुके हैं।

प्रभाव

- हस्ताक्षरित एमओयू के तहत पृथ्वी के सुदूर संवेदन, उपग्रह संचार, उपग्रह आधारित नौवहन, अंतरिक्ष विज्ञान और बाह्य अंतरिक्ष के अन्वेषण के क्षेत्र में नई अनुसंधान गतिविधियों और अनुप्रयोग (एप्लीकेशन) से जुड़ी संभावनाओं की तलाश को बढ़ावा दिया जाएगा।
- फिनलैंड की सरकार के साथ सहयोग के परिणामस्वरूप मानवता की भलाई के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों के उपयोग के क्षेत्र में एक संयुक्त गतिविधि का विकास संभव हो पाएगा।

बाह्य अन्तरिक्ष क्षेत्र के संभावित क्षेत्रों में सहयोग सुनिश्चित होगा

- पृथ्वी का सुदूर संवेदन
- उपग्रह संचार और उपग्रह आधारित नौवहन
- अंतरिक्ष विज्ञान और ग्रह संबंधी अन्वेषण
- अंतरिक्ष उपकरणों (ऑब्जेक्ट) और जमीन आधारित प्रणाली का विकास, परीक्षण एवं परिचालन
- भारत के प्रक्षेपण यानों द्वारा फिनलैंड के अंतरिक्ष उपकरणों को प्रक्षेपित करना
- अंतरिक्ष से जुड़े डेटा की प्रोसेसिंग एवं उपयोग करना
- अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के उपयोग पर आधारित अभिनव अनुप्रयोगों और समाधानों (सॉल्यूशन) को विकसित करना
- उभरते नये अंतरिक्ष अवसरों और डेटा पारिस्थितिकी एवं बाह्य अंतरिक्ष के सतत उपयोग के क्षेत्र में सहयोग करना।
- इस एमओयू के तहत प्रतिभागी अथवा उनके द्वारा अधिकृत किये जाने पर कार्यान्वयनकारी एजेंसियां आवश्यकता पड़ने पर उन विशिष्ट सहकारी परियोजनाओं के प्रबंधन के लिए परियोजना टीमों का गठन कर सकती हैं, जिन पर काम कार्यान्वयनकारी व्यवस्थाओं के तहत शुरू किया जाएगा।

कार्यान्वयनकारी रणनीति और लक्ष्य

- सभी प्रतिभागी इस एमओयू के तहत सहकारी गतिविधियों में सामंजस्य स्थापित करने के उद्देश्य से एक-एक समन्वयक को मनोनीत करेंगे। इस एमओयू के कार्यान्वयन में सुविधा के लिए प्रतिभागी पारस्परिक निर्णय लेने के लिए बारी-बारी से भारत अथवा फिनलैंड में बैठकें करेंगे अथवा वीडियो कांफ्रेंस के जरिये निर्णय लेंगे।
- इस एमओयू के तहत प्रतिभागी अथवा उनके द्वारा अधिकृत किये जाने पर कार्यान्वयनकारी एजेंसियां आवश्यकता पड़ने पर उन विशिष्ट सहकारी परियोजनाओं के प्रबंधन के लिए परियोजना टीमों का गठन कर सकती हैं, जिन पर काम कार्यान्वयनकारी व्यवस्थाओं के तहत शुरू किया जाएगा।

स्रोत: पीआईबी

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

'परमाणु टेक-2019' सम्मेलन नई दिल्ली में संपन्न

चर्चा में क्यों?

☞ विदेश मंत्रालय और परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) द्वारा 06 फरवरी 2019 को 'परमाणु टेक 2019' सम्मेलन में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में परमाणु ऊर्जा और विकिरण प्रौद्योगिकियों से संबंधित मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया।

☞ केंद्रीय पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, जन शिकायतें और पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह ने परमाणु टेक 2019 में मुख्य भाषण भी दिया।

परमाणु ऊर्जा मंत्री का संबोधन

- भारत ने इस प्रौद्योगिकी का उपयोग हमेशा से रचनात्मक उपयोग के लिए किया है कभी भी विनाशकारी उपयोग के लिए नहीं।
- विद्युत के धीरे-धीरे हट रहे अन्य स्रोतों को देखते हुए परमाणु ऊर्जा भविष्य में ऊर्जा का एक बड़ा और सस्ता स्रोत बनेगी।
- पिछले पांच वर्षों के दौरान सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक उपलब्धि यह है कि परमाणु ऊर्जा संयंत्र हरियाणा के गोरखपुर सहित देश के अन्य हिस्सों में भी स्थापित हो रहे हैं।
- भारत ने अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के साथ-साथ परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में प्रगति के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में एक विशिष्ट स्थान हासिल किया है।
- इस सम्मेलन का उद्देश्य सरकारी विभागों द्वारा चलाए जा रहे सामाजिक अनुप्रयोगों का प्रदर्शन करना है।

परमाणु टेक 2019 के प्रमुख सत्र:

1. स्वास्थ्य सुरक्षा: नाभिकीय औषधि तथा रेडिएशन थेरेपी - केयर टू क्योर
2. भोजन संरक्षण, कृषि तथा औद्योगिक उपयोग: खेत से कारखाने तक, पर्यावरण के लिए जिम्मेदारी निभाते हुए काम करना. इस सत्र में अन्य विषय थे ख़ बीजों की गुणवत्ता बढ़ाना, पानी साफ करने की तकनीक, शहरी कचरे का निपटान, समुद्री किनारों की सफाई और औद्योगिक इकाईयों के लिए मानदंड स्थापित करना।
3. परमाणु उर्जा क्षेत्र में भारत की क्षमता का प्रदर्शन: उर्जा सुरक्षा के साथ-साथ पर्यावरण को स्वच्छ रखना। आगामी मार्च से इसके कार्यप्रणाली में शामिल विषय होंगे-जीसीएनईपी एवं भारत का परमाणु उर्जा कार्यक्रम।

स्रोत: पीआईबी

दक्षिण-पूर्व एशिया का पहला प्रोटोन थेरेपी सेंटर भारत में आरंभ

चर्चा में क्यों?

☞ उपराष्ट्रपति वेंकैय्या नायडू द्वारा हाल ही में चेन्नई में प्रोटोन कैंसर सेंटर का उद्घाटन किया गया। भारत में मल्टी-स्पेशलिटी अस्पतालों की श्रृंखला चलाने वाली अपोलो हॉस्पिटल्स एंटरप्राइज लिमिटेड द्वारा प्रोटोन कैंसर सेंटर (एपीसीसी) का शुभारम्भ किया गया है।

☞ इससे अब कैंसर पीड़ितों को एक विशेष रूप की रेडियोथेरेपी उपलब्ध सुनिश्चित की जा सकेगी जो कि कैंसर कोशिकाओं को नष्ट करने में काफी सहायक सिद्ध होगी।

प्रोटोन थेरेपी से कैंसर का इलाज

- चेन्नई में स्थित इस सेंटर से वैश्विक स्तर की सभी व्यापक कैंसर चिकित्सा प्रदान की जाएगी।
- कैंसर चिकित्सा की सीमाओं को बढ़ाने वाले अपोलो प्रोटोन कैंसर सेंटर (एपीसीसी) की क्षमता 150 बेड्स की है।
- एपीसीसी में पीड़ितों को आधुनिकतम पेंसिल-बीम स्कैनिंग तकनीक के साथ आधुनिक मल्टी-रूम प्रोटोन थेरेपी दी जाएगी जो कि सुस्पष्टता और निवारण की मात्रा सबसे अधिक होती है।
- पारम्परिक रेडिएशन थेरेपी की अपेक्षा प्रोटोन थेरेपी के लाभ कई गुना अधिक हैं, विश्वभर के 2,00,000 से भी अधिक पीड़ितों को इससे राहत मिली है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

- प्रोटोन बीम थेरेपी से कैंसर चिकित्सा का सटीक जगह पर इलाज होता है, जिससे स्वस्थ कोशिकाओं का नुकसान कम होता है।
- कैंसर पीड़ित भी आरामदायक जीवन जी सकता है और पूरी तरह से स्वस्थ जीवन पाने की सम्भावना बढ़ती है।
- इसके दुष्प्रभाव भी कम होते हैं और अच्छे प्रभाव अधिक मात्रा में अनुभव किए जा सकते हैं।
- वर्ष 1983 में डॉ. प्रताप रेड्डी ने भारत का पहला कॉर्पोरेट अस्पताल अपोलो हॉस्पिटल्स चेन्नई में शुरू किया. यहाँ अब तक 1,60,000 से भी अधिक हृदय सर्जरीज हुई हैं। अपोलो हॉस्पिटल्स विश्व का सबसे बड़ा निजी कैंसर चिकित्सा प्रदान करनेवाला अस्पताल है और यहाँ पर विश्व का अग्रणी सॉलिड ऑर्गन ट्रांसप्लांट प्रोग्राम चलाया जाता है. यह एशिया का सबसे बड़ा और सर्वाधिक विश्वसनीय स्वास्थ्य सेवा प्रदान करनेवाला समूह है, इस समूह में 71 अस्पतालों में 10000 से भी अधिक बेड्स, 90 से अधिक प्राइमरी केयर एंड डायग्नोस्टिक क्लीनिक, 110 से अधिक टेलीमेडिसिन सेंटर्स और 80 से अधिक अपोलो म्युनिक इन्शुरन्स की शाखाएं शामिल हैं जो देश के विभिन्न हिस्सों में कार्यरत हैं।

स्रोत: द हिंदू

ई-औषधि पोर्टल की शुरूआत

चर्चा में क्यों?

☞ आयुष राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीपद येसो नाइक ने 13 फरवरी 2019 को नई दिल्ली में आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी औषधियों की ऑनलाइन लाइसेंस प्रणाली के लिए ई-औषधि नामक पोर्टल की शुरूआत की।

आयुष मंत्रालय की इस पहल से ई-गवर्नेंस, कारोबारी सुगमता और 'मेक इन इंडिया' की दिशा में केंद्र सरकार की प्रतिबद्धता का पता चलता है।

उद्देश्य:

☞ ई-औषधि पोर्टल का उद्देश्य पारदर्शिता बढ़ाना, सूचना प्रबंधन सुविधा तथा आंकड़ों के इस्तेमाल में सुधार लाना और जवाबदेही को बढ़ाना है।

ई-औषधि पोर्टल के बारे में:

- यह पोर्टल लाइसेंस प्रदाता अधिकारी, निर्माताओं और उपभोक्ताओं के लिए मददगार होने के साथ-साथ लाइसेंस प्राप्त निर्माताओं तथा उनके उत्पादों, रद्द की गई और नकली औषधियों की जानकारी देने के अलावा शिकायतों के लिए संबंधित अधिकारी का संपर्क सूत्र भी तत्काल उपलब्ध कराएगा।
- इस पोर्टल के माध्यम से आवेदनों की प्रक्रिया को समयबद्ध करने के लिए प्रत्येक चरण में पोर्टल के जरिये एसएमएस और ई-मेल के जरिये जानकारी दी जाएगी।
- यह नया ई-पोर्टल आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी ऑटोमेटेड ड्रग हेल्प इनिसियेटिव के लिए एक मूल आधार है.

आयुष मंत्रालय के बारे में:

- आयुष मंत्रालय आयुष के चिकित्सकों, दवा निर्माताओं और उपभोक्ताओं की समस्याओं के समाधान की दिशा में प्रयासरत है. आयुष मंत्रालय औषधि विज्ञान, दवाइयों के भण्डारण, अस्पतालों के लिये योजना बनाने से संबंधित तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराता हैं।
- आयुष मंत्रालय की स्थापना 9 नवंबर 2014 को की गई थी। इससे पहले आयुष मंत्रालय को भारतीय चिकित्सा पद्धति और होम्योपैथी (आईएसएम एंड एच) विभाग के रूप में जाना जाता था। भारतीय चिकित्सा पद्धति और होम्योपैथी को मार्च 1995 में बनाया गया था।
- आयुष मंत्रालय को भारतीय चिकित्सा पद्धति और होम्योपैथी (आईएसएम एंड एच) विभाग के रूप में जाना जाता था। भारतीय चिकित्सा पद्धति और होम्योपैथी को मार्च 1995 में बनाया गया। नवंबर 2003 में इसके नाम में परिवर्तन किया गया। भारतीय चिकित्सा पद्धति और होम्योपैथी (आईएसएम एंड एच) को नया नाम आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी (आयुष) के नाम दिया गया।

स्रोत: पीआईबी

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

NASA का ऑपरच्यूनिटी मिशन 15 साल बाद निष्क्रिय

चर्चा में क्यों?

☞ नासा के मुताबिक, मंगल ग्रह पर उसका ऑपरच्यूनिटी रोवर मिशन 15 साल बाद निष्क्रिय हो गया है। नासा ने इस रोवर को आखिरकार मृत घोषित कर दिया। नासा का यह रोवर मंगल ग्रह पर सबसे ज्यादा चलने वाला रोवर था।

रोवर मिशन निष्क्रिय क्यों?

- दरअसल ऑपरच्यूनिटी रोवर को लगातार धूल भरे तूफान की वजह कई दिनों से धूप नहीं मिली है और इस वजह से सौर संचालित रोवर से संपर्क टूट गया है। मंगल ग्रह की सतह पर हाल में 15 वर्ष पूरे करने वाला नासा का ऑपरच्यूनिटी रोवर 7 महीने पहले मंगल ग्रह पर आए तूफान के कारण संभवत: 'निष्क्रिय' हो गया है।
- मंगल ग्रह पर परसेवरेंस वैली में सौर संचालित ऑपरच्यूनिटी रोवर के ठहराव स्थल के ऊपर धूल छाने के कारण रोवर को सूर्य की रोशनी नहीं मिल सकी थी जिसकी वजह से उसकी बैटरियां चार्ज नहीं हो पाई थीं। बता दें कि, ऑपरच्यूनिटी रोवर के साथ वैज्ञानिकों का अंतिम संपर्क 10 जून 2018 को हुआ था। इसके बाद नासा ने इसे निष्क्रिय घोषित कर दिया।

ऑपरच्यूनिटी रोवर मिशन

- यह रोवर 15 साल पहले वर्ष 2004 में मंगल ग्रह की सतह पर उतरा था। रोवर से संपर्क साधने में जुटे नासा के इंजीनियरों ने तूफान के चलते इसकी आंतरिक घड़ी में खराबी आने की आशंका जताई थी। मंगल ग्रह के बारे में जानकारी जुटाने के लिए ऑपरच्यूनिटी को 90 दिन का समय तय किया गया था, लेकिन इसने 14 से ज्यादा साल मंगल पर बिताए।
- नासा के अनुसार, इस रोवर को महज 90 दिन और 1.006 किलोमीटर की दूरी तय करने के लिए लाल ग्रह पर भेजा गया था लेकिन यह रोवर अब तक न सिर्फ 45 किलोमीटर की दूरी तय कर चुका है बल्कि 5 हजार दिन भी पूरे कर लिए हैं।

नासा

- नासा (National Aeronautics and Space Administration) संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार की शाखा है जो देश के सार्वजनिक अंतरिक्ष कार्यक्रमों व एरोनॉटिक्स व एरोस्पेस संशोधन के लिए जिम्मेदार है।
- फरवरी 2006 से नासा का लक्ष्य वाक्य 'भविष्य में अंतरिक्ष अन्वेषण, वैज्ञानिक खोज और एरोनॉटिक्स संशोधन को बढ़ाना' है।
- नासा ने 14 सितंबर 2011 को घोषणा की कि उन्होंने एक नए स्पेस लॉन्च सिस्टम के डिजाइन का चुनाव किया है जिसके चलते संस्था के अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष में और दूर तक सफर करने में सक्षम होंगे और अमेरिका द्वारा मानव अंतरिक्ष अन्वेषण में एक नया कदम साबित होंगे।
- नासा का गठन नैशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस अधिनियम के अंतर्गत 19 जुलाई 1948 में इसके पूर्वाधिकारी संस्था नैशनल एडवाइजरी कमिटी फॉर एरोनॉटिक्स (एनसीए) के स्थान पर किया गया था।
- इस संस्था ने 1 अक्टूबर 1948 से कार्य करना शुरू किया. तब से आज तक अमेरिकी अंतरिक्ष अन्वेषण के सारे कार्यक्रम नासा द्वारा संचालित किए गए हैं जिनमे अपोलो चन्द्रमा अभियान, स्कायलैब अंतरिक्ष स्टेशन और बाद में अंतरिक्ष शटल शामिल है।
- वर्तमान में नासा अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन को समर्थन दे रही है और ओरायन बहु-उपयोगी कर्मीदल वाहन व व्यापारिक कर्मीदल वाहन के निर्माण व विकास पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण

सरकार द्वारा जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु उपलब्धियों पर प्रकाशन

चर्चा में क्यों?

☞ केन्द्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने 12 फरवरी 2019 को भारत में जलवायु क्रियाओं के बारे में ''भारत – जलवायु समाधानों का नेतृत्व कर रहा है'' नामक प्रकाशन जारी किया।

☞ इस प्रकाशन में जलवायु परिवर्तन से निपटने और अनुकूलनता के लिए विभिन्न क्षेत्रों के तहत भारत द्वारा की गई प्रमुख कार्रवाइयों का उल्लेख किया गया है। भारत दुनिया में घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जलवायु परिवर्तन के विविध पहलुओं पर कार्य करने वाला दुनिया का एक सक्रिय देश बन गया है।

☞ इस प्रकाशन में न केवल जलवायु कार्रवाई के बारे में हमारी उपलब्धियों को उजागर किया गया है बल्कि भविष्य के लिए हमारी तैयारी का भी उल्लेख किया गया है। इस प्रकाशन में जिन पहलों का उल्लेख है वे सतत विकास प्राथमिकताओं के साथ अच्छा संतुलन कायम करते हुए जलवायु परिवर्तन की चिंताओं का समाधान करने की दिशा में हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

मुख्य तथ्य:

♦ पिछले 4 वर्षों के दौरान राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर शुरू की गई अनेक स्वच्छ और हरित विकास पहलों ने जलवायु परिवर्तन से निपटने और अनुकूलनता के बारे में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

♦ मोबिलिटी, हरित ढुलाई, नवीकरणीय ऊर्जा, अपशिष्ट प्रबंधन, वनीकरण और जल आदि विभिन्न क्षेत्रों में अनेक नई नीतियां और पहल शुरू की गई हैं ताकि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम से कम किया जा सके।

♦ अभी हाल में भारत सरकार ने जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनेक पहल शुरू की हैं। भारत सरकार की कुछ प्रमुख पहलों में जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना (एनएपीसीसी), जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय अनुकूलनता निधि (एनएएफसीसी), जलवायु परिवर्तन कार्य योजना (सीसीएटी) और जलवायु परिवर्तन पर राज्य कार्य योजना (एसएपीसीसी) शामिल हैं।

♦ वर्ष 2022 तक 175 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा का उत्पादन करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य, स्मार्ट शहरों, विद्युत वाहनों, ऊर्जा दक्षता, पहलों तथा अप्रैल 2022 तक भारत स्टैज –4 से भारत स्टेज ख 5 उत्सर्जन मानदंडों को लागू करने जैसे कार्यों को सक्रियता पूर्वक शुरू किया गया है ताकि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम से कम किया जा सके।

♦ भारत की नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता 74 गीगावाट से अधिक है जिसमें 25 गीगावाट सौर ऊर्जा भी शामिल है. भारत का वन और वृक्ष क्षेत्र 2015 के आकलन की तुलना में 1 प्रतिशत बढ़ा है। एलईडी वितरण के लिए उज्ज्वला जैसी योजना ने 320 मिलियन की संख्या को पार कर लिया है जबकि गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली महिलाओं के लिए 63 मिलियन से भी अधिक परिवारों को स्वच्छ कुकिंग चूल्हों का वितरण कर दिया गया है।

♦ दूसरी द्विवार्षिक अद्यतन रिपोर्ट में ये तथ्य दर्शाया गया है कि भारत के सकल घरेलू उत्पादन की उत्सर्जन तीव्रत 2005 से 2014 के बीच घटकर 21 प्रतिशत कम हो गई है।

♦ जलवायु परिवर्तन पर भारत की राष्ट्रीय कार्य योजना (एनएपीसीसी), अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए), जलवायु परिवर्तन पर राज्य कार्य योजना (एसएपीसीसी), ई-मोबिलिटी के लिए फेम योजना, स्मार्ट शहरों के लिए – कायाकल्प और शहरी परिवर्तन हेतु अटल मिशन (अमृत), प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना – स्वच्छ कुकिंग ईंधन के लिए पहुंच, उज्ज्वला योजना और स्वच्छ भारत मिशन है।

♦ जलवायु परिवर्तन आज एक वैश्विक समस्या बन गया है और पूरी दुनिया में लगातार हो रहे जलवायु परिवर्तन ने हमारे पर्यावरण और समाज के सामने गंभीर चुनौती पैदा कर दी है।

स्रोत: पीआईबी

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारत में 4 करोड़ ग्रामीण लोग धातु-प्रदूषित पानी पीते हैं: सर्वेक्षण रिपोर्ट

चर्चा में क्यों?

☞ हाल ही में पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय की एकीकृत प्रबंधन सूचना प्रणाली द्वारा जारी आंकड़ों में कहा गया है कि भारत में लगभग 4 करोड़ ग्रामीण लोग धातु-प्रदूषित जल ग्रहण कर रहे हैं। यह लोग उस पानी को पीने के लिए मजबूर हैं जिसमें किसी न किसी रूप में धातु मिली हुई होती है।

☞ इस सर्वेक्षण में पाया गया कि प्रदूषित जल में पाए जाने वाली प्रमुख धातुएं फ्लोराइड, आर्सेनिक और नाइट्रेट हैं। धातु प्रदूषित जल के आंकड़ों में पश्चिम बंगाल और राजस्थान टॉप पर पाए गये हैं।

सर्वेक्षण के मुख्य बिंदु

- मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार भारत में सबसे अधिक धातु से प्रदूषित पानी पीने वाला राज्य पश्चिम बंगाल है. यहां 39 प्रतिशत लोग इस जल का सेवन करने को मजबूर है।
- इसी क्रम में राजस्थान दूसरे स्थान पर आता है जहां 65 लाख ग्रामीण पीने के लिये प्रदूषित जल का प्रयोग करते हैं। इस जल से उनका उनका स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित होता है, जबकि बिहार में 43 लाख लोग दूषित जल का सेवन कर रहे हैं।
- इस सर्वेक्षण में जुटाए गये आंकड़ों में 16 राज्यों में एक लाख से अधिक ग्रामीण आबादी प्रभावित है. जबकि केवल सात राज्यों पश्चिम बंगाल, राजस्थान, बिहार, पंजाब, असम, उत्तर प्रदेश और त्रिपुरा में 10 लाख से अधिक लोग प्रभावित हैं।
- इसे अलग-अलग श्रेणी के अनुसार बांटते हुए कहा गया है कि फ्लोराइड प्रदूषण के क्षेत्र में 33 लाख, लवणता प्रदूषण के क्षेत्र में 25 लाख तथा नाइट्रेट प्रदूषण के क्षेत्र में 7 लाख आबादी के साथ राज्यों की सूची में राजस्थान टॉप पर है।
- आंकड़ों के अनुसार पश्चिम बंगाल में लगभग 96 लाख लोग आर्सेनिक और 49 लाख लोग आयरन से प्रदूषित जल का सेवन कर रहे हैं।
- पीने के पानी में सबसे अधिक प्रकार की धातुएं पंजाब में पाई गईं। यहां सभी तरह की धातुओं को पानी में देखा गया जबकि पश्चिम बंगाल में नाइट्रेट की मिलावट नहीं मिली थी।

पृष्ठभूमि

☞ मंत्रालय द्वारा लोकसभा में दी गई जानकारी के अनुसार, केंद्र ने आर्सेनिक और फ्लोराइड संदूषण से निपटने के लिये सामुदायिक जल शोधन संयंत्रों और पाइपलाइन की अनंतिम आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिये मार्च 2016 में 1,000 करोड़ रुपए जारी किये हैं। वर्ष 2017 में मंत्रालय ने 27,544 आर्सेनिक / फ्लोराइड प्रभावित ग्रामीण बस्तियों को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने के लिये राष्ट्रीय जल गुणवत्ता उप-मिशन शुरू किया था। ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की आपूर्ति राज्य सूची का विषय है, इसलिये पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय ग्रामीण आबादी हेतु सुरक्षित पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिये राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम के माध्यम से राज्यों को तकनीकी और वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

पेट्रोलियम मंत्रालय को आईईए बायो-एनर्जी टीसीपी का सदस्य बनने को मंजूरी

चर्चा में क्यों?

☞ केन्द्रीय मंत्रिमंडल द्वारा पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय को आईईए बायो-एनर्जी टीसीपी का 25वां सदस्य बनने के लिए मंजूरी प्रदान की गई. इसके अन्य सदस्यों में ऑस्ट्रेलिया, ऑस्ट्रिया, बेल्जियम, ब्राजील, कनाडा, क्रोएशिया, डेनमार्क, एस्तोनिया, फिनलैंड, फ्रांस, जर्मनी, आयरलैंड, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, नीदरलैंड, न्यूजीलैंड, नॉर्वे, दक्षिण अफ्रीका, स्वीडन, स्विटजरलैंड, इंग्लैंड, अमेरीका और यूरोपीय संघ शामिल हैं।

☞ बायो-एनर्जी (आईईए बायो-एनर्जी टीसीपी) संबंधी अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी सहयोग कार्यक्रम विभिन्न देशों के बीच सहयोग के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय मंच है. इसका मुख्य कार्य बायो-एनर्जी अनुसंधान और विकास में राष्ट्रीय कार्यक्रमों वाले देशों के बीच सहयोग तथा सूचनाओं के आदान-प्रदान में सुधार करना है।

☞ आईईए बायो-एनर्जी टीसीपी में अनुसंधान एवं विकास कार्य सुपरिभाषित 3 वर्ष की अवधि के भीतर किया जाता है तथा इन कार्यक्रमों को 'नियत कार्य' कहा जाता है. हर वर्ष इन नियत कार्यों की जांच और मूल्यांकन किया जाता है तथा हर तीन वर्षों के दौरान नियत कार्य के विषय को दुरुस्त किया जाता है तथा नए नियत कार्य शुरू किये जाते हैं। पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय जिन नियत कार्यों में भाग लेता है, उनमें सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं विपणन कंपनियों के तकनीकी व्यक्ति भी योगदान देते हैं।

उद्देश्य

- पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय द्वारा आईईए बायो-एनर्जी टीसीपी में शामिल होने का प्रमुख उद्देश्य उन्नत बायो ईंधन के विपणन को सुविधा देना है, ताकि उत्सर्जन में कमी लाई जा सके और कच्चे तेल के आयात में कटौती हो सके।
- आईईए बायो-एनर्जी टीसीपी बायो एनर्जी अनुसंधान, प्रौद्योगिकी विकास, प्रदर्शन और नीति-विश्लेषण में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सूचनाओं के आदान-प्रदान का मंच भी प्रदान करता है।
- इस संबंध में बायो-एनर्जी प्रौद्योगिकियों के अल्प और दीर्घकालिक तैनाती के लिए पर्यावरण, संस्थागत, प्रौद्योगिकिय, सामाजिक और बाजार बाधाओं को दूर करने पर ध्यान दिया जाता है।

सदस्यता का लाभ

- आईईए बायो-एनर्जी टीसीपी में भागीदारी करने के लाभ साझा लागत और तकनीकी संसाधनों में सहयोग हैं।
- प्रयासों का दोहराव नहीं होता और राष्ट्रीय अनुसंधान एवं विकास क्षमताएं मजबूत होती हैं।
- उत्कृष्ट व्यवहारों, अनुसंधानकर्ताओं के नेटवर्क और व्यावहारिक कार्यान्वयन के साथ अनुसंधान के जुड़ाव संबंधी सूचनाओं का आदान-प्रदान भी होता है।
- अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों की संलिप्तता से मंत्रालय को बायो ईंधन सेक्टर में विश्व भर में होने वाले विकासों की जानकारी मिलती है।
- इसके कारण नवाचार कर्ताओं/ अनुसंधान कर्ताओं के साथ व्यक्तिगत बातचीत का अवसर मिलता है तथा उचित नीति ईको प्रणाली तैयार करने में मदद मिलती है।
- इसके अलावा आईईए बायो-एनर्जी टीसीपी का सदस्य बनने से भारत अन्य संबंधित नियत कार्यों में हिस्सा ले सकता है, जिनका संबंध बायो गैस, ठोस कचरा प्रबंधन, बायो परिशोधन इत्यादि है।
- इस संबंध में देश के अन्य मंत्रालय/ विभाग/ संगठन भी भाग ले सकते हैं।

स्रोतः पीआईबी

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

प्रधानमंत्री 'जी-वन योजना'

चर्चा में क्यों?

☞ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल की आर्थिक मामलों की समिति ने 28 फरवरी 2019 को प्रधानमंत्री जी-वन (जैव ईंधन वातावरण अनुकूल फसल अवशेष निवारण) योजना के लिए वित्तीय मदद को मंजूरी दे दी है. इसके तहत ऐसी एकीकृत बायो-इथेनॉल परियोजनाओं को, जो लिग्नोसेलुलॉसिक बायोमास और अन्य नवीकरणीय फीडस्टॉक का इस्तेमाल करती हैं, के लिए वित्तीय मदद का प्रावधान है।

जी-वन योजना का विवरण

- इस योजना के तहत वाणिज्यिक स्तर पर 12 परियोजनाओं को और प्रदर्शन के स्तर पर दूसरी पीढ़ी की 10 इथेनॉल परियोजनाओं को दो चरणों में वित्तीय मदद दी जाएगी।
- पहला चरण (2018-19 से 2022-23)- इस अवधि में 6 वाणिज्यिक परियोजनाओं और 5 प्रदर्शन के स्तर वाली परियोजनाओं को आर्थिक मदद दी जाएगी।
- दूसरा चरण (2020-21 से 2023-24)- इस अवधि में बाकी बची 6 वाणिज्यिक परियोजनाओं और 5 प्रदर्शन स्तर वाली परियोजनाओं को मदद की व्यवस्था की गई है।
- परियोजना के तहत दूसरी पीढ़ी के इथेनॉल क्षेत्र को प्रोत्साहित करने और मदद करने का काम किया गया है। इसके लिए उसे वाणिज्यिक परियोजनाएं स्थापित करने और अनुसंधान और विकास गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराने का काम किया गया है।

जी-वन योजना के उद्देश्य एवं लाभ

- जीवाश्म ईंधन के स्थान पर जैव ईंधन के इस्तेमाल को बढ़ावा देकर आयात पर निर्भरता घटाने की भारत सरकार की परिकल्पना को साकार करना।
- जीवाश्म ईंधन के स्थान पर जैव ईंधन के इस्तेमाल का विकल्प लाकर उत्सर्जन के सीएचजी मानक की प्राप्ति।
- बायोमास और फसल अवशेष जलाने से पर्यावरण को होने वाले नुकसान का समाधान और लोगों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाना.
- दूसरी पीढ़ी की इथेनॉल परियोजना और बायोमास आपूर्ति श्रृंखला में ग्रामीण और शहरी लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करना।
- बायोमास कचरे और शहरी क्षेत्रों से निकलने वाले कचरे के संग्रहण की समुचित व्यवस्था कर स्वच्छ भारत मिशन में योगदान करना
- दूसरी पीढ़ी के बायोमास को इथेनॉल प्रौद्योगिकी में परिवर्तित करने की विधि का स्वदेशीकरण।
- योजना के लाभार्थियों द्वारा बनाए गए इथेनॉल की अनिवार्य रूप से तेल विपणन कम्पनियों को आपूर्ति, ताकि वे ईबीपी कार्यक्रम के तहत इनमें निर्धारित प्रतिशत में मिश्रण कर सके।

वित्तीय प्रभाव

☞ जी-वन योजना के लिए 2018-19 से 2023-24 की अवधि में कुल 1969.50 करोड़ रुपये के वित्तीय परिव्यय को मंजूरी दी गई है।

☞ परियोजनाओं के लिए स्वीकृत कुल 1969.50 करोड़ रुपये की राशि में से 1800 करोड़ रुपये 12 वाणिज्यिक परियोजनाओं की मदद के लिए, 150 करोड़ रुपये प्रदर्शित परियोजनाओं के लिए और बाकी बचे 9.50 करोड़ रुपये केन्द्र को उच्च प्रौद्योगिकी प्रशासनिक शुल्क के रूप में दिए जाएंगे।

पृष्ठभूमि

- भारत सरकार ने इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल (ईबीपी) कार्यक्रम 2003 में लागू किया था. इसके जरिए पेट्रोल में इथेनॉल का मिश्रण कर पर्यावरण को जीवाश्म ईंधनों के इस्तेमाल से होने वाले नुकसान से बचाना, किसानों को क्षतिपूर्ति दिलाना तथा कच्चे तेल के आयात को कम कर विदेशी मुद्रा बचाना है।
- वर्तमान में ईबीपी 21 राज्यों और 4 संघ शासित प्रदेशों में चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के तहत तेल विपणन कम्पनियों के लिए पेट्रोल में 10 प्रतिशत तक इथेनॉल मिलाना अनिवार्य बनाया गया है।
- मौजूदा नीति के तहत पेट्रोकेमिकल के अलावा मोलासिस और नॉन फीड स्टाक उत्पादों जैसे सेलुलोसेस और लिग्नोसेलुलोसेस जैसे पदार्थों से इथेनॉल प्राप्त करने की अनुमति दी गई है।

स्रोत: पीआईबी

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

सौर गठबंधन समझौते पर हस्ताक्षर करने वाला 73वां देश बना सऊदी अरब

चर्चा में क्यों?

☞ सऊदी अरब 20 फरवरी 2019 को अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) के लिए रूपरेखा समझौते पर हस्ताक्षर करने वाला 73वां और 7वां ओपेक (तेल निर्यातक देशों का संगठन) देश बन गया है।

☞ समझौते पर हस्ताक्षर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान के बीच द्विपक्षीय बैठक के बाद हुए।

अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन का प्रमुख उद्देश्य:

- इस संगठन का मुख्य उद्देश्य सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करना है।
- यह सौर ऊर्जा के विकास और उपयोग में तेजी लाने की एक नई शुरुआत है ताकि वर्तमान और भावी पीढ़ी को ऊर्जा सुरक्षा प्राप्त हो सके।
- आईएसए का उद्देश्य सूर्य की बहुतायत ऊर्जा को एकत्रित करने के साथ देशों को एक साथ लाना है।
- इस संगठन का उद्देश्य दुनिया भर को न केवल साफ ऊर्जा उपलब्ध कराना है बल्कि जलवायु परिवर्तन के खिलाफ एकजुट होकर पर्यावरण को बचाने के लिए प्रयास करना है।

अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन

- भारत ने भविष्य की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन की पहल की थी।
- इसकी शुरुआत संयुक्त रूप से पेरिस में 30 नवम्बर 2015 को संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन के दौरान कोप-21 से अलग भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और फ्रांस के तत्कालीन राष्ट्रपति ने की थी।
- फ्रांस, इस अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन के सफल होने के लिए 2022 तक 5600 करोड़ रुपये का फंड देगा जिससे सदस्य देशों में अन्य सोलर प्रोजेक्ट शुरू किये जायेंगे।
- अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन का लक्ष्य 2030 तक 1 ट्रिलियन वाट (1000 गीगावाट) सौर ऊर्जा उत्पादन का है, जिस पर अनुमानत: 1 ट्रिलियन डॉलर का खर्च आयेगा।
- अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) पहला अंतरराष्ट्रीय संगठन है जिसका सचिवालय भारत में है।
- अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन सौर ऊर्जा पर आधारित 121 देशों का एक सहयोग संगठन है।
- अर्जेंटीना 18 फरवरी 2019 को भारत द्वारा आरंभ की गई पहल अंतरराष्ट्रीय सौर संगठन (आईएसए) में 72वें सदस्य के रूप में शामिल हुआ जिसने फ्रेमवर्क पर हस्ताक्षर किये हैं। अर्जेंटीना ने इस संगठन में शामिल होकर सौर उर्जा के अधिक से अधिक उपयोग करने को लेकर प्रतिबद्धता जताई।

स्रोत: द हिंदू

ग्लोबल वार्मिंग से बदल रहा है समुद्रों का रंग: EF रिपोर्ट

चर्चा में क्यों?

☞ अमेरिका की मेसाचुसेट्स इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) द्वारा किये गये अध्ययन तथा विश्व आर्थिक फोरम (ॅम्थ्) द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार ग्लोबल वार्मिंग के कारण विश्व भर में समुद्रों का रंग बदल रहा है। इस अध्ययन के अनुसार, ग्लोबल वार्मिंग के कारण 21वीं सदी के अंत तक दुनिया के 50 प्रतिशत से अधिक समुद्रों का रंग बदल जाएगा।

☞ एमआईटी के प्रोफेसर स्टेफनी के मुताबिक, उपोष्णकटिबंधीय (सबट्रॉपिक्स) जैसे इलाकों में पड़ने वाले समुद्रों का रंग 'गहरा नीला' और ध्रुवीय समुद्रों का रंग 'गहरा हरा' हो जाएगा। हालांकि, इन बदलावों को नग्न आंखों से देखना बहुत मुश्किल होगा। हाल ही में यह रिपोर्ट 'नेचर' पत्रिका में भी प्रकाशित हुई है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

रिपोर्ट के प्रमुख तथ्य

- एमआईटी द्वारा किये गये शोध के अनुसार पानी का रंग हरा होना उसकी सतह पर उगे फायटोप्लैंक्टन होते हैं।
- ध्रुवीय समुद्र का तापमान बढ़ने से इनकी मात्रा गहराई तक बढ़ सकती है. जैसे-जैसे तापमान बढ़ेगा वैसे इनकी तादाद में बढ़ोतरी होगी।
- इसी प्रकार समुद्र का पानी नीला होने का मतलब है फायटोप्लैंक्टन की संख्या में कमी।
- फायटोप्लैंक्टन सूक्ष्म जीव होते हैं जो समुद्री जीवों के भोजन का काम करते है। इनकी संख्या कार्बन डाई ऑक्साइड, सूरज की रोशनी और पानी में मौजूद पोषक तत्वों के आधार पर बढ़ती है, जिसमें भारी कमी देखी गई है।
- वैज्ञानिकों का कहना है कि समुद्र की अम्लता का सीधा असर फायटोप्लैंक्टन पर पड़ेगा। इनकी ग्रोथ में कमी होने पर समुद्री जीवों के लिए भोजन का संकट पैदा होगा।
- प्रोफेसर स्टेफनी द्वारा जारी जानकारी के अनुसार जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्र में मौजूद छोटी शैवालों को कार्बन डाई ऑक्साइड अवशोषित करना मुश्किल हो रहा है।
- यदि यही स्थिति बनी रही तो समुद्र में जीवन की कल्पना करना मुश्किल हो जाएगा। इनके न रहने पर कार्बन वापस समुद्र से वातावरण में चला जाएगा और कई तरह की समस्याएं पैदा करेगा।
- साथ ही इस रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि समुद्री पानी के तापमान में बढ़ोतरी होने पर शार्क अपना रास्ता भटक रही हैं। इससे उन्हें तैरने की दिशा भटकने पर असर पड़ रहा है।

अध्ययन का आधार

- अध्ययन के लिए शोधकर्ताओं ने एक ऐसा वैश्विक मॉडल तैयार किया जो सूक्ष्म पादपों या शैवाल की प्रजातियों की वृद्धि और उनके अंतर्संवाद की बारीकियों का पता लगाता है।
- यह मॉडल यह बताता है कि कैसे विभिन्न स्थानों पर प्रजातियों का सम्मिश्रण दुनियाभर में तापमान बढ़ने पर बदलेगा।
- इस मॉडल से वैज्ञानिकों ने यह भी पता लगाया कि कैसे यह सूक्ष्म पादप प्रकाश का अवशोषण और परावर्तन करते हैं तथा ग्लोबल वार्मिंग से पादप समुदाय की संरचना पर असर पड़ने से महासागर का रंग बदलता है।

स्रोत: द हिंदू

दुनिया को हरा-भरा करने में भारत और चीन रहे सबसे आगे: नासा

चर्चा में क्यों?

- नासा के एक ताजा अध्ययन में यह पाया गया है कि भारत और चीन पेड़ लगाने के मामले में विश्व में सबसे आगे हैं। इस अध्ययन में 11 फरवरी 2019 को कहा गया कि दुनिया 20 वर्ष पहले की तुलना में अधिक हरी भरी हो गई है।
- नासा के उपग्रह से मिले आंकड़ों एवं विश्लेषण पर आधारित अध्ययन में कहा गया कि भारत और चीन पेड़ लगाने के मामले में आगे हैं। भारत ने वर्ष 2017 में केवल 12 घंटों में 6.6 करोड़ पौधे लगाकर अपना विश्व रिकॉर्ड तोड़ा था।

मुख्य तथ्य:

- नासा के अध्ययन के मुताबिक, 2000-2017 के बीच दुनिया को हरा-भरा करने में भारत और चीन का योगदान एक-तिहाई रहा जबकि धरती की वन भूमि का 9% क्षेत्र ही इन दोनों देशों के पास है।
- पेड़ पौधों से ढके क्षेत्र में वैश्विक बढोतरी में 25 प्रतिशत योगदान केवल चीन का है जो वैश्विक वनीकरण क्षेत्र का मात्र 6.6 प्रतिशत है।
- नासा के अध्ययन में कहा गया है कि चीन वनों (42 प्रतिशत) और कृषि भूमि (32 प्रतिशत) के कारण हरा भरा बना है जबकि भारत में ऐसा मुख्यत: कृषि भूमि (82 प्रतिशत) के कारण हुआ है। इसमें वनों (4.4 प्रतिशत) का हिस्सा बहुत कम है।
- चीन भूक्षरण, वायु प्रदूषण एवं जलवायु परिवर्तन को कम करने के लक्ष्य से वनों को बढ़ाने और उन्हें संरक्षित रखने के महत्वाकांक्षी कार्यक्रम चला रहा है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

- नासा के उपग्रहों की इस आश्चर्यजनक खोज से पता चला कि दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाले ये दो देश पेड़ लगाने और कृषि आधारित महत्वाकांक्षी कार्यक्रमों के जरिए इस दिशा में काफी आगे बढ़ रहे हैं। अध्ययन का यह नतीजा उस आम धारणा के उलट है जिसके तहत यह कहा जाता है कि बड़ी आबादी वाले देशों में ज्यादा दोहन की वजह से हरित क्षेत्रों में गिरावट आ रही है।
- शोधकर्ताओं को डेटा के बाद पता चला है कि इस दौरान धरती की हरियाली में पांच प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो पूरे अमेजॉन वर्षावन क्षेत्र के बराबर है।
- भारत और चीन में 2000 के बाद से खाद्य उत्पादन में 35 प्रतिशत से अधिक बढ़ोतरी हुई है। कृषि सुविधाओं और खादों के उपयोग से कृषि क्षेत्र में वृद्धि हुई है. भारत में भूजल सिंचाई की सुविधा से खाद्य उत्पादन काफी बढ़ा है। भारत और चीन में 1970 और 1980 के दशक में पेड़-पौधों के संबंध में स्थिति सही नहीं थी। इस अध्ययन के परिणामस्वरूप यह भी जाहिर हुआ है कि 20 साल पहले की तुलना में दुनिया ज्यादा हरी-भरी हुई है।

स्रोतः द हिंदू

सिंधु नदी डॉल्फिन को पंजाब का राजकीय जलीय जीव घोषित किया गया

चर्चा में क्यों?

- ब्यास नदी में पाई जाने वाली सिंधु नदी डॉल्फिन को हाल ही में पंजाब राज्य का राजकीय जलीय जीव घोषित किया गया। पंजाब में पाई जाने वाली यह डॉल्फिन लुप्त होने के कगार पर पहुंच गई है। पंजाब सरकार ने इसे हाल ही में राज्य जलीय जीव घोषित करने की मंजूरी दे दी है।
- वन्य जीव के बारे में प्रांतीय बोर्ड की दूसरी मीटिंग की अध्यक्षता करते हुए मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह ने कहा कि सिंधु डॉल्फिन एक दुर्लभ जलीय जीव है जो ब्यास नदी की पर्यावरण प्रणाली के संरक्षण के लिए एक उप-जाति है।

सिंधु नदी डॉल्फिन

- सिंधु नदी डॉल्फिन ताजे पानी के डॉल्फिन में दूसरा सर्वाधिक संकटापन्न प्रजाति है।
- सिंधु नदी (पाकिस्तान) में इसकी संख्या 1800 है और ब्यास नदी में इसकी संख्या महज 8 से 10 है।
- विश्व में नदी डॉल्फिन की केवल सात प्रजातियां और उपप्रजातियां पाई जाती हैं जिनमें से सिंधु नदी डॉल्फिन भी एक है।
- यह विश्व के सर्वाधिक दुर्लभ स्तनधारी जीवों में से एक है। ऐसा माना जाता है कि डॉल्फिन देख नहीं सकती है।
- ऐसा कहा जाता है इन मछलियों का उद्भव प्राचीन टेथिस सागर में हुआ था और उसके सूख जाने के पश्चात वहीं के पास की नदियों को अपना पर्यावास बना लिया।
- इसका वैज्ञानिक नाम प्लैटेनिस्ता माइनर (Platanista minor) है।

विश्व में ताजे पानी की डॉल्फिन

- आमेजन नदी डॉल्फिन (बोटो या पिंक रिवर डॉल्फिन), टुकुक्सी (भूरे रंग की आमेजन नदी डॉल्फिन), गंगा नदी डॉल्फिन (सुसु), सिंधु नदी डॉल्फिन (भूलन), इरावदी नदी डॉल्फिन, यांग्त्जी नदी डॉल्फिन।

स्रोतः द हिंदू

वर्ष 2100 तक हिमालय के ग्लेशियर का दो तिहाई हिस्सा पिघल जायेगा: अध्ययन

- हाल ही में वैज्ञानिकों द्वारा किये गये एक शोध पर आधारित रिपोर्ट प्रकाशित की गई जिसमें हिमालय के ग्लेशियर के पिघलने की चेतावनी दी गई है। हिन्द-कुश हिमालय ग्लेशियर पर आधारित यह रिपोर्ट कहती है कि यदि वैश्विक उत्सर्जन (ग्लोबल वॉर्मिंग) नहीं घटता है तो दुनिया का तीसरा ध्रुव समझे जाने वाले हिमालय ग्लेशियर का दो तिहाई हिस्सा वर्ष 2100 तक पिघल सकता है।
- 'हिंदू-कुश हिमालय असेसमेंट' नामक यह नया अध्ययन 04 फरवरी 2019 को प्रकाशित हुआ है। इस अध्ययन के अनुसार यदि ग्लोबल वॉर्मिंग को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने वाला पेरिस संधि लक्ष्य हासिल हो जाता है तो भी एक तिहाई हिमनद पिघलना तय है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

हिन्द-कुश हिमालय ग्लेशियर पर आधारित रिपोर्ट

- रिपोर्ट के मुताबिक हिंदू-कुश हिमालय (एनकेएच) क्षेत्र के हिमनद इन पहाड़ों में 25 करोड़ लोगों तथा नदी घाटियों में रहने वाले 1.65 अरब अन्य लोगों के लिए अहम जल स्रोत हैं।
- ये हिमनद गंगा, सिंधु, येलो, मेकोंग समेत दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण 10 नदियों में जलापूर्ति करते हैं तथा अरबों लोगों के लिए प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भोजन, ऊर्जा, स्वच्छ वायु और आय का आधार प्रदान करते हैं।
- अध्ययन में चेतावनी दी गई है कि उनके पिघलने का लोगों पर प्रभाव वायु प्रदूषण के बिल्कुल बिगड़ जाने से लेकर प्रतिकूल मौसम के रुप में हो सकता है।
- मॉनसून से पहले नदियों में निम्न प्रवाह से शहरी जल व्यवस्था, खाद्य एवं ऊर्जा उत्पादन अस्त व्यस्त हो जाएगा।
- नई रिपोर्ट काठमांडू के इंटरनैशनल सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड माउंटेन डिवेलपमेंट इन नेपाल द्वारा प्रकाशित हुई है।
- इस रिपोर्ट को 210 वैज्ञानिकों ने तैयार किया है। इसका नेतृत्व फिलिप्स वेस्टर ने किया है।

प्रभाव

- अध्ययन में कहा गया है कि निचली ऊंचाई पर ग्लेशियर पिघलने से अगले कुछ दशकों में पानी की उपलब्धता में बदलाव की संभावना कम है, लेकिन अन्य कारणों के चलते इस पर काफी प्रभाव पड़ सकता है।
- इनमें भूजल की कमी और लोगों द्वारा अधिक मात्रा में पानी का उपभोग शामिल है। अध्ययन के मुताबिक, ग्लेशियर का पिघलना मौजूदा दर से जारी रहा तो ऊंचाई वाले इलाके में कुछ नदियों के बहाव में बदलाव हो सकता है।

पृष्ठभूमि

- दो वर्ष पहले काठमांडू स्थित इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड माउंटेन डेवलपमेंट के विशेषज्ञ अंजलि प्रकाश और अरुण बी. श्रेष्ठ ने अपने अध्ययन के बाद एक रिपोर्ट में लिखा था कि ग्लेशियरों के पिघलने से शुरू में नदियों के जलस्तनर में वृद्धि होगी और इससे बाढ़ आने का खतरा भी बढ़ जाएगा। लेकिन जब ग्लेशियर खत्म हो जाएंगे तब नदियों में पिघले बर्फ की मात्रा काफी कम हो जाएगी। इसके परिणामस्वरूप कुछ इलाकों में भूजल रिचार्ज की दर कम हो जाएगी।

स्रोतः द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

अन्य खबरें

ऑस्कर अवॉर्ड् 2019

- अमेरिका के कैलिफॉर्निया स्थित डॉल्बी थिएटर में सिनेमा जगत के सबसे प्रतिष्ठित ऑस्कर अवॉर्ड्स (Oscar Awards 2019) की घोषणा की गई। इस पुरस्कार समारोह में भारतीय पृष्ठभूमि पर बनी 'पीरियड. एंड ऑफ सेंटेस' को भी बेस्ट डॉक्युमेंट्री शॉर्ट सब्जेक्ट का अवॉर्ड मिला है।
- बेस्ट फिल्म कैटेगरी में आठ फिल्म को आखिरी सूची में रखा गया था। इनमें ब्लैक पैंथर, ब्लैक लेंसमैन, बोहिमिया रापसोडी, द फेवरेट, ग्रीन बुक, रोमा, ए स्टार इज बोर्न, वाइस का नाम शामिल था। सभी फिल्मों को पीछे छोड़ते हुए श्ग्रीन बुकश ने बेस्ट फिल्म कैटेगरी में ऑस्कर अवॉर्ड अपने नाम किया। फिल्म 'ग्रीन बुक' में एक पियानो वादक और उसके पार्ट टाइम ड्राइवर के बीच के रिश्ते को दिखाया गया है। इसी फिल्म के लिए माहेरशाला अली को बेस्ट सपोर्टिंग एक्टर का भी अवॉर्ड मिला।

ऑस्कर 2019 की पूरी सूची

- बेस्ट फिल्म: ग्रीन बुक
- बेस्ट ऐक्टर इन अ लीडिंग रोल: रामी मालेक
- बेस्ट ऐक्ट्रेस इन अ लीडिंग रोल: ओलिविया कोलमन
- बेस्ट फॉरन फिल्म: रोमा
- बेस्ट डायरेक्टर: अलफॉन्सो क्यूरॉन (रोमा)
- बेस्ट सपॉर्टिंग ऐक्ट्रेस: रेजिना किंग, फिल्म: इफ बील स्ट्रीट कुड टॉक
- बेस्ट सपॉर्टिंग ऐक्टर: माहर्शाला अली, फिल्म: ग्रीन बुक
- बेस्ट ऐनिमेटेड फीचर फिल्म: स्पाइडर-मैन: इनटू द स्पाइडर-वर्स
- बेस्ट ऐनिमेटेड शॉर्ट फिल्म: बाओ (ठाव)
- बेस्ट डॉक्युमेंट्री शॉर्ट सब्जेक्ट: पीरियड. एंड ऑफ सेंटेस
- बेस्ट विजुअल इफेक्ट: फर्स्ट मैन
- बेस्ट लाइव ऐक्शन शॉर्ट फिल्म: स्किन
- बेस्ट ऑरिजनल स्क्रीनप्ले: ग्रीन बुक
- बेस्ट अडैप्टेड स्क्रीन प्ले: ब्लैकलेंसमैन
- बेस्ट ऑरिजनल स्कोर: ब्लैक पैंथर
- बेस्ट ऑरिजनल सॉन्ग: शैलो (लेडी गागा)
- कॉस्ट्यूम डिजाइन: रुथ कार्टर
- बेस्ट सिनेमटॉग्रफी: रोमा

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

लेडी गागा और ओलिविया कोलमैन को मिला पहला ऑस्कर

- लेडी गागा को फिल्म ए स्टार इस बोर्न (A Star is Born) के लिए मिला अवॉर्ड और ये गायिका स्टेज पर रोने लगी। बतौर अभिनेत्री लेडी गागा ने पहली बार ऑस्कर में शिरकत की थी। ऑस्कर 2019 में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार मिला ओलिविया कोलमैन को. फिल्म 'द फेवरेट' के लिए ऑस्कर जीतने वाली ओलिविया के लिए ये पहला ऑस्कर था और जब वो स्टेज पर आई तो लोगों ने उनका भव्य स्वागत किया। 45 साल की इस अदाकारा ने कहा कि शायद ये मौका दोबारा नहीं आएगा लेकिन वो बहुत खुश हैं और इस लम्हे को जीना चाहती हैं।

ऑस्कर 2019 में भारत

- भारतीय पृष्ठभूमि पर बनीं फिल्म श्पीरियड. एंड ऑफ सेंटेसश को भी बेस्ट डॉक्युमेंट्री शॉर्ट सब्जेक्ट का अवॉर्ड मिला है। यह फिल्म भारतीय पृष्ठभमि पर आधारित फिल्म है जिसमें पीरियड्स के मुद्दे को उठाया गया है। इस फिल्म को रयाक्ता जहताबची और मैलिसा बर्टन ने निर्देशित किया है। भारतीय फिल्म प्रोड्यूसर गुनीत मोंगा की फिल्म पीरियड। एंड ऑफ सेंटेंस को बेस्ट डॉक्युमेंटरी शॉर्ट कैटेगरी फिल्म के ऑस्कर अवॉर्ड 2019 से नवाजा गया है।

'रोमा' 10 अलग-अलग श्रेणियों में नॉमिनेट हुई

- वर्ष 2019 के ऑस्कर पुरस्कारों में हॉलिवुड फिल्म 'रोमा' को सबसे ज्यादा 10 अलग-अलग श्रेणियों में नॉमिनेट किया गया। पिछले साल ऑस्कर में 'द शेप ऑफ वॉटर' को सबसे ज्यादा नॉमिनेशन मिले थे। इस फिल्म को ऑस्कर पुरस्कारों के इतिहास में सबसे ज्यादा कैटिगरी में नॉमिनेट होने वाली फिल्मों में गिना जाता है। साल 2018 के ऑस्कर अवाड्र्स में इसे 13 अलग-अलग कैटिगरी में नॉमिनेट किया गया था जिसमें से 4 अवार्ड इस फिल्म ने अपने नाम किए थे. इसके अलावा 'ऑल अबाउट ईव', 'टाइटैनिक' और 'ला ला लैंड' ऑस्कर में सबसे ज्यादा कैटिगरी में नॉमिनेट होने वाली फिल्मों के क्लब में शामिल हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने विश्व की सबसे बड़ी भगवद गीता का उद्घाटन किया

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 26 फरवरी 2019 को दिल्ली के ईस्ट ऑफ कैलाश स्थित इस्कॉन मंदिर में विश्व की सबसे बड़ी भगवद गीता का उद्घाटन किया। यहां उन्होंने विश्व की सबसे बड़ी श्रीमद्भागवत गीता का विमोचन किया। इस्कॉन संस्था द्वारा तैयार की गई विश्व की सबसे बड़ी गीता इटली के मिलान शहर में बनाई गई है।
- इस अवसर पर उन्होंने 800 किलो की 670 पृष्ठों वाली विशाल गीता का विमोचन किया तथा लोगों को संबोधित भी किया। सर्जिकल स्ट्राइक के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि मानवता के दुश्मनों से धरती को बचाने के लिए प्रभू की शक्ति हमेशा हमारे साथ रहती है। यही संदेश हम पूरी प्रमाणिकता के साथ दुष्ट आत्माओं, असुरों को देने का प्रयास कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय युद्ध स्मारक का उद्घाटन किया

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 25 फरवरी 2019 को एक औपचारिक समारोह के दौरान राष्ट्र को राष्ट्रीय युद्ध स्मारक समर्पित किया। इस अवसर पर उन्होंने पूर्व सैनिकों को भी संबोधित किया। नई दिल्ली में इंडिया गेट के पास राष्ट्रीय युद्ध स्मारक, उन जवानों के लिए एक श्रद्धांजलि है, जिन्होंने आजादी के बाद देश की रक्षा के लिए अपना जीवन का बलिदान दिया।
- गौरतलब है कि प्रधानमंत्री मोदी ने 2014 में, एक अत्याधुनिक विश्व स्तरीय स्मारक के रूप में राष्ट्रीय युद्ध स्मारक का अपना विजन प्रस्तुत किया था। इंडिया गेट के पास 40 एकड़ में बने इस युद्ध स्मारक की लागत 176 करोड़ रुपये आई है और यह रिकार्ड एक साल में बनकर पूरा हुआ है।

'तितानवाला म्यूजियम' का उद्घाटन

- केंद्रीय कपड़ा मंत्री स्मृति ईरानी ने 26 फरवरी 2019 को बगरू में हैंडब्लॉक प्रिंटिंग के 'तितानवाला म्यूजियम' का उद्घाटन किया. उद्घाटन करने के बाद उन्होंने म्यूजियम की विभिन्न गैलरियों का भी अवलोकन किया। तितानवाला म्यूजियम में बड़ी संख्या में पारम्परिक वुडन ब्लॉक, कपड़ों की रंगाई व छपाई के काम आने वाले बर्तन व सहायक उपकरण तथा छीपा समुदाय के इतिहास को दर्शाने वाले पुराने फोटोग्राफ प्रदर्शित किए गये हैं।
- इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री ने कहा कि 'तितानवाला म्यूजियम' ने यह साबित कर दिया है कि कला व संस्कृति को आगे बढ़ाने अथवा संरक्षित करने के लिए सरकार पर निर्भर होने की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने कहा कि यह म्यूजियम बगरू को पूरे विश्व में पहचान दिलाएगा। उन्होंने कहा कि ब्लॉक प्रिंटिंग की विरासत सूरज नारायण तितानवाला जैसे संग्रहकों की पहल के कारण ही संरक्षित है, जो स्वयं छीपा समुदाय से हैं।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

राष्ट्रीय युद्ध स्मारक का उद्घाटन

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 25 फरवरी 2019 को एक औपचारिक समारोह के दौरान राष्ट्र को राष्ट्रीय युद्ध स्मारक समर्पित किया। इस अवसर पर उन्होंने पूर्व सैनिकों को भी संबोधित किया। नई दिल्ली में इंडिया गेट के पास राष्ट्रीय युद्ध स्मारक, उन जवानों के लिए एक श्रद्धांजलि है, जिन्होंने आजादी के बाद देश की रक्षा के लिए अपना जीवन का बलिदान दिया।
- गौरतलब है कि प्रधानमंत्री मोदी ने 2014 में, एक अत्याधुनिक विश्व स्तरीय स्मारक के रूप में राष्ट्रीय युद्ध स्मारक का अपना विजन प्रस्तुत किया था। इंडिया गेट के पास 40 एकड़ में बने इस युद्ध स्मारक की लागत 176 करोड़ रुपये आई है और यह रिकार्ड एक साल में बनकर पूरा हुआ है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मिला सियोल शांति पुरस्कार

- प्रधानमंत्री मोदी को उनकी आर्थिक नीतियों और विकासोन्मुखी कार्यों के लिए यह सम्मान दिया गया है। पीएम मोदी ने इसे 130 करोड़ भारतीयों का सम्मान बताया है। पीएम मोदी से पहले यह पुरस्कार संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिवों कोफी अन्नान और बान की-मून को भी मिल चुका है।
- पुरस्कार समिति ने भारत में अमीर और गरीब के बीच के सामाजिक और आर्थिक अंतर को कम करने के लिए उनकी 'मोदीनॉमिक्स' को सराहा है। सियोल शांति पुरस्कार सांस्कृतिक फाउंडेशन के चेयरमैन क्वॉन ई-हायोक की अध्यक्षता में सियोल के जंग-यू में हुई चयन समिति की बैठक के बाद यह फैसला लिया गया था।

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार 2017 प्रदान किए

- राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने 06 फरवरी 2019 को देश के जाने माने 42 कलाकारों को वर्ष 2017 के संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्रदान किये। यह पुरस्कार राष्ट्रपति भवन में विशेष अलंकरण समारोह में प्रदान किये गए। राष्ट्रपति ने संगीत नाटक, नृत्य वादन एवं गायन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए इन कलाकारों को सम्मानित किये। इन कलाकारों को पुरस्कार में एक लाख रुपये का चेक प्रशस्ति पत्र एवं प्रतीक चिह्न प्रदान किया गया।
- संगीत नाटक अकादमी की सामान्य परिषद, भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय की स्वायत्र संस्था राष्ट्रीय संगीत, नृत्य और नाटय अकादमी ने 8 जून 2018 को इम्फाल (मणिपुर) में अपनी बैठक में संगीत, नृत्य, थिएटर, पारंपरिक / लोक / जनजातीय, संगीत / नृत्य / थिएटर / कठपुतली कला तथा कला के क्षेत्र में समग्र योगदान / छात्रवृत्ति के क्षेत्रों में 42 कलाकारों का चयन संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार 2017 के लिए किया था।

आईसीसी की टेस्ट रैंकिंग जारी, न्यूजीलैंड पहली बार दूसरे स्थान पर

- अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने 25 फरवरी 2019 को ताजा टेस्ट रैंकिंग जारी की. श्रीलंका द्वारा 0-2 से हार से दक्षिण अफ्रीका को टेस्ट रैंकिंग में नुकसान हुआ है और उसके नुकसान से न्यूजीलैंड को फायदा हुआ है।
- टेस्ट सीरीज में हार के बाद दक्षिण अफ्रीका आईसीसी की ताजा टेस्ट टीम रैंकिंग में दूसरे स्थान से खिसकर तीसरे स्थान पर आ गया है। इससे न्यूजीलैंड को फायदा हुआ है और अब वह दूसरे स्थान पर आ गया है जो टेस्ट में उसकी अब तक की सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग है।

ISSF विश्व कप: मनु भाकर-सौरभ चौधरी की जोड़ी ने जीता स्वर्ण पदक

- भारतीय युवा निशानेबाज मनु भाकर और सौरभ चौधरी ने 27 फरवरी 2019 को आईएसएसएफ वर्ल्ड कप (नई दिल्ली) में स्वर्ण पदक जीता है। मनु भाकर और सौरभ चौधरी की जोड़ी ने युगल मुकाबले में स्वर्ण जीतकर इतिहास रच दिया है।
- मनु भाकर और सौरभ की जोड़ी ने 10 मीटर एयर पिस्टल के युगल मुकाबले में चीन के रानक्सिन जियांग और बोवेन झांग को मात देकर स्वर्ण पदक जीता है। जबकि रानक्सिन जियांग और बोवेन झांग को फाइनल में शिकस्त के बाद रजत पदक से संतोष करना पड़ा। वहीं कोरिया की मिंजुंग किम और डेहुन पार्क की जोड़ी ने कांस्य पदक हासिल किया।
- फाइनल मुकाबले में मनु भाकर और सौरभ चौधरी की जोड़ी ने कुल 483.4 अंक हासिल किए. इस जोड़ी ने पहले क्वालिफिकेशन वर्ल्ड रिकॉर्ड की बराबरी की और 778 अंकों की शूटिंग करके एक नया क्वालिफिकेशन वर्ल्ड रिकॉर्ड जूनियर भी बनाया। वहीं अन्य भारतीय जोड़ियों में हिना सिद्धू और अभिषेक वर्मा ने कुल 770 अंक हासिल किए यह जोड़ी फाइनल में जगह बनाने में असफल रही।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

क्रिस गेल ने अंतरराष्ट्रीय वनडे क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा की

- वेस्टइंडीज के विस्फोटक सलामी बल्लेबाज क्रिस गेल ने 17 फरवरी 2019 को अंतरराष्ट्रीय वनडे क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा कर दी हैं। 30 मई से इंग्लैंड की मेजबानी में खेला जाने वाला आईसीसी विश्वकप (ICC World cup 2019) उनके करियर का आखिरी टूर्नामेंट होगा।
- क्रिस गेल जुलाई 2018 में बांग्लादेश के खिलाफ आयोजित घरेलू वनडे सीरीज के बाद से वेस्टइंडीज के लिए कोई अंतरराष्ट्रीय वनडे मैच नहीं खेले हैं। अफगानिस्तान प्रीमियर लीग की वजह से वे भारत और बांग्लादेश दौरे पर नहीं आए थे।

हिना जायसवाल ने रचा इतिहास, बनीं IAF की पहली महिला फ्लाइट इंजीनियर

- फ्लाइट लेफ्टिनेंट हिना जायसवाल भारतीय वायुसेना (IAF) की पहली महिला फ्लाइट इंजीनियर बन गई हैं। वे बेंगलुरू के उत्तरी उप नगर में स्थित येलाहांका एयर बेस की 112वीं हेलीकॉप्टर यूनिट की फ्लाइट लेफ्टिनेंट थीं।
- फ्लाइट लेफ्टिनेंट हिना जायसवाल ने येलाहांका वायुसेना स्टेशन में कोर्स पूरा करने के बाद पहली महिला फ्लाइट इंजीनियर बनकर इतिहास रच दिया है। हिना ने कहा कि बचपन से उनकी कोशिश थी कि वह सैनिक की यूनिफॉर्म पहनें और पायलट के तौर पर आसमान में उड़ान भरें।

हिंदी के मशहूर साहित्यकार और आलोचक नामवर सिंह का निधन

- हिंदी के विख्यात आलोचक और साहित्यकार नामवर सिंह का 19 फरवरी 2019 को दिल्ली में निधन हो गया। उन्होंने दिल्ली के एम्स में आखिरी सांस ली. नामवर सिंह 93 वर्ष के थे. वे पिछले काफी समय से बीमार चल रहे थे।
- जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU) में भारतीय भाषा केंद्र की स्थापना करने और हिंदी साहित्य को नए मुकाम पर ले जाने में उनका सराहनीय योगदान है. हिंदी में आलोचना विधा को उन्होंने नई पहचान दी। उनका काम और उनका योगदान, उनके जाने के बाद भी कई पीढ़ियों को प्रभावित करेगा।

टैगोर पुरस्कार

- राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने 18 फरवरी 2019 को राजकुमार सिंघाजीत सिंह, छायानट (बांग्लादेश की सांस्कृतिक संगठन) और रामजी सुतार को क्रमशः वर्ष 2014, 2015 और 2016 के लिए टैगोर सांस्कृतिक सद्भाव पुरस्कार प्रदान किये।
- राष्ट्रपति कोविंद ने इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि भारत में हर क्षेत्र की अलग पहचान है। यह अलग पहचान हमें विभाजित नहीं करती, बल्कि एकता के सूत्र में बांधने और सौहार्द बढ़ाने का काम करती है।

संयुक्त राष्ट्र ने चंद्रमौली रामनाथन को कंट्रोलर और एएसजी नियुक्त किया

- संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरस ने भारत के चंद्रमौलि रामनाथन को कंट्रोलर, सहायक महासचिव (कार्यक्रम और योजना), बजट तथा वित्त विभाग में नियुक्त किया है। इसके साथ ही वह वित्त प्रबंध स्ट्रेटजी के कार्य की भी देखरेख करेंगे।
- इससे पहले चंद्रमौली संयुक्त राष्ट्र के कई विभागों में अपनी सेवाएँ दे चुके हैं। गौरतलब है कि चंद्रमौली को वित्त, बजट, प्रबंधन और सूचना प्रौद्योगिकी के मामलों में चार दशकों का अनुभव है।

चंद्रमौली रामनाथन

- रामनाथन भारत में वर्ष 1993 से 1995 तक असिस्टेंट ऑडिटर तथा 1989 से 1993 तक ऑडिटर जनरल ऑफ इंडिया पद पर कार्यरत रहे थे।
- इसके अतिरिक्त उन्होंने डिप्टी कंट्रोलर, डायरेक्टर ऑफ एकाउंट्स डिवीजन एवं सूचना प्रौद्योगिकी सेवा विभाग में सेवा प्रमुख पद पर रहे थे।
- सितंबर 2018 तक वे सक्रिय कंट्रोलर पद पर तैनात रहे इसके अतिरिक्त वे असिस्टेंट सेक्रेटरी जनरल फॉर एंटरप्राइज भी रहे हैं।
- उन्हें वित्त-बजट, प्रबंधन एवं नीति निर्माण में 40 वर्षों का वृहद अनुभव प्राप्त है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

अश्वनि लोहानी को एयर इंडिया का सीएमडी नियुक्त किया गया

- रेलवे बोर्ड के पूर्व चेयरमैन अश्वनी लोहानी को एयर इंडिया का नया चेयरमैन व मैनेजिंग डायरेक्टर नियुक्त किया गया। उन पर ऋण में डूबी हुई एयर इंडिया को उबारने का दायित्व होगा।
- नियुक्ति से संबंधित मंत्रिमंडल की समिति ने एक साल के कार्यकाल के लिए लोहानी की वापसी को मंजूरी दी है। एयर इंडिया में लोहानी का पहला कार्यकाल अगस्त, 2015 से अगस्त, 2017 तक था जिस दौरान एयर इंडिया ने कई साल बाद पहली बार वित्त वर्ष 2017 में 105 करोड़ रुपये का परिचालन लाभ कमाया था।
- इंडियन रेलवे सर्विस ऑफ मेकेनिकल इंजीनियर्स (आईआरएसएमई) के 1980 बैच के अधिकारी लोहानी अगस्त, 2017 में रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष नियुक्त किए गए थे और वह दिसंबर, 2018 में इस पद से सेवानिवृत हुए थे। रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष के नाते उनके सबसे पहले फैसलों में से एक उपहारों, रस्मी स्वागतों और विदाई समारोहों पर रोक लगाना था। भारत की सबसे तीव्र ट्रेन-18 का श्रेय भी उन्हीं को जाता है।
- उन्होंने प्रदीप कुमार खरोला का स्थान लिया। प्रदीप कुमार खरोला को विमानन मंत्रालय में सचिव नियुक्त किया गया है। प्रदीप कुमार खरोला 1985 बैच के कर्नाटक कैडर के आईएएस अफसर हैं।
- रेलवे के वरिष्ठतम नौकरशाह के रूप में लोहानी उस टीम का भी हिस्सा थे जिसने मुंबई अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना पर काम किया था।

सुशील चंद्रा नये चुनाव आयुक्त नियुक्त किये गये

- भारतीय राजस्व सेवा (आई आर एस) के पूर्व अधिकारी सुशील चंद्रा को चुनाव आयुक्त नियुक्त किया गया है। वे सेंट्रल बोर्ड ऑफ डायरेक्ट टैक्सेशन (सीबीडीटी) प्रमुख पद पर भी थे, उन्हें 14 फरवरी 2019 को इस पद पर नियुक्त किया गया।
- उनकी नियुक्ति को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने मंजूरी प्रदान कर दी है. सीबीडीटी के चेयरमैन के तौर पर उनका कार्यकाल इस साल मई में खत्म हो रहा था। उनका कार्यकाल 2016 से दो बार बढ़ाया जा चुका है।

भारतीय इतिहासकार संजय सुब्रमण्यम इजराइल के डेन डेविड पुरस्कार हेतु चयनित

- भारतीय इतिहासकार संजय सुब्रमण्यम को इजराइल के प्रतिष्ठित डेन डेविड पुरस्कार के लिए चुना गया है। चयनकर्ताओं का मानना है कि संजय सुब्रमण्यम के अपने काम से इतिहास के क्षेत्र में विश्व में महत्वपूर्ण योगदान दिया है इसलिए डेन डेविड पुरस्कार के लिए उनका चयन किया गया है।
- प्रारंभिक आधुनिक युग के दौरान एशियाई, यूरोपीय और उत्तर एवं दक्षिण अमेरिका के लोगों के बीच अंतर-सांस्कृतिक संपर्क पर काम के लिए उन्हें इस साल के डेव डेविड पुरस्कार के लिए चुना गया है. स्ट्रैटिजिक एनालिस्ट के. सुब्रमण्यम के बेटे और पूर्व विदेश सचिव एस जयशंकर के भाई संजय ने वृहत इतिहास में अपने काम के लिए 'अतीतकालीन आयाम' श्रेणी में यह अवॉर्ड जीता है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री ने हिमाचल प्रदेश के सबसे पहले मेगा फूड पार्क का उद्घाटन किया

- केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री हरसिमरत कौर बादल ने 10 फरवरी 2019 को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से हिमाचल प्रदेश के सबसे पहले मेगा फूड पार्क खक्रेमिका मेगा फूड पार्क प्राइवेट लिमिटेड का उद्घाटन किया। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर, हमीरपुर से लोकसभा सांसद अनुराग सिंह ठाकुर की उपस्थिति में उद्घाटन सम्पन्न हुआ।
- पार्क में बनाए गए खाद्य प्रसंस्करण के आधुनिक बुनियादी ढांचे से हिमाचल प्रदेश और आसपास के क्षेत्रों के किसानों, उत्पादकों, प्रोसेसरों और उपभोक्ताओं को काफी फायदा होगा और हिमाचल प्रदेश राज्य में खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र के विकास को बढ़ावा मिलेगा।

विश्व कैंसर दिवस 04 फरवरी को मनाया गया

- विश्व भर में 04 फरवरी 2019 को विश्व कैंसर दिवस (डब्ल्यूसीडी) मनाया गया. साल 2019 से 2021 तक तीन साल के लिए विश्व कैंसर दिवस का विषय रखा गया है। यह विषय "मैं हूं और मैं रहूंगा (I Am And I Will)" है। इसी थीम के अनुसार इन तीन सालों में कार्यक्रम होंगे।
- इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य कैंसर के बारे में जागरूकता उत्पन्न करना और रोग का जल्दी पता लगाने की जरूरत तथा कैंसर के उपचार पर ध्यान केंद्रित करना है। इसका उद्देश्य विश्व में प्रत्येक वर्ष लाखों लोगों को कैंसर के कारण होने वाली मृत्यु से बचाना भी है।

ऋषि कुमार शुक्ला सीबीआई के नये निदेशक नियुक्त

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता वाली चयन समिति ने 02 फरवरी 2019 को आईपीएस अधिकारी ऋषि कुमार शुक्ला को भारत की प्रमुख जांच एजेंसी केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) का नया निदेशक नियुक्त किया है।
- सीबीआई प्रमुख का पद पूर्व निदेशक आलोक वर्मा का तबादला होने के बाद 10 जनवरी से रिक्त पड़ा था. अब मध्य प्रदेश के डीजीपी रहे ऋषि कुमार शुक्ला को इस पद की जिम्मेदारी दी गई है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009